जय श्री राधे। जय निताई

न पारयेऽहं निरवद्यसंयुजां स्वसाधुकृत्यं विबुधायुषापि वः।
या माभजन्दुर्जरगेहशृंखलाः संवृश्च्य तद्वः प्रतियातु साधुना॥

स्वयं भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ने कहा– हे प्राणप्रिये व्रज–सुन्दरियो! अति कठिनता से तोड़ी जाने वाली गृह–कुल की बेड़ियों को सम्यक् प्रकार से तोड़ कर आपने मेरा भजन किया है– मुझे रसमयी आराधना से तृप्त किया है। मेरे साथ आपका यह मिलन या क्रीड़ा–विलास अनिन्दनीय है; क्योंकि इसमें प्राकृत–काम या स्वसुख–वासना की लेश मात्र गन्ध नहीं है। आपने मेरे प्रति जो सुशील भाव एवं साधुत्व प्रदर्शित किया है–मधुररस निर्यास मुझे पान कराया है, मैं अमर–जीवन प्राप्त कर–अनन्त काल तक भी इसका बदला चुकाने में असमर्थ हूँ। यदि आप अपने शील–स्वभाव और साधुत्व से मुझे क्षमा करना चाहो तो कर सकती हो, मैं आप से उऋण नहीं हो सकता, सदा–सदा का ऋणिया हूँ।। श्रीकृष्ण स्तव–पृष्ठ 223

ब्रज के व्रत-उत्सव

दिनांक 18 मार्च 2018 से 5 अप्रैल 2019 ईसवी

श्रीगौरांगाब्द 533 संवत् **शाके 1940**

राजा : रवि • मंत्री : शनि **2075** संवत्सर नाम : विरोध/परिधावी

सम्पादन सानिध्य
दासाभास डॉ गिरिराज नांगिया
प्रधान सम्पादक : 'श्रीहरिनाम' मासिक पत्रिका

•

प्रधान सम्पादक
डॉ भागवत कृष्ण नांगिया
एम.ए., पी-एच.डी. (दर्शन), सम्पादक शिरोमणि

प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान
50 वर्षों से वैष्णव साहित्य प्रचार–प्रसार में संलग्न अव्यावसायिक संस्थान
श्रीहरिनाम संकीर्तन मण्डल • श्रीहरिनाम प्रेस • वृन्दावन
मोबाइल : 7500987654, 9068231415 • Whatsapp : 7500040003

निःशुल्क वितरण

विषय क्रम

अपनी बात : 03
सार्थक प्रेरणा : 04
धन की तीन गति : 04
प्रातः स्मरण : 05
भगवन्नाम महिमा : 05
पंचांग श्रवण : सम्वत्सर फल : 06
पूरे वर्ष के महत्वपूर्ण उत्सव : 07
प्रयाग राज में अर्धकुम्भ : 07
दशावतार जयन्तियाँ : 08
श्रीबिहारीजी मन्दिर के प्रमुख उत्सव : 09
बड़ी सूरमा कुंज के प्रमुख उत्सव : 09
श्रीराधावल्लभजी मंदिर के प्रमुख उत्सव : 10
श्रीरंग जी मंदिर के प्रमुख उत्सव : 10
ब्रह्मोत्सव श्रीरंग मंदिर : 11
श्रीराधारमण मंदिर के प्रमुख उत्सव : 11
सर्वश्रेष्ठ व्रत एकादशी का माहात्म्य : 12
व्रत का पारण कैसे करें : 12
एकादशी व्रत व पारण का समय : 13
गुरु एवं शुक्र तारा उदयास्त : 13
श्रीगणेश चतुर्थी, मासिक शिवरात्रि व्रत : 14
अमावस्याएँ, पूर्णिमा व्रत : 14
पितृपक्ष (श्राद्ध) : 14
संक्रान्तियाँ पुण्यकाल : 14
मन्त्रों द्वारा ग्रहों की पूजा : 15
साढ़े तीन स्वयंसिद्ध तिथियाँ : 15
लोक प्रसिद्ध तिथियाँ : 15
क्या है अमृत और सर्वार्थ सिद्धियोग : 16
किस वार को क्या प्रारम्भ करें ? : 16
दिशा शूल : 16
खग्रास चन्द्रग्रहण : 17
वाहन क्रय-विक्रय मुहूर्त : 17
रविपुष्य, गुरुपुष्य एवं पुष्यामृत योग : 18
श्रीनारायण कवच : 18
सर्वार्थ सिद्धि योग : 19
दीपावली : श्रीमहालक्ष्मी पूजन : 20
काल सर्पयोग एवं मंगली योग : 22
राहुकाल अर्थात् निषिद्ध समय : 22
गृह-वास्तु : 23
व्रत एवं पर्व तालिका : 25
दिन और रात की चौघड़िया : 51
अबकहडा चक्र : 52
वार्षिक राशिफल : 53
करवाचौथ : 57
परिचय : ब्रजविभूति श्रीश्यामदासजी : 59
उपलब्ध साहित्य : 64
श्रीहरिनाम प्रेस का भक्तिसाहित्य : 64
नाम महामणि : 66
नवीन प्रकाशन : 67
Online ग्रन्थ उपलब्ध : 69
ग्रन्थ प्राप्ति स्थान : 70
प्रमुख मन्दिरों के दर्शनों का समय : 71
वृन्दावन में पुण्य कमायें : 72

अपनी बात

- **चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार 18 मार्च सन् 2018 ईसवी को नया संवत् 2075 प्रारम्भ हो रहा है। हिन्दू संवत्सर के कैलेण्डर के आधार पर ही हमारे सभी हिन्दू पर्व और त्यौहारों का निर्णय होता है। अंग्रेजी कैलेण्डर से हमारे पर्व त्यौहारों का कोई लेना देना नहीं है।**

- पुस्तिका में समान रूप से सभी सम्प्रदायों के व्रत एवं उत्सव प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है, फिर भी यदि कहीं कुछ सुझाव हो या भ्रम हो तो जानकारी दें जिससे आगामी संस्करण में उसे सुधारा जा सके।

- **पृष्ठ 09–10–11 पर अनन्य भक्तों की सुविधा के लिये कुछ मन्दिरों के विशेष उत्सवों की सूची और श्रीरंग मंदिर के ब्रह्मोत्सव का कार्यक्रम एक ही स्थान पर प्रकाशित किया जा रहा है। तिथियों में गणना के अन्तर से भेद सम्भव है।**

- अधिकतर देखा गया है कि व्रत एवं अनेक त्यौहार दो–दो दिन पड़ते हैं। ऐसी परिस्थिति में एकादशी एवं अन्य व्रत–उत्सवों का निर्णय अपने गुरुस्थान की परम्परा या वर्ष पर्यन्त किसी भी एक व्रत–पत्रिका से सुनिश्चित कर लेना ही शास्त्रीय आदेश है।

- **एकादशी व्रत तिथि, पारण का समय, प्रदोष व्रत तिथि एवं पंचक का विवरण व्रत तालिका के हर पृष्ठ पर सबसे नीचे पृथक् बॉक्स में प्रदर्शित किया गया है।**

- जनसामान्य को दृष्टि में रखकर इसकी विषय वस्तु का सम्पादन और परिवेशन किया गया है। सामान्य विषयों पर छोटे निबन्ध और फिलर्स भी प्रस्तुत किये गये हैं। सर्वप्रथम पृष्ठ 2 – विषय क्रम पर एक दृष्टि डाल लें।

- **नवीन सरल–सहज विषयों की प्रस्तुति से आशा है धर्मानुरागी सज्जन लाभान्वित होंगे और मुझ पर अपना कृपाशीष बनाये रखेंगे। इसी विनम्र याचना के साथ प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सहयोगी सभी सज्जनों को प्रणाम करते हुए यह पुस्तिका आपकी सेवा में सविनय प्रस्तुत है।**

– डॉ. भागवतकृष्ण नांगिया

नव संवत्सर की अनन्त मंगल शुभकामनाएँ

सार्थक-प्रेरणा

श्रीकृष्णानुरागी पं. शिवम बिष्णु पाठक

श्री ललित जी, शोभित जी अरोड़ा

श्री अनिल जी, पंकज जी अग्रवाल

श्री कैलाश जी, भुवन जी खण्डेलवाल

श्री प्रमोद कुमार जी गुप्ता

श्रीराजेन्द्र कुमार जी बजाज

श्रीजुगलकिशोर भरत जी शर्मा

श्री प्रेमशंकर जी शर्मा

श्री हेमांग नांगिया

श्रीदेसाई परिवार

धन की तीन गति

सर्वश्रेष्ठ : दान

धार्मिक और सामाजिक प्रकल्पों में अथवा राष्ट्रहित या समाजकल्याण के लिए समझदारी से धन का उपयोग

मध्यम : भोग

स्वयं पर खर्च करके भौतिक सुविधाएँ सुख-मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करना

अधम : नाश

न दान करना, न ही स्वयं सुख भोगना – परिणाम : चोर ले जायें या सरकार या दुष्ट औलाद आतंक फैलाये

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा

•

हिन्दू वर्ष
का प्रथम दिन

•

सृष्टि रचना का
प्रथम दिन

•

सम्राट विक्रमादित्य
का
राज्याभिषेक और
सम्वत् प्रारम्भ

•

लंका विजय
के पश्चात्
राजा रामचन्द्र जी
के राज्याभिषेक
का दिन

•

धर्मराज युधिष्ठिर
के राज्याभिषेक
का दिन

•

नवरात्र प्रारम्भ
प्रथम दिन

नवीन प्रकाशन

चैत्र माह के नवरात्र से लेकर
फाल्गुन माह के होली तक
वर्ष भर के प्रमुख
त्योहार-व्रत-उत्सव आदि
का क्रमवार
संक्षिप्त परिचय

ब्रज के
व्रत-उत्सव

नामक ग्रन्थ में पढ़ें।
सात वारों की कथा
सत्यनारायण कथा
श्रीलक्ष्मी स्तुति
एकादशी व्रत विधान
प्रमुख आरतियों
का संग्रह इस ग्रन्थ
की अद्भुत विशेषता है।

न्योछावर ~~125~~ रुपये
छूट के बाद 100 रु.

घर बैठे मंगाने के लिए
अपना पता
7500040003 पर
SMS या Whatsapp करें-
अथवा
श्रीहरिनाम प्रेस
वृन्दावन से प्राप्त करें।

प्रातः स्मरण

महामन्त्र :

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

करदर्शन :

कराग्रे वसते लक्ष्मी कर मध्ये च सरस्वती
करमूले तु गोविन्द प्रभाते कर दर्शनम्

पृथ्वी प्रणाम :

समुद्रवसने देविः पर्वतस्तनमण्डले
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे

श्रीगुरुदेव प्रणाम :

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः

श्रीकृष्ण प्रणाम :

हे कृष्ण! करुणासिन्धो! दीनबन्धो! जगत्पते!
गोपेश! गोपिकाकान्त! राधाकान्त! नमोऽस्तु ते।।

श्रीराधा प्रणाम :

महाभावस्वरूपा त्वं कृष्णप्रिया वरीयसी
प्रेमभक्ति प्रदे देवि! राधिके! त्वां नमाम्यहम्

श्रीसूर्य प्रणाम :

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते

श्रीतुलसी प्रणाम :

नमस्तुलसि सर्वज्ञे पुरुषोत्तमवल्लभे
पाहि मां सर्व पापेभ्यः सर्व सम्पत्प्रदायिके

श्रीवैष्णव प्रणाम :

वाञ्छाकल्पतरुभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः

पंचांग श्रवण : सम्वत्सर फल

विरोध/परिधावी नाम संवत्सर– वर्षा मध्यम। परस्पर वैर-विरोध और आतंक से प्रजा दुखी। महारोग और युद्ध की संभावना।
वैशाख नामक वर्ष– पैदावार में वृद्धि, महँगाई कम हो। आतंकी उपद्रव।
'पुष्करे मन्द वृष्टिश्च'– पुष्कर नामक मेघों से वर्षा कम हो।
'खण्डवृष्टिश्च सन्धिषु'– रोहिणी का अधिष्ठान सन्धि में होने से न्यूनाधिक वर्षा से फसलों को हानि लाभ।
'वणिकगृहे शुभ नास्ति'– सम्वत् वैश्य के घर। व्यापारी फायदे में। आयात-निर्यात अच्छा। सरकारी नियमों से परेशानी।

राजा रवि का फल – प्रभाव : कश्मीर, अफगानिस्तान :
वर्षा कम। फल फूल धान्यादि पैदावार कम। दुग्ध में कमी। जनता त्रस्त। उपद्रव बढ़ेंगे।

मन्त्री शनि का फल – प्रभाव : पूर्व प्रदेश कलिंगादि :
नेताओं द्वारा कुशासन। वर्षा कम। महँगाई। युद्ध भय।

सस्येश चन्द्रमा का फल – प्रभाव : ईशान व मध्य प्रदेश :
वर्षा अच्छी। जनता सुखी। देव पूजा आराधना वृद्धि।

धान्येश रवि का फल – प्रभाव : नर्मदा तट मध्य प्रदेश :
अन्नादि महँगे। जनता रोगों से त्रस्त। नेताओं में विरोध। युद्ध-उत्पात।

मेघपति शुक्र का फल – प्रभाव : मगध-बिहार :
वर्षा अच्छी। पैदावार बढ़े। देश में विकास। शासन से सुविधा।

रसपति बुध का फल – प्रभाव : कोंकण-गोआ :
वर्षा अच्छी। पैदावार बढ़े। जनता सुखी और आनन्द में।

नीरसेश चन्द्र का फल – प्रभाव : उज्जैन-इन्दौर-मालवा :
श्वेत धातु और वस्तुओं में मंदी। प्रजा में सौहार्द्र।

फलेश गुरु का फल – प्रभाव : पश्चिम-कश्मीरादि :
वर्षा अच्छी। पैदावार बढ़े। महँगाई कम। जनता संतुष्ट।

धनेश चन्द्र का फल – प्रभाव : सर्वत्र
व्यापारियों को लाभ। सुख समृद्धि बढ़े। लाभांश में वृद्धि।

दुर्गेश शुक्र का फल – प्रभाव : सर्वत्र :
सुख समृद्धि हो। व्यापार में लाभ। मंगलकार्य होंगे। तामसीवृत्ति वृद्धि।

पूरे वर्ष के महत्वपूर्ण उत्सव

18 मार्च – नवसम्वत्सर, नवरात्र आरम्भ
20 मार्च – गणगौर
23 मार्च – श्री यमुना षष्ठी
24 मार्च – श्री दुर्गा अष्टमी
25 मार्च – श्रीराम नवमी
27 मार्च – श्रीबाँकेबिहारीजी के फूल बंगला प्रारम्भ
31 मार्च – श्री हनुमान जयन्ती
12 अप्रैल – श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती
14 अप्रैल – वैशाखी (पंजाब)
16 अप्रैल – श्रीशुकदेव मुनि जयन्ती, श्रीगदाधर पंडित आवि.
18 अप्रैल – अक्षय तृतीया–चरण दर्शन
20 अप्रैल – आदि शंकराचार्य एवं सूरदास जयंती
21 अप्रैल – श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती
22 अप्रैल – श्री गंगा सप्तमी
26 अप्रैल – श्रीहितहरिवंश जन्मोत्सव
29 अप्रैल – श्रीनृसिंह चतुर्दशी
30 अप्रैल – श्रीराधारमण जू प्राकट्य
02 मई – श्रीनारद जयन्ती, वनविहार परिक्रमा, वृन्दावन
05 मई – श्रीचैतन्यचरितामृत जयंती
22 जून – श्री गंगा दशहरा
24 जून – निर्जला एकादशी व्रत
14 जुलाई – श्रीजगन्नाथ रथयात्रा पुरी, ज्ञान गुदड़ी
23 जुलाई – चातुर्मास्य आरम्भ
27 जुलाई – श्रीगुरु पूर्णिमा, श्रीसनातन गोस्वामी तिरोभाव
30 जुलाई – सोमवार से 4 सोमवार, सावन के व्रत आरंभ
11 अगस्त – हरियाली अमावस्या, बिहारीजी में अंतिम बंगला
14 अगस्त – हरियाली तीज, स्वर्ण झूला में श्रीबिहारी जी दर्शन
17 अगस्त – श्रीतुलसीदास जयन्ती
24 अगस्त – बसंती कमरा दर्शन, शाहजी मन्दिर, वृन्दावन
26 अगस्त – रक्षाबन्धन, गज–ग्राह लीला रंग मन्दिर
03 सित. – श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
04 सित. – नन्दोत्सव, दधिकांदा
04 सित. – लट्ठा का मेला, रंगजी मन्दिर
15 सित. – श्रीबलराम जयन्ती
17 सित. – श्रीराधा अष्टमी, सवारी श्रीबिहारीजी
18 सित. – श्रीमद्भागवत जयन्ती
21 सित. – श्री वामन जयन्ती
23 सित. – अनन्त चतुर्दशी
25 सित. – पितृपक्ष आरम्भ, साँझी आरम्भ

प्रयागराज में अर्धकुम्भ

14 जनवरी 2019, सोमवार
मकर संक्रान्ति अर्धकुम्भ प्रारम्भ.

15 जनवरी 2019, मंगलवार
मकर संक्रान्ति पुण्यकाल प्रातःकाल

21 जनवरी 2019, सोमवार
पौष की पूर्णिमा पुष्य योग में

24 जनवरी 2019, गुरुवार
संकष्टी चौथ व्रत, श्रीगणेश जयंती

31 जनवरी 2019, गुरुवार
षट्तिला एकादशी व्रत

04 फरवरी 2019, सोमवार
मौनीमावस मुख्य स्नान पर्व दिन

10 फरवरी 2019, रविवार
वसंतपंचमी, श्रीसरस्वती जयंती

16 फरवरी 2019, शनिवार
जया एकादशी, भैनीग्यारस बंगाल

19 फरवरी 2019, मंगलवार
माघ की पूर्णिमा

02 मार्च 2019, शनिवार
विजयाएकादशी व्रत

04 मार्च 2019, सोमवार
महाशिवरात्रि सर्वार्थसिद्धि योग

06 मार्च 2019, बुधवार
फाल्गुन की अमावस्या

17 मार्च 2019, रविवार
आमला एकादशी रविपुष्ययोग

20 मार्च 2019, बुधवार
होलिका दहन महाविषुवदिन

10 अक्टू. – शरद नवरात्र प्रारम्भ, अग्रसेन जयन्ती
19 अक्टू. – दशहरा (विजया दशमी)
20 अक्टू. – कार्तिक नियम सेवा आरम्भ
24 अक्टू. – शरद पूर्णिमा
25 अक्टू. – कार्तिक स्नान व ब्रज परिक्रमा प्रारंभ
27 अक्टू. – करवा चौथ व्रत
31 अक्टू. – अहोई अष्टमी–श्रीराधाकुण्ड अर्धरात्रि स्नान
05 नव. – धनतेरस, श्रीधन्वन्तरि जयन्ती
07 नव. – दीपावली–श्रीमहालक्ष्मी पूजन
08 नव. – अन्नकूट, श्रीगोवर्धन पूजन
09 नव. – यम द्वितीया स्नान – भाई दूज
15 नव. – गोपाष्टमी
17 नव. – अक्षय नवमी, युगल जोड़ी परिक्रमा
19 नव. – देव उत्थान एकादशी, श्रीतुलसी शालिग्राम विवाह कार्तिक नियमसेवा पूर्ण। चातुर्मास्य पूर्ण।
21 नव. – श्रीराधावल्लभजी पाटोत्सव एवं वृन्दावन प्राकट्योत्सव
23 नव. – रास पूर्णिमा, श्रीगौरांग महाप्रभु वृन्दावन आगमनोत्सव श्रीनिम्बार्काचार्य जयन्ती, श्रीगुरुनानक जयंती
12 दिस. – श्रीबिहारीजी प्राकट्य, बिहार पंचमी, श्रीरामसीता विवाह
18 दिस. – श्रीमद्भगवद्गीता जयन्ती
27 दिस. – प्रति गुरुवार बेलवन मेला – (4 गुरुवार)
08 जन. – खिचड़ी भोग प्रारम्भ, श्रीराधावल्लभ मन्दिर
13 जन. – लोहड़ी पंजाब
14 जन. – मकर संक्रान्ति
21 जन. – माघ स्नान प्रारम्भ
24 जन. – सकट चौथ
04 फर. – मौनी अमावस
10 फर. – वसन्त पंचमी, श्रीसरस्वती जयन्ती, बसंती कमरा दर्शन
12 फर. – श्रीअद्वैतप्रभु जयन्ती
15 फर. – श्रीराधादामोदर प्राकट्योत्सव
17 फर. – श्रीनित्यानन्द प्रभु जयन्ती, शृंगारवट
19 फर. – माघी पूर्णिमा। माघ स्नान पूर्ण
05 मार्च – महाशिवरात्रि
08 मार्च – फुलैरा दौज
14 मार्च – होलाष्टक प्रारंभ
15 मार्च – बरसाना होली
16 मार्च – नन्दगाँव होली
17 मार्च – रंगभरनी एकादशी, होली प्रारम्भ, वृन्दावन
21 मार्च – श्री चैतन्य महाप्रभु जयन्ती
21 मार्च – धुलैड़ी
25 व 27 – बासौड़ा, शीतला पूजन
23 मार्च – रंगजी का मेला प्रारम्भ
29 मार्च – रथ का मेला, रंगजी का मन्दिर

दशावतार जयन्तियाँ
श्रीमत्स्य अवतार 20 मार्च 2018
श्री रामनवमी जयन्ती 25 मार्च 2018
श्रीपरशुराम अवतार 18 अप्रैल 2018
श्रीनृसिंह जयन्ती 28 अप्रैल2018
श्री कूर्म अवतार 29 अप्रैल 2018
श्री बौद्धावतार 30 अप्रैल 2018
श्री कल्कि अवतार 16 अगस्त 2018
श्री कृष्ण जन्माष्टमी 03 सितम्बर 2018
श्री वराह अवतार 12 सितम्बर 2018
श्री वामन जयन्ती 21 सितम्बर 2018

श्री बिहारीजी मंदिर के प्रमुख उत्सव

27 मार्च मंगलवार	: प्रतिदिन सायंकाल फूल बंगला प्रारंभ।
18 अप्रैल बुधवार	: अक्षय तृतीया–चरण दर्शन : चन्दन लेपन एवं सर्वांग दर्शन
27 जुलाई शुक्रवार	: आचार्य श्रीजगन्नाथ गो. उत्सव। श्रीनिधिवन में फूल बंगला।
11 अगस्त शनिवार	: मंदिर में फूल बंगला बनना विश्राम। हरियाली अमावस्या।
14 अगस्त मंगलवार	: हरियाली तीज। श्रीबिहारी जी स्वर्ण हिंडोले में विराजें।
03 सितम्बर सोमवार	: श्रीकृष्णजन्माष्टमी। रात्रि को शयनआरती के बाद मन्दिर के बाहरी प्रांगण में श्रीकृष्णजन्म की कथा। रात्रि 12 बजे महा अभिषेक। रात्रि 3 बजे मंगला आरती वर्ष में केवल 1 दिन।
04 सितम्बर मंगलवार	: नन्दोत्सव। श्रृंगार आरती के बाद दधिकाँदौ।
11 सितम्बर मंगलवार	: स्वामी श्री हरिदास जी का बधाई उत्सव प्रारम्भ।
17 सितम्बर सोमवार	: श्रीराधाष्टमी। स्वामी श्री हरिदासजी का जन्मोत्सव। सायं 4 बजे मंदिर में रासलीला। सायंकाल 7 बजे से विशाल शोभायात्रा निधिवनराज पधारती है।
24 अक्टूबर बुधवार	: शरद पूर्णिमा। श्रीबिहारी जी मोर, मुकुट, कटि–काछनी एवं वंशी धारण करते हैं।
12 दिसम्बर बुधवार	: बिहार पंचमी। श्रीबिहारीजी का प्रादुर्भाव दिवस। स्वामी श्रीहरिदासजी की सवारी निधिवनराज से श्रीबिहारी जी।
17 मार्च शनिवार 19	: रंगभरनी एकादशी। श्रीबिहारी जी में रंगीली होली प्रारम्भ।

बड़ी सूरमा कुंज, पत्थरपुरा के प्रमुख उत्सव

18 अप्रैल बुधवार	: अक्षय तृतीया	: चन्दन श्रृंगार दर्शन
29 अप्रैल रविवार	: वैशाख शुक्ल चतुर्दशी	: श्रीनृसिंह जयन्ती महोत्सव
05 मई शनिवार	: ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी	: श्रीचैतन्य चरितामृत जयन्ती, हस्तलिखित चैतन्यचरितामृत दर्शन, फूलबंगला, पाठ–प्रवचन, संकीर्तन आदि
25 जून सोमवार	: ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी	: सिद्ध श्रीव्रजमोहनदास गो. महोत्सव
26 जून मंगलवार	: ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी	: श्रीरघुनाथदास गो. दण्ड महोत्सव
24 जुलाई मंगलवार	: आषाढ़ शुक्ल द्वादशी	: श्रीकृष्णवल्लभ गो. महोत्सव
23 अगस्त गुरुवार	: श्रावण शुक्ल द्वादशी	: श्रीपाद रूप गोस्वामि महोत्सव
25 अगस्त शनिवार	: श्रावण शुक्ल चतुर्दशी	: महान्त श्रीशुकदेवदास गो. महोत्सव
03 सितम्बर सोमवार	: श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	: मध्यरात्रि अभिषेक, परदिन नन्दोत्सव
17 सितम्बर सोमवार	: श्रीराधाष्टमी	: दोप. में अभिषेक, कथा–प्रवचन
23 सितम्बर रविवार	: भाद्र शुक्ल चतुर्दशी	: नामाचार्य श्रील हरिदास ठाकुर निर्याणोत्सव
14 अक्टूबर रविवार	: आश्विन शुक्ल पंचमी	: श्रीपादमुकुन्ददास गो. महोत्सव
19 अक्टूबर शुक्रवार	: आश्विन शुक्ल दशमी	: श्रीपादरूपकवीश्वर गो. महोत्सव
21 अक्टूबर रविवार	: आश्विन शुक्ल द्वादशी	: श्रीपाद रघुनाथ भट्ट गो., श्रीपाद रघुनाथदास गो. एवं श्रीपाद कृष्णदास कविराज गो. महोत्सव
10 फरवरी 19 रविवार	: माघ शुक्ल पंचमी	: ठा. श्रीराधानयनानन्द जू का प्राकट्योत्सव
21 मार्च 19 गुरुवार	: श्रीगौर पूर्णिमा	: महाभिषेक, प्रवचन आदि, अगले दिन उत्सव

श्रीराधावल्लभ जी मंदिर के प्रमुख उत्सव

23 अप्रैल सोमवार	: वैशाख शुक्ल अष्टमी	: 4 दिन मंदिर से सवारी / चाव निकले
26 अप्रैल गुरुवार	: वैशाख शुक्ल एकादशी	: श्रीहित हरिवंश चन्द्र महाप्रभु जन्मोत्सव
01 मई मंगलवार	: ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा	: महाप्रभु का छठी उत्सव
23 जून शनिवार	: ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी	: ठाकुर जी पुष्प नौका/पुष्प कुंज में विराजें
13 जुलाई शुक्रवार	: आषाढ़ कृष्ण अमावस्या	: काली पोशाक धारण (प्रति अमावस्या)
14 जुलाई शनिवार	: आषाढ़ शुक्ल द्वितीया	: रथयात्रा उत्सव, लाल पोशाक धारण
11 अगस्त शनिवार	: श्रावण कृष्ण अमावस्या	: ठाकुर जी को हरी पोशाक धारण
03 सितम्बर सोमवार	: भाद्रपद कृष्ण अष्टमी	: जन्माष्टमी महोत्सव
04 सितम्बर मंगलवार	: भाद्रपद कृष्ण नवमी	: नन्दोत्सव
14 सितम्बर शुक्रवार	: भाद्रपद शुक्ल पंचमी	: 4 दिन मंदिर से सवारी / चाव निकले
17 सितम्बर सोमवार	: भाद्रपद शुक्ल अष्टमी	: श्रीराधाष्टमी महोत्सव, विशाल शोभायात्रा
21 सितम्बर शुक्रवार	: भाद्रपद शुक्ल द्वादशी	: श्रीप्रिया जी का छठी उत्सव बधाई गान
25 सितम्बर मंगलवार	: भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा	: साँझी प्रारम्भ 15 दिन तक
07 नवम्बर बुधवार	: कार्तिक कृ. अमावस्या	: श्री जी चौपड़ खेलें, दीपोत्सव
15 नवम्बर गुरुवार	: कार्तिक शुक्ल अष्टमी	: श्रीजी का नटवर वेश धारण, गोपाष्टमी
21 नवम्बर बुधवार	: कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी	: श्रीराधावल्लभ जी का पाटोत्सव
08 जनवरी मंगलवार	: पौष शुक्ल द्वितीया	: खिचड़ी भोग प्रारम्भ एक मास पर्यन्त
22 जनवरी मंगलवार	: माघ कृष्ण प्रतिपदा	: ठाकुर जी के युगल दर्शन
04 फरवरी सोमवार	: माघ कृष्ण अमावस्या	: ठाकुर जी का श्री दाऊजी रूप धारण
06 फरवरी बुधवार	: माघ शुक्ल द्वितीया	: मोहन भोग, टोपा, दुशाला दर्शन
10 फरवरी रविवार	: माघ शुक्ल पंचमी	: ठाकुर जी को बसन्ती पोशाक धारण
08 मार्च शुक्रवार	: फाल्गुन शुक्ल द्वितीया	: श्री जी की कमर में गुलाल की फेंट
17 मार्च रविवार	: फाल्गुन शुक्ल एकादशी	: रंग-उत्सव प्रारम्भ, ब्याहुला, सवारी
21 मार्च गुरुवार	: फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा	: होली-डोलोत्सव
25 मार्च सोमवार	: चैत्र कृष्ण पंचमी	: रंग पंचमी-बाद ग्राम में डोल उत्सव
26 मार्च मंगलवार	: चैत्र कृष्ण षष्ठी	: श्रीहित वनचन्द्र जी का जन्मोत्सव

श्री रंगजी मंदिर के प्रमुख उत्सव

21 अप्रैल शनिवार	: वैशाख शुक्ल षष्ठी	: श्रीरामानुजाचार्य आविर्भावोत्सव
27 जुलाई शुक्रवार	: आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा	: गजेन्द्र-मोक्ष लीला मेला
04 सितम्बर मंगलवार	: भाद्रपद कृष्ण नवमी	: लट्ठा का मेला
12 नवम्बर सोमवार	: कार्तिक शुक्ल पंचमी	: अन्नकूट उत्सव
18 दिसम्बर मंगलवार	: मार्गशीर्ष शुक्ल एका. से	: वैकुण्ठ उत्सव : 10 दिन पर्यन्त
23 मार्च 19 शनिवार	: चैत्र कृष्ण तृतीया से	: ब्रह्मोत्सव : 10 दिन पर्यन्त

श्रीराधारमण जी मन्दिर के प्रमुख उत्सव

30 अप्रैल सोमवार	: वैशाख शुक्ल पूर्णिमा	: श्रीराधारमणदेव जयन्ती 476 वीं
		: श्रीचैतन्यमहाप्रभु के प्रसादी वस्त्र दर्शन
14 जुलाई शनिवार	: आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा	: स्वर्ण जड़ित रथ पर श्रीजी की विजययात्रा
02 अगस्त गुरुवार	: श्रावण कृष्ण पंचमी	: श्रीगोपाल भट्ट गोस्वामी महोत्सव
03 अगस्त शुक्रवार	: श्रावण कृष्ण षष्ठी	: श्रीचैतन्यमहाप्रभु के प्रसादी वस्त्र दर्शन
03 सितम्बर सोमवार	: भाद्रपद कृष्ण अष्टमी	: जन्माष्टमी व्रत, प्रातः श्रीजी का अभिषेक
04 सितम्बर मंगलवार	: भाद्रपद कृष्ण नवमी	: नन्दोत्सव
		: श्रीचैतन्यमहाप्रभु के प्रसादी वस्त्र दर्शन
25 सितम्बर मंगलवार	: भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा	: रासमण्डल पर साँझी रचना प्रा.(15 दिन)
19 अक्टूबर शुक्रवार	: आश्विन शुक्ल दशमी	: रजत हाथी पर श्रीजी की विजय यात्रा
		: श्रीमन्मध्वाचार्य आविर्भाव, नगर संकीर्तन
23 नवम्बर शुक्रवार	: कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा	: श्रीचैतन्यमहाप्रभु–वृन्दावन आगमनोत्सव
		: श्रीअमियनिमाई मन्दिर से शोभायात्रा
20 दिसम्बर गुरुवार	: मार्गशीर्ष शुक्ल द्वादशी	: खिचड़ी भोग प्रारम्भ
10 फरवरी 19 रविवार	: माघ शुक्ल पंचमी	: वसंत पंचमी, श्रीविष्णुप्रिया देवी जन्मोत्सव
21 मार्च 19 गुरुवार	: फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा	: श्री चैतन्य महाप्रभु जयन्ती महोत्सव
		: श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रसादी वस्त्र दर्शन

रंग मंदिर के प्रसिद्ध ब्रह्मोत्सव की सवारियाँ

23 मार्च 2019 शनि	: प्रातः– पूर्णकोठी	रात्रि– सिंह
24 मार्च 2019 रवि	: प्रातः– सूर्यप्रभा	रात्रि– हंस
25 मार्च 2019 सोम	: प्रातः– श्रीगरुड़जी	रात्रि– श्रीहनुमानजी **(छोटी आतिशबाजी)**
26 मार्च 2019 मंगल	: प्रातः– श्रीशेषजी	रात्रि– कल्प वृक्ष
27 मार्च 2019 बुध	: मध्याह्न– पालकी	रात्रि– सिंह शार्दूल
28 मार्च 2019 गुरु	: सायं– काँच का विमान (होली)	रात्रि– हाथी
29 मार्च 2019 शुक्र	: मध्याह्न– **रथ की सवारी**	
30 मार्च 2019 शनि	: प्रातः–	रात्रि– घोड़ा **(बड़ी आतिशबाजी)**
31 मार्च 2019 रवि	: प्रातः– पालकी व मध्याह्न– पुष्करणी में स्नान व	रात्रि– चन्द्रप्रभा
01 अप्रैल 2019 सोम	: प्रातः–	रात्रि– पुष्पक विमान

सर्वश्रेष्ठ व्रत एकादशी का माहात्म्य

श्रीहरि को प्रसन्न करने के लिये एकादशी व्रत अवश्य करें। वैष्णवों हेतु यह सर्वश्रेष्ठ तो है ही परम आवश्यक भी है। द्वादशी तिथि संयुक्त एकादशी तिथि को 'हरिवासर' भी कहा गया है। यानि हरि का दिन।

चिन्तामणि–समा ह्येषा अथवापि निधिः स्मृता। कल्पपादप–प्रेक्षा वा सर्ववेदोपमाथवा।।

नारदपुराण में श्रीवशिष्ठ जी कहते हैं कि यह एकादशी चिन्तामणि के समान (समस्त चिन्ताओं को हरण करने वाली) किसी निधि के समान (बहुमूल्य) कल्पतरु की भांति (सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाली) और सर्व वेदों की उपमा स्वरूप (सर्वोपरि–सर्वपूज्य–महत्वपूर्ण) है।

गोविन्द–स्मरणं नृणामेकादश्यामुपोषणम्। प्रायश्चित्तमिदं नूनं संसारोत्तार–कारकम्।।

श्रीगोविन्द के स्मरण पूर्वक श्रीएकादशी के व्रत का पालन ही समस्त पापों का प्रायश्चित्त एवं संसार–सागर से पार होने का उपाय है।

बालत्वे यौवने वापि वृद्धत्वे वा विशाम्बर। उपोष्यैकादशीं नूनं नैव प्राप्नोति दुर्गतिम्।।

हे वैश्यों में श्रेष्ठ ! बाल्यावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था, किसी भी अवस्था में यदि एकादशी व्रत किया जाय तो व्रती कभी भी दुर्गति को प्राप्त नहीं होता है।

वरं चाण्डालजातीय एकादश्युपवासकृत्। न तु विप्रश्चतुर्वेदी यो भुङ्क्ते हरिवासरे।।

एकादशी–व्रत वाले दिन भोजन करने वाले चतुर्वेदी ब्राह्मण से चाण्डाल जाति का वह मनुष्य अधिक श्रेष्ठ है जो एकादशी व्रत करता है।

ओंकारः सर्ववेदानां यथा चाद्यः प्रपूजितः। तथा सर्वव्रतानाञ्च द्वादशीव्रतमुत्तमम्।।

विष्णुपुराण में कहा है–जिस प्रकार समस्त वेदों का आदि स्वरूपञ्जॐकार पूजित होता है, उसी प्रकार समस्त व्रतों में आदि व्रत द्वादशी व्रत उत्तम है।

एकादशी व्रत का पारण कैसे करें

- पारण का अर्थ है व्रत का विश्राम। विशुद्ध वैष्णवों को एकादशी व्रत का पारण व्रत के अगले दिन सूर्योदय के पश्चात् एक निश्चित समय के अन्दर करना होता है। आजकल पत्रा में पारण का समय अंकित रहता है।
- व्रत की पूर्णता हेतु तुलसी दल अथवा श्रीजगन्नाथ जी का प्रसाद चावल कणिका ग्रहण कर लेने से पारण हो जाता है।
- निर्जल व्रत रखने वालों के व्रत का पारण जल पी लेने मात्र से हो जाता है।
- प्रायः वैष्णव, विरक्त, साधक या दीक्षित गृहस्थी ठाकुर सेवा–गुरुमन्त्र–पाठ–नियमादि करने के उपरान्त ही अन्न जल ग्रहण करते हैं। पारण समय तक यह पूरा न हो पाने के कारण पहले जल, तुलसी अथवा चावल कणिका से पारण कर लिया जाता है और बाद में सुविधा से अन्न प्रसाद ग्रहण किया जाता है। अपनी गुरु–परम्परा से जिज्ञासा कर इसका पालन करना चाहिए।

श्रीगौड़ेश्वर वैष्णव सम्मिलनी राधाकुण्ड के पत्रा के अनुसार

मास	एकादशी व्रत			पारण समय सूर्योदय के पश्चात्
चैत्र शुक्ल	कामदा	मंगल,	मार्च 27	बुधवार, 09.42 तक
वैशाख कृष्ण	वरूथिनी	गुरु,	अप्रैल 12	शुक्रवार, 07.20 तक
वैशाख शुक्ल	मोहिनी	गुरु,	अप्रैल 26	शुक्रवार, 09.55 तक
प्र. ज्येष्ठ कृष्ण	अपरा	शुक्र,	मई 11	शनिवार, 09.23 तक
ज्येष्ठ शुक्ल	कमला	शुक्र,	मई 25	शनिवार, 09.22 तक
द्वि. ज्येष्ठ कृष्ण	कामदा	रवि,	जून 10	सोमवार, 09.04 तक
ज्येष्ठ शुक्ल	चम्पक (निर्जल)	रवि,	जून 24	सोमवार, 06.01 तक
आषाढ़ कृष्ण	योगिनी	सोम,	जुला 09	मंगलवार, 09.29 तक
आषाढ़ शुक्ल	देवशयनी	सोम,	जुला 23	मंगलवार, 09.31 तक
श्रावण कृष्ण	कामिका	बुध,	अग 08	गुरुवार, 09.33 तक
श्रावण शुक्ल	पवित्रा	बुध,	अग 22	गुरुवार, 09.33 तक
भाद्रपद कृष्ण	अजा	गुरु,	सित 06	शुक्रवार, 06.40 तक
भाद्रपद शुक्ल	पद्मा	शुक्र,	सित 21	शनिवार, 09.30 तक
आश्विन कृष्ण	इन्दिरा	शुक्र,	अक्टू 05	शनिवार, 09.28 तक
आश्विन शुक्ल	पापांकुशा	शनि,	अक्टू 20	रविवार, 09.28 तक
कार्तिक कृष्ण	रमा	रवि,	नव 04	सोमवार, 09.30 तक
कार्तिक शुक्ल	प्रबोधिनी	सोम,	नव 19	मंगलवार, 09.35 तक
मार्गशीर्ष कृष्ण	उत्पन्ना	सोम,	दिस 03	मंगलवार, 09.41 तक
मार्गशीर्ष शुक्ल	मोक्षदा	बुध,	दिस 19	गुरुवार, 09.49 तक
पौष कृष्ण	सफला	मंगल,	जन 01	बुधवार, 09.47 तक
पौष शुक्ल	पुत्रदा	गुरु,	जन 17	शुक्रवार, 10.01 तक
माघ कृष्ण	षट्तिला	गुरु,	जन 31	शुक्रवार, 10.02 तक
माघ शुक्ल	जया/भैमी	शनि,	फर 16	रवि, मध्याह्न अभिषेक के बाद
फाल्गुन कृष्ण	विजया	शनि,	मार्च 02	रविवार, 09.54 तक
फाल्गुन शुक्ल	आमलकी	रवि,	मार्च 17	सोमवार, 09.47 तक
चैत्र कृष्ण	पापमोचनी	सोम,	अप्रैल 01	मंगलवार, 08.39 तक

गुरु (तारा) उदयास्त	**शुक्र (तारा) उदयास्त**
अस्त : 12 नवम्बर पश्चिम 14:30	अस्त : 17 अक्टूबर पश्चिम 24:15
उदय : 08 दिसम्बर पूर्व 16:07	उदय : 01 नवम्बर पूर्व 17:50

व्रत/मास	श्रीगणेश चतुर्थी	मास शिवरात्रि	अमावस्या	पूर्णिमा
वैशाख	मंगल, अप्रैल 03	शनि, अप्रैल 14	सोम, अप्रैल 16	रवि, अप्रैल 29
प्र. ज्येष्ठ	गुरु, मई 03	रवि, मई 13	मंगल, मई 15	मंगल, मई 29
द्वि. ज्येष्ठ	शनि, जून 02	मंगल, जून 12	बुध, जून 13	बुध, जून 27
आषाढ़	रवि, जुला. 01	बुध, जुला. 11	शुक्र, जुला. 13	शुक्र, जुला. 27
श्रावण	मंगल, जुला. 31	गुरु, अग. 09	शनि, अग. 11	शनि, अग. 25
भाद्रपद	गुरु, अग. 30	शनि, सित. 08	रवि, सित. 09	सोम, सित. 24
आश्विन	शुक्र, सित. 28	रवि, अक्टू. 07	मंगल, अक्टू. 09	बुध, अक्टू. 24
कार्तिक	शनि, अक्टू. 27	मंगल, नव. 06	बुध, नव. 07	गुरु, नव. 22
मार्गशीष	सोम, नव. 26	बुध, दिस. 05	शुक्र, दिस. 07	शनि, दिस. 22
पौष	मंगल, दिस. 25	शुक्र, जन. 04	शनि, जन. 05	रवि, जन. 20
माघ	गुरु, जनवरी 24	रवि, फर. 03	सोम, फर. 04	मंगल, फर. 19
फाल्गुन	शुक्र, फरवरी 22	मंगल, मार्च 05	बुध, मार्च 06	गुरु, मार्च 21
चैत्र	रवि, मार्च 24	बुध, अप्रैल 03	शुक्र, अप्रैल 05	शुक्र, अप्रैल 19

संक्रान्तियाँ पुण्यकाल

मेष	14 अप्रैल	पुण्यकाल दिनभर
वृष	14 मई	पुण्यकाल अग्रिमदिन
मिथुन	15 जून	पुण्यकाल प्रातः 5/27 से
कर्क	16 जुलाई	पुण्यकाल अग्रिमदिन
सिंह	17 अगस्त	पुण्यकाल 5/55 उप.
कन्या	17 सितम्बर	पुण्यकाल 6/47 से
तुला	17 अक्टूबर	पुण्यकाल मध्याह्नोपरान्त
वृश्चिक	16 नवम्बर	पुण्यकाल 12/12 से
धनु	16 दिसम्बर	पुण्यकाल 9/8 से
मकर	14 जनवरी	पुण्यकाल अग्रिमदिन
कुम्भ	13 फरवरी	पुण्यकाल 7/6 से
मीन	14 मार्च	पुण्यकाल अग्रिमदिन

मतान्तर में एकादशी का श्राद्ध
05 अक्टूबर शुक्रवार को होगा।

पितृपक्ष (श्राद्ध)

पूर्णिमा का श्राद्ध	24	सित. 2018	सोमवार
प्रतिपदा	25	सितम्बर 2018	मंगलवार
द्वितीया	26	सितम्बर 2018	बुधवार
तृतीया	27	सितम्बर 2018	गुरुवार
चतुर्थी	28	सितम्बर 2018	शुक्रवार
पंचमी	29	सितम्बर 2018	शनिवार
षष्ठी	30	सितम्बर 2018	रविवार
सप्तमी	01	अक्टूबर 2018	सोमवार
अष्टमी	02	अक्टूबर 2018	मंगलवार
नवमी	03	अक्टूबर 2018	बुधवार
दशमी	04	अक्टूबर 2018	गुरुवार
एकादशी	06	अक्टूबर 2018	शनिवार
द्वादशी	06	अक्टूबर 2018	शनिवार
त्रयोदशी	07	अक्टूबर 2018	रविवार
चतुर्दशी	08	अक्टूबर 2018	सोमवार
सर्वपितृ	09	अक्टूबर 2018	मंगलवार

मंत्रों द्वारा ग्रहों की पूजा

सूर्य ग्रह का मंत्र है– **ॐ घृणिः सूर्याय नमः**
इसको 7000 बार करना चाहिए।

चन्द्रमा ग्रह का मंत्र है– **ॐ सों सोमाय नमः**
इसको 11000 बार करना चाहिए।

मंगल ग्रह का मंत्र है– **ॐ अं अंगारकाय नमः**
इसको 10000 बार करना चाहिए।

बुध ग्रह का मंत्र है– **ॐ बुं बुधाय नमः**
इसको 9000 बार करना चाहिए।

बृहस्पति ग्रह का मंत्र है– **ॐ बृं बृहस्पतये नमः**
इसको 19000 बार करना चाहिए।

शुक्र ग्रह का मंत्र है– **ॐ शुं शुक्राय नमः**
इसको 16000 बार करना चाहिए।

शनि ग्रह का मंत्र है– **ॐ शं शनैश्चराय नमः**
इसको 23000 बार करना चाहिए।

राहु ग्रह का मंत्र है– **ॐ रां राहवे नमः**
इसको 18000 बार करना चाहिए।

केतु ग्रह का मंत्र है– **ॐ कें केतवे नमः**
इसे 17000 बार करना चाहिए।

ग्रहों के बीज मंत्र

सूर्य ग्रह का बीज मंत्र है–
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रों सः सूर्याय नमः

चन्द्रमा ग्रह का बीज मंत्र है–
ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः

मंगल ग्रह का बीज मंत्र है–
ॐ क्रां क्रीं क्रों सः भोमाय नमः

बुध ग्रह का बीज मंत्र है–
ॐ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः

बृहस्पति ग्रह का बीज मंत्र है–
ॐ ग्रां ग्रीं ग्रों सः बृहस्पतये नमः

शुक्र ग्रह का बीज मंत्र है–
ॐ द्रां द्रीं द्रों सः शुक्राय नमः

शनि ग्रह का बीज मंत्र है–
ॐ प्रां प्रीं प्रों सः शनैश्चराय नमः

राहु ग्रह का बीज मंत्र है–
ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः

केतु ग्रह का बीज मंत्र है–
ॐ सां सीं सों सः केतवे नमः

साढ़े तीन स्वयंसिद्ध तिथियाँ

चै. शु. प्रतिपदा – 18 मार्च 18
रविवार – नवसम्वत् प्रारंभ

वै. शु. तृतीया – 18 अप्रैल 18
बुधवार – अक्षय तृतीया

आश्विन शु. दशमी – 19 अक्टूबर 18
शुक्रवार – विजया दशमी

का. शु. प्रतिपदा – 08 नवम्बर 18
गुरुवार – गोवर्धन पूजा

प्रारंभ की तीन तिथियाँ पूर्ण बली हैं एवं चौथी अर्धबली है अतः साढ़े तीन कहा। इन तिथियों में बिना पंचांग शुद्धि देखे शुभकार्य करने की परम्परा है।

लोकप्रसिद्ध तिथियाँ

आषाढ़ शु. नवमी : 21 जुलाई 18
शनिवार – भड्डली नवमी

का. शु. एकादशी : 19 नवम्बर 18
सोमवार – देवउठान एकादशी

माघ शु. पंचमी : 10 फरवरी 19
रविवार – वसन्त पंचमी

फा. शु. द्वितीया : 08 मार्च 19
शुक्रवार – फुलैरा दौज

लोक व्यवहार में इन तिथियों को शुभकार्य के लिये उत्तम माना जाता है।

क्या है अमृतसिद्धि योग और ? सर्वार्थसिद्धि योग ?

निश्चित वार और निश्चित नक्षत्र के योग से अमृतसिद्धि और सर्वार्थसिद्धि योग बनते हैं। ये अति शुभ संयोग हैं अतः शुभकार्य के लिए श्रेष्ठ हैं। ये योग हैं–

अमृतसिद्धि योग –

रविवार + हस्त नक्षत्र
सोमवार + मृगशिरा
मंगलवार + अश्विनी : गृह प्रवेश वर्जित
बुधवार + अनुराधा
गुरुवार + पुष्य : विवाह कार्य वर्जित
शुक्रवार + रेवती
शनिवार + रोहिणी : यात्रा वर्जित

सर्वार्थ सिद्धियोग –

रविवार + अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्तमूल नक्षत्र
सोमवार + रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, श्रवण
मंगलवार + अश्विनी, कृत्तिका, आश्लेषा, उत्तरा भाद्रपद
बुधवार + कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा
गुरुवार + अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, अुनराधा, रेवती
शुक्रवार + अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण, रेवती
शनिवार + रोहिणी, स्वाति, श्रवण

किस वार को क्या प्रारम्भ करें ?

- **रविवार : नौकरी, मुकदमा, टैण्डर भरना, औषधि**
- **सोमवार : आभूषण खरीदना, बीज बोना, ऋण देना**
- **मंगलवार : मीटिंग्स और पुलिस विभाग के कार्य**
- **बुधवार : वेद पढ़ना, आवेदन / प्रार्थना प्रत्र देना**
- **गुरुवार : सम्बंध चर्चा, औषधि सेवन, ट्यूशन पढ़ना**
- **शुक्रवार : डांस / मनोरंजन पार्टी, शूटिंग, ऋण लेना**
- **शनिवार : नौकरी, मशीनरी कार्य एवं आपरेशन**

दिशा-शूल

अर्थात् किस दिशा में किन दिनों में यात्रा निषेध होती है–

पूर्व दिशा में
सोमवार और शनिवार

पश्चिम दिशा में
रविवार और शुक्रवार

उत्तर दिशा में
मंगलवार और बुधवार

दक्षिण दिशा में
गुरुवार

दिशाशूल में यदि यात्रा करना आवश्यक हो तो

निम्नलिखित वस्तु खाकर यात्रा करने से अनिष्ट की आशंका नहीं रहेगी।

रवि. व शुक्र. – घी
सोमवार – दूध
मंगलवार – गुड
बुधवार – फूल
गुरुवार – दही
शनिवार – तिल

वाहन क्रय-विक्रय मुहूर्त

वाहन लेने पर अपने देवस्थान में या शक्तिस्थान में दर्शनार्थ अवश्य जाना चाहिए। कुलगुरु या पंडित/ पुजारी जी से पूजा कराते समय वाहन पर सिंदूर से स्वस्तिकचिह्न बनवायें।

20 अप्रैल	शुक्रे मृगशिर अभि. मु.
22 अप्रैल	रवि पुनर्वसु ल. चिन्त.
23 अप्रैल	चन्द्रे पुष्यभे धातायोग
27 अप्रैल	शुक्रे उफा. शुभयोग 13/59 से
02 मई	बुधे अनुराधा स. सि. योग
07 मई	चन्द्रे श्रवण स. सि. योग
10 मई	गुरौ शत. भद्रात्पूर्वेल. 3
22 जून	शुक्रे चित्रा श्रेष्ठ
23 जून	शनौ स्वाती भद्रात्पूर्वे
25 जून	चन्द्रे अनुराधा स. सि. योग
06 जुलाई	शुक्रे रेवती स. सि. योग
14 जुलाई	शनौ पुष्य अभि. मु. श्रेष्ठ
18 जुलाई	बुधे हस्त स. सि. योग
19 जुलाई	गुरौ चित्रा भद्रात्पूर्वेश्रेष्ठ
20 जुलाई	शुक्रे स्वाती लग्नचिन्त.
22 जुलाई	रवि अनु. 10/43 सेल. श्रे.
29 जुलाई	रवि धनिष्ठा अभि. मु.
30 जुलाई	चन्द्रे शतभिषा शुभयोगे
03 अगस्त	शुक्रे रेवती श्रीवत्सयोग
04 अगस्त	शनौ अश्विनी सौम्ययोगे
08 अगस्त	बुधे मृगशिर अमृतयोग
15 अगस्त	बुधे हस्त आनन्दयोग
16 अगस्त	गुरौ चित्रा चर योग में
24 अगस्त	शुक्रे श्रवण आनन्दयोगे
26 अगस्त	रवि धनिष्ठा अभि. मु.
31 अगस्त	शुक्रे अश्विनी ससियो.
06 सितम्बर	गुरौ पुनर्वसु स. सि. योग
12 सितम्बर	बुधे चित्रा अभि. मु.
15 सितम्बर	शनौ अनुराधा अमृतयोग
21 सितम्बर	शुक्रे श्रवण स. सि. योग
22 सितम्बर	शनौ धनिष्ठा श्रेष्ठ योग
11 अक्टूबर	गुरौ स्वाती लग्न 8
13 अक्टूबर	शनौ अनुराधा अमृतयोग
05 नवम्बर	चन्द्रे हस्त धनत्रयोदशी
09 नवम्बर	शुक्रे अनुराधा ससियो.
12 दिसम्बर	बुधे श्रवण छत्रयोगे
13 दिसम्बर	गुरौ धनिष्ठा श्रीवत्सयोगे
14 दिसम्बर	शुक्रे शतभिषासौम्ययोगे
19 जनवरी	शनौ मृग. शुभचौघड़िया में
21 जनवरी	चन्द्रे पुष्य श्रेष्ठ ल. कुम्भ
27 जनवरी	रवि चित्रायां अभि. मु.
28 जनवरी	चन्द्रे स्वात्यां छत्रयोगे
06 फरवरी	बुधे धनिष्ठा शतभिषा
07 फरवरी	गुरौ शतभिषा ल. चिन्त
10 फरवरी	रवि रेवती प्रवर्ध. योगे
11 फरवरी	चन्द्रे अश्वि. रवियोग श्रेष्ठ
15 फरवरी	शुक्रे मृगशिर मानसयोगे
24 फरवरी	रवि स्वाती अभि. मु.
03 मार्च	रवि श्रवण अमृतयोगे
08 मार्च	शुक्रे उभा. अबूझमुहूर्त्त
09 मार्च	शनौ रेवत्यां धातायोगे

खग्रास चन्द्रग्रहण

27 जुलाई 2018, शुक्रवार

स्पर्श – रात्रि 23.54 (रात 11.54)
मध्य – रात्रि 25.52 (रात 01.52)
समाप्त – रात्रि 27.49 (रात 03.49)
सूतक – दोपहर 02.54 से

रविपुष्य, गुरूपुष्य एवं पुष्यामृत योग

पुष्य नक्षत्र, नक्षत्रों का सम्राट माना जाता है, विवाह कार्य को छोड़कर शेष सभी कार्यों में यह नक्षत्र शुभ फलदायक है।

दि. मास	घं. मि.	से	घं. मि.	तक	संज्ञा
26 मार्च	12/54	''	30/20	''	पुष्य
27 मार्च	06/20	''	11/27	''	पुष्य
22 अप्रैल	18/17	''	29/51	''	रविपुष्य
23 अप्रैल	05/51	''	17/02	''	पुष्य
19 मई	24/24	''	29/33	''	पुष्य
20 मई	05/33	''	22/43	''	रविपुष्य
16 जून	08/42	''	29/28	''	पुष्य
17 जून	05/28	''	06/19	''	रविपुष्य
13 जुलाई	18/58	''	29/37	''	पुष्य
14 जुलाई	05/37	''	16/06	''	पुष्य
09 अगस्त	29/43	''	29/51	''	गुरुपुष्य
10 अगस्त	05/51	''	26/53	''	पुष्य
06 सितम्बर	15/13	''	30/05	''	गुरुपुष्य
07 सितम्बर	06/05	''	15/55	''	पुष्य
03 अक्टूबर	22/23	''	30/17	''	पुष्य
04 अक्टूबर	06/17	''	20/48	''	गुरुपुष्य
30 अक्टूबर	27/50	''	30/33	''	पुष्य
31 अक्टूबर	06/33	''	26/33	''	पुष्य
27 नवम्बर	09/49	''	30/53	''	पुष्य
28 नवम्बर	06/53	''	08/08	''	पुष्य
24 दिसम्बर	18/21	''	31/11	''	पुष्य
25 दिसम्बर	07/11	''	15/54	''	पुष्य
20 जनवरी	29/21	''	31/14	''	रविपुष्य
21 जनवरी	07/14	''	26/26	''	पुष्य
17 फरवरी	16/45	''	30/58	''	रविपुष्य
18 फरवरी	06/58	''	14/01	''	पुष्य
16 मार्च	26/12	''	30/31	''	पुष्य
17 मार्च	06/31	''	24/10	''	रविपुष्य

श्रीनारायण कवच

का प्रतिदिन पाठ करने से सभी प्रकार से रक्षा तो होती ही है, प्रभु के विभिन्न नामों तथा लीलाओं का स्मरण होने से भक्ति-भजन भी पुष्ट होता है। पाठ न कर पाने की स्थिति में इसका गण्डा बनवाकर धारण कर सकते हैं। अपने पंडित जी से प्रार्थना कर इसे बनवाकर धारण करें। निश्चित लाभ होगा। ग्रन्थ भी उपलब्ध है।

सर्वार्थ सिद्धि योग

वार, नक्षत्र एवं तिथि के संयोग से बनने वाले सर्वार्थसिद्धि योगों का विवरण तारीख के सामने घं. मि. में लिखा है। इस समय में किये गए किसी भी कार्य की सफलता प्रायः सुनिश्चित है।

ता.	मास	घं.मि.	से	घं.मि.	तक
18	मार्च	6.30	–	20.09	
20	मार्च	6.28	–	19.43	
21	मार्च	19.01	–	30.25	
26	मार्च	12.54	–	30.20	
27	मार्च	11.27	–	30.19	
04	अप्रैल	07.30	–	30.09	
05	अप्रैल	06.09	–	18.09	
08	अप्रैल	17.35	–	30.05	
09	अप्रैल	20.38	–	30.04	
15	अप्रैल	28.04	–	29.58	
17	अप्रैल	25.56	–	29.56	
18	अप्रैल	05.56	–	29.55	
22	अप्रैल	18.17	–	29.51	
23	अप्रैल	05.51	–	17.02	
24	अप्रैल	05.50	–	15.58	
02	मई	05.44	–	17.37	
06	मई	05.41	–	28.39	
07	मई	05.40	–	29.40	
13	मई	13.30	–	29.36	
15	मई	10.55	–	29.35	
16	मई	05.35	–	29.34	
18	मई	26.22	–	29.33	
20	मई	05.33	–	22.43	
26	मई	20.35	–	29.30	
28	मई	23.03	–	29.29	
03	जून	05.29	–	11.58	
04	जून	05.28	–	15.04	
08	जून	23.01	–	29.28	
10	जून	05.28	–	22.28	
12	जून	05.28	–	19.06	
13	जून	05.28	–	29.28	
15	जून	11.20	–	29.28	
17	जून	05.28	–	06.19	
20	जून	25.18	–	29.29	
23	जून	05.30	–	27.19	
25	जून	05.30	–	29.30	
30	जून	18.28	–	29.32	
06	जुलाई	06.53	–	29.34	
08	जुलाई	05.34	–	07.37	
09	जुलाई	29.20	–	29.35	
11	जुलाई	05.36	–	24.42	
12	जुलाई	21.53	–	29.37	
13	जुलाई	05.37	–	18.58	
18	जुलाई	08.19	–	29.40	
21	जुलाई	05.41	–	09.06	
23	जुलाई	05.42	–	12.52	
27	जुलाई	24.32	–	29.44	
28	जुलाई	05.44	–	27.36	
02	अगस्त	13.12	–	29.48	
03	अगस्त	05.48	–	29.48	
06	अगस्त	14.07	–	29.50	
08	अगस्त	05.50	–	10.47	
09	अगस्त	08.24	–	29.51	
15	अगस्त	05.54	–	16.12	
24	अगस्त	06.47	–	29.59	
25	अगस्त	05.59	–	09.48	
28	अगस्त	17.07	–	30.01	
30	अगस्त	06.01	–	30.02	
31	अगस्त	06.02	–	20.45	
03	सित.	06.03	–	30.03	
06	सित.	06.04	–	30.05	
09	सित.	29.40	–	30.06	
14	सित.	25.26	–	30.08	
16	सित.	28.54	–	30.09	
21	सित.	06.11	–	16.45	
25	सित.	06.13	–	25.00	
27	सित.	06.13	–	26.22	
29	सित.	26.13	–	30.15	
01	अक्टू.	06.15	–	24.50	
04	अक्टू.	06.17	–	20.48	
07	अक्टू.	15.17	–	30.19	
12	अक्टू.	10.39	–	30.21	
14	अक्टू.	13.13	–	30.23	
23	अक्टू.	06.27	–	08.47	
25	अक्टू.	06.28	–	09.25	
27	अक्टू.	08.19	–	30.30	
04	नव.	06.36	–	30.36	
08	नव.	19.47	–	30.39	
09	नव.	06.39	–	20.33	
11	नव.	06.40	–	24.01	
18	नव.	16.30	–	30.47	
20	नव.	18.33	–	30.48	
24	नव.	06.50	–	15.09	
02	दिस.	06.56	–	26.59	
05	दिस.	27.33	–	30.59	
06	दिस.	06.59	–	28.34	
09	दिस.	07.02	–	08.06	
16	दिस.	07.06	–	27.07	
18	दिस.	07.08	–	28.37	
19	दिस.	28.11	–	31.09	
24	दिस.	18.21	–	31.11	
25	दिस.	15.54	–	31.12	
30	दिस.	07.13	–	08.23	
02	जन.	09.38	–	31.14	
03	जन.	07.14	–	11.02	
06	जन.	17.42	–	31.15	
07.	जन.	20.35	–	31.15	
13	जन.	07.15	–	11.05	
15	जन.	07.15	–	13.55	
16	जन.	14.11	–	31.14	
20	जन.	29.21	–	31.14	
21	जन.	07.14	–	26.26	
22	जन.	07.13	–	23.31	
30	जन.	07.10	–	16.39	
03	फर.	07.08	–	26.54	
04	फर.	07.08	–	30.00	
10	फर.	19.36	–	31.04	
12	फर.	22.10	–	31.02	
13	फर.	07.02	–	31.01	
17	फर.	16.45	–	30.58	
18	फर.	06.58	–	14.01	
19	फर.	06.57	–	11.02	
23	फर.	22.46	–	30.52	
25	फर.	22.07	–	30.50	
03	मार्च	06.46	–	08.58	
04	मार्च	06.45	–	12.09	
08	मार्च	23.15	–	30.39	
10	मार्च	06.38	–	26.56	
12	मार्च	06.36	–	28.52	
13	मार्च	06.35	–	30.34	
15	मार्च	27.43	–	30.32	
17	मार्च	06.31	–	24.10	
23	मार्च	09.04	–	30.23	
25	मार्च	07.02	–	30.21	
30	मार्च	15.36	–	30.15	
04	अप्रैल	29.35	–	30.09	
05	अप्रैल	06.09	–	30.08	

रात्रि 12 बजे को 24 बजे, रात्रि 1 बजे को 25 बजे, 2 को 26 बजे, आदि क्रमशः इसी प्रकार लिखा जाता है।

बुधवार : 07 नवम्बर 2018

दीपावली : महालक्ष्मी पूजन

दीपावली के पावन पर्व में श्रीमहालक्ष्मी का पूजन दिन अथवा रात्रि में निशीथकाल पर्यन्त कभी भी किया जा सकता है किन्तु अलग–अलग कारोबारियों को लग्न के अनुसार पूजन करना उत्तम रहता है। **इस वर्ष अमावस्या रात्रि 09:31 बजे** तक है। इस समय तक पूजा कर लेने से अमावस्या तिथि में पूजा मानी जायेगी, जो उत्तम है।

श्रीलक्ष्मीजी का प्रादुर्भाव निशीथकाल में समुद्र से हुआ था। सायं सूर्यास्त से सूर्योदय तक के समय के **15** भाग करने पर **तीन भाग के समय तक प्रदोष काल** होता है और जो **आठवाँ भाग** होता है उसे **महानिशीथकाल** कहते हैं। इसलिए कुछ सज्जन महानिशीथकाल में और कुछ लोग प्रदोष काल को श्रेष्ठ मानकर उस समय में भी पूजा करते हैं।

इस दिन अपने घर में लक्ष्मीजी की पूजा के साथ–साथ देवताओं में अग्रपूज्य होने के कारण श्रीगणेशजी की भी पूजा की जाती है। श्रीगणेश, महालक्ष्मी के साथ–साथ कुबेर, इन्द्र, ऋद्धि–सिद्धि, वरुण, इन्द्रादि देवी–देवताओं और कुलदेवता की पूजा भी लोग करते हैं। वैष्णव उपासक श्रीमहालक्ष्मी–गणेश के साथ श्रीश्रीराधाकृष्ण की पूजा करके अपनी अनन्य निष्ठा का परिचय देते हैं। जिसकी जैसी श्रद्धा हो उसीप्रकार पूजा करनी चाहिए। तदुपरान्त अपने प्रतिष्ठान, कारखाने, दुकान, ऑफिस, गोदाम आदि तथा मशीनरी, कम्प्यूटर, बहीखाते और रोकड़ (धन–स्वर्ण आभूषण आदि) की भी पूजा करने का विधान है जिससे वर्षभर सुख समृद्धि बनी रहे। श्रीलक्ष्मीजी की स्तुति करनी चाहिए अथवा श्रीराधाकृपाकटाक्ष का पाठ करना चाहिए। सभी देवी–देवताओं की पूजा अन्ततोगत्वा स्वयं भगवान् श्रीश्रीराधाकृष्ण की ही पूजा है–ऐसा शास्त्रों में कहा गया है।

हजारों रुपये के महंगे पटाखे जलाने से बेहतर है कि उन रुपयों को अपने आश्रितों में बाँटें अथवा गरीब बच्चों को नये वस्त्र और उनकी आवश्यकता की सामग्री उन्हें दिला दें। इससे आपको असीम सन्तोष होगा और लक्ष्मीजी भी निश्चित प्रसन्न होंगी।

दिन और रात के लग्न मुहूर्त

प्रातः 09:37 से 11:41 – धनु लग्न
प्रातः 11:41 से 13:25 – मकर लग्न (नेष्ट)
प्रातः 13:25 से 14:54 – कुम्भ लग्न
दोप. 14:54 से 16:21 – मीन लग्न
सायं 16:21 से 17:58 – मेष लग्न : (गोधूलिवेला)
सायं 17:58 से 19:55 – वृष लग्न
रात्रि 19:55 से 22:09 – मिथुन लग्न
रात्रि 22:09 से 24:27 – कर्क लग्न
रात्रि 24:27 से 26:45 – सिंह लग्न

- **प्रदोष काल : सायं 17:38 से 20:14**
- **निशीथ काल : रात्रि 20:14 से 22:51**
- **महानिशीथ काल : रात्रि 22:51 से 25:31**

सुनिश्चित लग्न मुहूर्त में कारखाने, आफिस, दुकान, मकान आदि में महालक्ष्मी पूजन अपने पुरोहित अथवा सदाचारी योग्य पंडित से कराने पर लक्ष्मी का भण्डार कभी खाली नहीं होता, क्योंकि उसमें उस ब्राह्मण के तप का अंश भी मिल जाता है।

लक्ष्मी के भण्डार की, बड़ी अपूरब बात।
ज्यों ज्यों दे त्यों त्यों बढ़े, बिन खर्चे घट जात।।

समुद्र से उत्पन्न लक्ष्मीजी आश्रय ग्रहणार्थ सद्‌गृहस्थ के निवास, दुकान, कारखाना, ऑफिस, स्टोर आदि का निरीक्षण करती हैं, किसने कितनी स्वच्छता से घर सजाया है; कहाँ मैं निवास करूँ; यह भी देखती हैं कि कौन मेरी भक्ति में संलग्न है? जहाँ अच्छा लगता है, वहीं ठहर जाती हैं। इसलिए सभी को चाहिए कि–

- **घर–दुकान–मकान आदि को स्वच्छ रखें। प्रकाश से उजाला रखें।**
- **लाइट्स रात में भी खुली रखें और जैसे अपने बच्चे का जन्मदिवस मनाते हैं इसी प्रकार लक्ष्मीजी का भी जन्मदिवस आनन्द से मनायें।**
- **शुभकामना दें, उपहार बाँटें और भोजन, मिठाई आदि से सबको तृप्त करें।**
- **अपने आश्रितों को, कर्मचारियों को और परिवारीजनों–स्नेहीजनों को गिफ्ट बाँटें।**
- **जहाँ तक हो सके त्यौहार को पवित्रता के साथ मनायें।**
- **अपव्यय न करें। लक्ष्मी का दुरुपयोग करने से वे कभी प्रसन्न नहीं होतीं।**
- **इस दिन मद्य–मांस आदि का सेवन बिल्कुल न करें और दिखावा न करें।**

कालसर्पयोग एवं मंगली योग

'कालसर्पयोग' सुनते ही लोगों के मन में एक भय व्याप्त हो जाता है। ऐसे ही कोई मंगली या मांगलिक है तो ऐसा समझा जाता है जैसे कोई बड़ी भारी बाधा आ गयी हो। यह एक बड़ा भारी भ्रम है। आज से 20–30 वर्ष पूर्व इन सब बातों को कोई न जानता था, न ही मानता था। परन्तु समय के प्रभाव से आजकल हर व्यक्ति इन बातों को जानने–मानने लगा है। हाँ जो विशुद्ध भक्तिमार्ग के उपासक हैं वे आज भी न जन्मपत्री मिलाते हैं, न गुण मिलाते हैं और न ही किसी से अपनी कुण्डली की विवेचना कराते हैं। अवश्य ऐसे लोग विरले ही हैं, लेकिन उनकी दृढ़ आस्था है कि– **राम नाम मणि विषय व्याल के, मेटत कठिन कुअंक भाल के।**

अर्थात् भगवन्नाम संकीर्त्तन के द्वारा उनके मस्तक के बुरे अंक और भाग्य की रेखाएँ भी बदल सकती हैं। अतः प्रभु की भक्ति करते हुए उनकी शरण में रहना ही सर्वोत्तम है, ऐसा भक्तजन मानते हैं।

संवत् 2075 में निम्नलिखित समय में जन्मे बच्चों को काल सर्पयोग बनेगा–

20 जुला.	05.30	से	28 जुला.	17.30 तक
10 अग.	05.30	से	23 अग.	27.25 तक
07 सित.	23.20	से	21 सित.	08.50 तक
05 अक्टू.	05.30	से	18 अक्टू.	13.30 तक

ज्योतिष में योग का अपना एक अलग महत्त्व है। जन्मपत्रिका के जन्मांक चक्र में राहु और केतु के मध्य एक ही तरफ सूर्य आदि सातों ग्रह जब स्थित होते हैं तो कालसर्प योग बनता है। यह योग केवल कष्टदायक ही नहीं होता, अपितु परिस्थिति के अनुसार आनन्द–दायक और मंगलकारी भी होता है। ऐसे ही मंगली विचार भी है अतः परेशान न हों और अपने पण्डितजी से समझकर यदि यह योग कष्टकारक हों तो उनकी शान्ति करानी चाहिए अन्यथा मस्त रहें। कालसर्पयोग की पूजा व्रज में वृन्दावन के समीप स्थित छटीकरा में श्रीगरुड़गोविन्द जी के मन्दिर पर समय–समय पर होती रहती है।

राहुकाल : अर्थात् निषिद्ध समय

इस समय में सामान्य रूप से शुभकार्य वर्जित होते हैं। विशेष रूप से गणना कर निकाले गये समय में इस काल को वर्जित नहीं मानते। राहुकाल वार के अनुसार डेढ़–डेढ़ घंटे के लिये निम्न अनुसार घटित होता है–

रविवार	: सायं 4:30 से 6:00 बजे	बुधवार	: दोप 12:00 से 1:30 बजे
सोमवार	: प्रातः 7:30 से 9:00 बजे	गुरुवार	: दोप 1:30 से 3:00 बजे
मंगलवार	: दोप 3:00 से 4:30 बजे	शुक्रवार	: प्रातः 10:30 से 12 :00 बजे

शनिवार : प्रातः 9:00 से 10:30 बजे

गृह वास्तु

– स्वामी श्रीशाम ढींगरा

बृहद संहिता, नारद संहिता, वास्तु राजबल्लभ जैसे प्राचीन ग्रंथों में आवासीय भवनों के गृह वास्तु का वर्गीकरण सोलह भागों में प्रतिपादित किया गया है। इन ग्रंथों के अनुसार विभिन्न दिशाओं में बनाए जाने वाले कमरों का वर्णन इस प्रकार है –

1. ईशान – पूजा का कमरा।
2. ईशान और पूर्व के बीच में – भण्डार या स्टोर।
3. पूर्व – स्नानघर।
4. आग्नेय एवं पूर्व के मध्य – दूध–दही आदि पदार्थों का कमरा।
5. आग्नेय – रसोईघर (किचन)।
6. आग्नेय व दक्षिण के मध्य – घी–तेल आदि का कमरा (स्टोर)।
7. दक्षिण – शयन कक्ष (बैडरूम)।
8. दक्षिण व नैऋत्य के बीच – शौचालय।
9. नैऋत्य – शस्त्र एवं भारी सामान आदि।
10. नैऋत्य एवं पश्चिम के बीच – पढ़ाई का कमरा।
11. पश्चिम – भोजन का कमरा (डाइनिंग हॉल)।
12. पश्चिम व वायव्य के बीच – रोदन गृह।
13. वायव्य – पशुशाला।
14. वायव्य व उत्तर के बीच – रतिगृह (बैडरूम)।
15. उत्तर – खजाना (कैशरूम)।
16. उत्तर एवं ईशान के बीच – औषधि (रोगी कक्ष)।

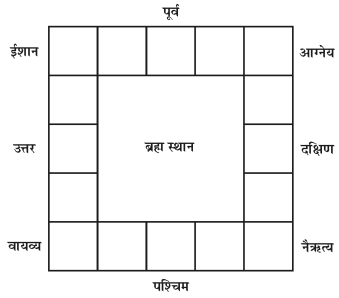

इन सब के मध्य खुले स्थान जिसे ब्रह्म स्थान का नाम दिया गया है, आगंन के रूप में होना चाहिए। परंतु आज के व्यावसायिक युग में जब हम छोटे–छोटे बने बनाए फ्लैट या मकानों और बहुमंजिली इमारतों में रह रहे हैं, तो उपरोक्त व्यवस्था बनाए रखना न तो संभव है और न ही उसकी आवश्यकता है और यह प्रायोगिक भी नहीं है। इसलिए मैं आपको कमरों के लिये उचित दिशाएँ इस प्रकार प्रतिपादित कर रहा हूँ।

1. पूजा घर – ईशान में, संभव न हो तो पूर्व या उत्तर में बना सकते हैं। दक्षिण दिशा में और बैडरूम में पूजा घर नहीं बनाना चाहिये।

2. स्नान घर – पूर्व में श्रेष्ठ होता है।

3. रसोई घर (किचन) – आग्नेय कोण में श्रेष्ठ होती है परंतु संभव न हो तो पूर्व में भी बनाई जा सकती है और वायव्य दिशा में भी बना सकते हैं।

4. शयनकक्ष (बैडरूम) – घर के मुखिया का शयनकक्ष सदा दक्षिण में बनाया जाना चाहिये, संभव न हो तो उत्तर में बना सकते हैं। युवा दंपति का कमरा वायव्य और उत्तर दिशा के बीच में बनाया जाना चाहिये। बच्चों का कमरा वायव्य कोण में बनाया जाना चाहिए। विवाह योग्य कन्या का कमरा भी वायव्य में ही बनाना चाहिए। ईशान या आग्नेय कोण में शयन कक्ष कभी नहीं बनाने चाहियें। सोते समय सिर दक्षिण या पूर्व में रखना उत्तम होता है।

5. बैठक व भोजन कक्ष– आजकल ये संयुक्त (कामन) ही होते हैं। ये प्रवेशद्वार के समीप ही होते हैं। ड्राइंग रुम आग्नेय एवं दक्षिण के बीच, दक्षिण, पश्चिम, वायव्य एवं पश्चिम और वायव्य एवं उत्तर के बीच बनाया जा सकता है। भोजन करते हुए मुंह दक्षिण की ओर नहीं होना चाहिए।

6. शौचालय – पश्चिम व दक्षिण को शौचालय के लिये सबसे उपयुक्त स्थान माना गया है। पश्चिम व उत्तर में वायव्य के समीप भी शौचालय बनाया जा सकता है। शौचालय में सीट इस प्रकार लगानी चाहिये की प्रयोग के समय व्यक्ति का मुंह उत्तर या दक्षिण की ओर होना चाहिए।

7. कोषागार – घर में नगदी व बहुमूल्य आभूषण आदि रखने के लिए उत्तर दिशा को सबसे उचित माना गया है। यदि अलमारी रखनी हो तो दक्षिण की दीवार के साथ इस प्रकार रखें कि उसका मुंह उत्तर दिशा की ओर खुले।

8. भारी सामान व मशीन आदि को नैऋत्य में रखना चाहिए।

9. गर्भ तल (बेसमेन्ट) पूरे प्लाट पर न बनाकर उत्तर व पूर्व दिशा में बनाना चाहिए।

10. छत के ऊपर पानी की टंकियाँ, नैऋत्य, दक्षिण एवं पश्चिम में रखनी चाहियें। यह दक्षिण–पश्चिम, उत्तर–पूर्व की धुरी पर न रखी जायें। छत पर पानी का टैंक प्लेटफार्म बनाकर रखा जाये। दक्षिण–पश्चिम जोन में रखा ओवर हैड वाटर टैंक न तो टपकना चाहिये और न ही पानी बाहर बहना चाहिये। ओवर हैड वाटर टेंक इमारत के ब्रह्मस्थान या मध्य में कदापि नहीं होना चाहिए।

11. अंडर ग्राउंड पानी की टंकियाँ ईशान कोण में बनानी चाहिएँ।

12. भवन से जल व मल की निकासी वायव्य, उत्तर एवं पूर्व दिशा की ओर होनी चाहिए।

13. भूतल पर कुंआ, बोरिंग या पानी की टंकी या स्टोरेज उत्तर और ईशान अथवा पूर्व और ईशान के बीच बना सकते हैं।

18 मार्च से 31 मार्च सन् 2018

वसन्त ऋतु : चैत्र शुक्ल पक्ष सं. 2075 : सूर्य उत्तरायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
मार्च 18	रवि	नवसंवत्सरोत्सव, नवरात्र आरम्भ, गुड़ीपड़वा	प्रतिपदा	18.32	6.30	18.25
19	सोम	सिंधारा, झूलेलाल जयन्ती	द्वितीया	17.52	6.29	18.26
20	मंगल	भद्रा 28.9 से, मत्स्यावतार, गणगौर,	तृतीया	16.50	6.28	18.26
21	बुध	भद्रा 15.28 तक, दमनक चतुर्थी, पं. श्रीचन्द्रहंसजी पाठक तिरोभाव	चतुर्थी	15.28	6.27	18.27
22	गुरु	श्रीपंचमी, हयव्रत पंचमी	पंचमी	13.51	6.25	18.27
23	शुक्र	श्रीयमुना जयंती, स्कन्द षष्ठी	षष्ठी	12.2	6.24	18.28
24	शनि	भद्रा 10.5 से 21.4 तक	सप्तमी	10.5	6.23	18.28
25	रवि	मेला नरी सेमरी, रामनवमी व्रत, श्रीरामनवमी उत्सव	अष्टमी	8.2	6.22	18.29
0	0	नवमीक्षय	नवमी	29.54	0	0
26	सोम	धर्मराज दशमी, श्रीविष्णुदास बाबा तिरोभाव श्रीलअभिराम ठाकुर तिरोभाव	दशमी	27.42	6.21	18.29
27	मंगल	भद्रा 14.36 से 25.31 तक, कामदा एकादशी सायं बिहारीजी मन्दिर में फूलबंगला प्रारम्भ	एकादशी	25.31	6.20	18.30
28	बुध	हरिदमनोत्सव, श्रीपादमाधवेन्द्र पुरी एवं सिद्धबाबा जयकृष्णदास तिरोभाव	द्वादशी	23.23	6.19	18.30
29	गुरु	श्री महावीर जयन्ती, प्रदोष व्रत	त्रयोदशी	21.22	6.18	18.31
30	शुक्र	भद्रा 19.34 से, गुड फ्राईडे	चतुर्दशी	19.34	6.17	18.32
31	शनि	भद्रा 6.50 तक, चैत्री पूर्णिमा, हनुमान जयन्ती, वैशाख स्नान प्रा.,	पूर्णिमा	18.6	6.15	18.32

नवरात्रों में दुर्गा के नौ रूपों की उपासना का विधान है। ये नवदुर्गा हैं–

1. शैलपुत्री 2. ब्रह्मचारिणी 3. चन्द्रघण्टा 4. कूष्माण्डा 5. स्कन्दमाता 6. कात्यायनी 7. कालरात्रि 8. महागौरी 9. सिद्धिदात्री

कामदा एकादशी व्रत : 27 मार्च पारण : 28 मार्च को 9.42 तक	प्रदोष व्रत 29 मार्च	पंचक 19 मार्च पंचक समाप्त 20.08

1 अप्रैल से 16 अप्रैल सन् 2018

वसन्त ऋतु : वैशाख कृष्ण पक्ष : सम्वत् 2075 : सूर्य उत्तरायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
अप्रै. 1	रवि	–	प्रतिपदा	17.4	6.14	18.32
2	सोम	भद्रा 28.31 से	द्वितीया	16.35	6.13	18.32
3	मंगल	भद्रा 16.43 तक, चतुर्थी व्रत- चन्द्रोदय 21.27	तृतीया	16.43	6.12	18.33
4	बुध	–	चतुर्थी	17.32	6.11	18.33
5	गुरु	–	पंचमी	19.0	6.9	18.34
6	शुक्र	भद्रा 21.3 से	षष्ठी	21.3	6.8	18.34
7	शनि	भद्रा 10.15 तक	सप्तमी	23.29	6.7	18.35
8	रवि	शीतला माता पूजन, शीतलाष्टमी, बूढ़ा बासौड़ा, कालाष्टमी व्रत	अष्टमी	26.5	6.6	18.35
9	सोम	चण्डिका नवमी व्रत	नवमी	28.33	6.5	18.36
10	मंगल	भद्रा 17.37 से	दशमी	–	6.4	18.36
11	बुध	भद्रा 6.40 तक,	दशमी	6.40	6.3	18.37
12	गुरु	वरूथिनी एकादशी व्रत महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य प्राकट्य महोत्सव	एकादशी	8.12	6.2	18.37
13	शुक्र	प्रदोष व्रत	द्वादशी	9.4	6.1	18.38
14	शनि	भद्रा 9.11 से 20.54 तक, अम्बेडकर जन्म, वैशाखी	त्रयोदशी	9.11	6.0	18.38
15	रवि	–	चतुर्दशी	8.37	5.59	18.39
16	सोम	श्रीशुकदेव मुनि ज., श्रीगदाधर पंडित आ.	अमावस	7.26	5.58	18.40

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य जी के शिष्य	गुसाईं जी श्रीविट्ठलनाथ जी के शिष्य
1. सूरदास	5. नन्ददास
2. परमानन्द दास	6. गोविन्द स्वामी
3. कुम्भनदास	7. छीत स्वामी
4. कृष्णदास	8. चतुर्भुजदास

वरूथिनी एकादशी व्रत : 12 अप्रैल	प्रदोष व्रत	पंचक
पारण : 13 अप्रैल 7.20 तक	13 अप्रैल	11 अप्रै. 12.32 से 15 अप्रै. 28.04 तक

17 अप्रैल से 30 अप्रैल सन् 2018

वसन्त ऋतु : वैशाख शुक्ल पक्ष : सम्वत् 2075 : सूर्य उत्तरायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
0	0	प्रतिपदा क्षय	प्रतिपदा	29.46	0	0
अप्रै.17	मंगल	शिवाजी जन्मदिन	द्वितीया	27.44	5.57	18.41
18	बुध	अक्षय तृतीया, चरण दर्शन, श्रीपरशुराम अव.	तृतीया	25.29	5.56	18.41
19	गुरु	भद्रा 12.18 से 23.7 तक	चतुर्थी	23.7	5.55	18.41
20	शुक्र	आद्य श्रीशंकराचार्य 1230 वीं जयन्ती, श्रीसूरदास 540 वीं जयन्ती, ग्रीष्म ऋतु प्रा.	पंचमी	20.45	5.54	18.42
21	शनि	श्रीरामानुजाचार्य आविर्भाव	षष्ठी	18.27	5.53	18.42
22	रवि	भद्रा 16.16 से 27.16 तक, वसुन्धरा दिवस श्रीगंगा सप्तमी, गंगा मन्दिर वृन्दावन में	सप्तमी	16.16	5.52	18.43
23	सोम	श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीराधाकुण्ड महोत्सव, राधावल्लभ से 4 दिन चाव	अष्टमी	14.15	5.51	18.43
24	मंगल	सीता नवमी-जाह्नवा माता आवि. महोत्सव	नवमी	12.25	5.50	18.44
25	बुध	भद्रा 22.3 से	दशमी	10.46	5.49	18.45
26	गुरु	भद्रा 9.19 तक, मोहिनी एकादशी व्रत श्रीहित हरिवंश जन्मोत्सव	एकादशी	9.19	5.48	18.45
27	शुक्र	प्रदोष व्रत	द्वादशी	8.7	5.47	18.46
28	शनि	-	त्रयोदशी	7.11	5.46	18.47
29	रवि	भद्रा 6.37 से 18.32 तक, कूर्म अवतार श्रीनृसिंह जयन्ती	चतुर्दशी	6.37	5.46	18.47
30	सोम	बुद्धपूर्णिमा, वैशाख स्नान पूर्ण, श्रीराधारमण प्राकट्योत्सव 476 वां, श्रीनिवासाचार्यप्रभु आविर्भाव	पूर्णिमा	6.27	5.45	18.48

वृन्दावन में लगभग 476 वर्ष पूर्व पूज्य श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी जी के द्वारा श्रीशालग्राम शिला से ठाकुर श्रीराधारमणलाल जी प्रकट हुए। ठाकुर का मुख श्रीगोविन्द जैसा, वक्षस्थल श्रीगोपीनाथ जैसा और चरण श्रीमदनमोहन जैसे हैं।

मोहिनी एकादशी व्रत : 26 अप्रैल पारण : 27 अप्रैल 9.55 तक	प्रदोष व्रत 27 अप्रैल	अक्षय तृतीया को ठाकुर जी के सर्वांग में और चरणों में चन्दन समर्पित करें

1 मई से 15 मई सन् 2018

ग्रीष्म ऋतु : प्र. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष : स.2075 : सूर्य उत्तरायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
मई 1	मंगल	छठी उत्सव-श्रीराधावल्लभ जी मन्दिर	प्रतिपदा	6.47	5.45	18.48
2	बुध	भद्रा 20.22 से, देवर्षि नारद प्राकट्य वनविहार, वृन्दावन परिक्रमा	द्वितीया	7.39	5.44	18.49
3	गुरु	भद्रा 9.5 तक, चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय. 21.58	तृतीया	9.5	5.43	18.49
4	शुक्र	-	चतुर्थी	11.1	5.43	18.50
5	शनि	श्रीरायरामानन्द तिरोभाव, विश्व पर्यावरण दि. 403 वीं श्रीचैतन्यचरितामृत जयन्ती	पंचमी	13.21	5.42	18.50
6	रवि	भद्रा 15.55 से 29.11,	षष्ठी	15.55	5.41	18.51
7	सोम	कालाष्टमी व्रत, कवि टैगोर जन्म	सप्तमी	18.27	5.40	18.51
8	मंगल	-	अष्टमी	20.42	5.40	18.52
9	बुध	-	नवमी	22.26	5.39	18.52
10	गुरु	भद्रा 10.57 से 23.28, श्रीश्रीवास पंडित आ.	दशमी	23.28	5.39	18.53
11	शुक्र	अपरा एकादशी व्रत	एकादशी	23.41	5.38	18.54
12	शनि	-	द्वादशी	23.6	5.37	18.54
13	रवि	भद्रा 21.45 से	त्रयोदशी	21.45	5.36	18.55
14	सोम	भद्रा 8.45 तक, श्रीशशिमोहनदासबाबा तिरो.	चतुर्दशी	19.46	5.36	18.56
15	मंगल	शनि जयंती, वट सावित्री व्रत	अमावस	17.17	5.35	18.56

श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामी द्वारा रचित श्रीचैतन्य चरितामृत गौड़ीय सम्प्रदाय का एक महान् ग्रन्थ है। किसी विषय की कोई भी जिज्ञासा शेष नहीं रह जाती यदि इसका सम्यक् अध्ययन कर लिया जाय। लीला और सिद्धान्त का अनुपम ग्रन्थ सहज उपलब्ध है।

अपरा एकादशी व्रत : 11 मई पारण : 12 मई 9.23 तक	प्रदोष व्रत 13 मई	पंचक 8 मई 20.54 से 13 मई 13.30 तक

16 मई से 29 मई सन् 2018 अधिकमास

ग्रीष्म ऋतु : प्र. ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष : स. 2075 : सूर्य उत्तरायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
मई 16	बुध	पुरुषोत्तम (अधिक) मास आरम्भ	प्रतिपदा	14.27	5.35	18.57
17	गुरु	–	द्वितीया	11.27	5.34	18.57
18	शुक्र	भद्रा 18.55 से 29.27, जयगुरुदेव पुण्यतिथि	तृतीया	8.24	5.34	18.58
0	0	चतुर्थीक्षय	चतुर्थी	29.27	0	0
19	शनि	–	पंचमी	26.43	5.33	18.58
20	रवि	–	षष्ठी	24.17	5.33	18.59
21	सोम	भद्रा 22.12 से,	सप्तमी	22.12	5.32	18.59
22	मंगल	भद्रा 9.21 तक,	अष्टमी	20.30	5.32	19.0
23	बुध	–	नवमी	19.12	5.32	19.0
24	गुरु	–	दशमी	18.18	5.31	19.1
25	शुक्र	भद्रा 6.2 से 17.47 तक, कमला एकादशी	एकादशी	17.47	5.31	19.2
26	शनि	प्रदोष व्रत	द्वादशी	17.40	5.30	19.2
27	रवि	नेहरु पुण्य तिथि	त्रयोदशी	17.57	5.30	19.3
28	सोम	भद्रा 18.40 से, वीरसावरकर जन्मदिन	चतुर्दशी	18.40	5.29	19.3
29	मंगल	भद्रा 7.14 तक	पूर्णिमा	19.49	5.29	19.4

ऋतु परिवर्तन

20 अप्रैल से ग्रीष्म ऋतु	23 अक्टूबर से हेमन्त ऋतु
21 जून से वर्षा ऋतु	21 दिसम्बर से शिशिर ऋतु
23 अगस्त से शरद ऋतु	18 फरवरी से वसन्त ऋतु

कमला एकादशी व्रत : 25 मई पारण : 26 मई 9.22 तक	प्रदोष व्रत 26 मई	अधिक मास में अधिक भजन का संकल्प लें

अधिकमास 30 मई से 13 जून सन् 2018

ग्रीष्म ऋतु : द्वि. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष : स. 2075 : सूर्य उत्तरायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
मई 30	बुध	-	प्रतिपदा	21.24	5.29	19.4
31	गुरु	-	द्वितीया	23.24	5.29	19.5
जून 1	शुक्र	भद्रा 12.34 से 25.44 तक	तृतीया	25.44	5.29	19.5
2	शनि	चतुर्थीव्रत - चन्द्रोदय 22.17	चतुर्थी	28.17	5.29	19.6
3	रवि	-	पंचमी	0	5.29	19.6
4	सोम	पंचक प्रारम्भ	पंचमी	6.52	5.28	19.7
5	मंगल	भद्रा 9.16 से 22.16 तक	षष्ठी	9.16	5.28	19.7
6	बुध	-	सप्तमी	11.15	5.28	19.8
7	गुरु	-	अष्टमी	12.36	5.28	19.8
8	शुक्र	भद्रा 25.6 से	नवमी	13.13	5.28	19.8
9	शनि	भद्रा 12.58 तक,	दशमी	12.58	5.28	19.9
10	रवि	कामदा एकादशी व्रत	एकादशी	11.54	5.28	19.9
11	सोम	प्रदोष व्रत	द्वादशी	10.3	5.28	19.10
12	मंगल	भद्रा 7.33 से 18.3 तक,	त्रयोदशी	7.33	5.28	19.10
0	0	चतुर्दशीक्षय	चतुर्दशी	28.33	0	0
13	बुध	पुरुषोत्तम मास विश्राम	अमावस	25.12	5.28	19.10

अधिकमास को पुरुषोत्तम मास कहा जाता है। इसके प्रथम पक्ष की एकादशी का नाम 'कमला' है। इस व्रत के प्रभाव से लक्ष्मी सहज अनुकूल होती हैं। द्वितीय पक्ष की एकादशी का नाम 'कामदा' है। इसके व्रत से लोक परलोक में मनोवांछित फल मिलता है।

कामदा एकादशी व्रत : 10 जून पारण : 11 जून 9.04 तक	प्रदोष व्रत 11 जून	पंचक 4 जून 28.30 से 9 जून 23.09 तक

14 जून से 28 जून सन् 2018

ग्रीष्म ऋतु : द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष : स. 2075 सूर्य उत्तरायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
जून 14	गुरु	करवीर व्रत	प्रतिपदा	21.41	5.28	19.11
15	शुक्र	श्रीलाला बाबू तिरोभाव	द्वितीया	18.9	5.28	19.11
16	शनि	भद्रा 25.11 से, श्रीराधारमण निवास में उत्सव रम्भातीज, महाराणा प्रताप जन्मदिन	तृतीया	14.45	5.28	19.11
17	रवि	भद्रा 11.38 तक,	चतुर्थी	11.38	5.28	19.12
18	सोम	श्रुति पंचमी (जैन)	पंचमी	8.55	5.28	19.12
19	मंगल	भद्रा 28.58 से, स्कन्दषष्ठी, विंध्यवासिनी पूजा	षष्ठी	6.40	5.29	19.13
0	0	सप्तमीक्षय	सप्तमी	28.58	0	0
20	बुध	भद्रा 16.24 तक, श्रीदुर्गाष्टमी	अष्टमी	27.51	5.29	19.13
21	गुरु	वर्षा ऋतु प्रा., महेश नवमी, योग दिवस श्रीजगन्नाथदासबाबा ति. पूँछरी, रवि दक्षिणायणे	नवमी	27.18	5.29	19.13
22	शुक्र	गंगादशहरा, रामेश्वर प्रति.दि., श्रीजी की बड़ीकुंज में ठाकुरजी का पाटोत्सव एवं फूल बंगला, गंगा मन्दिर में फूल बंगला -प्रसाद वितरण, मेला हरिद्वार व यमुना उत्सव श्रीद्वारकाधीश	दशमी	27.19	5.29	19.13
23	शनि	भद्रा 15.35 से 27.52 तक, श्रीराधावल्लभजी पुष्पनौका व कुंज में विराजें श्रीगंगामाता गो. व श्रीबलदेवविद्याभूषण तिरो.	एकादशी	27.52	5.30	19.13
24	रवि	निर्जला एकादशी व्रत, मेला खादूश्यामजी	द्वादशी	28.54	5.30	19.14
25	सोम	प्रदोष व्रत	त्रयोदशी	0	5.30	19.14
26	मंगल	वट सावित्री व्रत प्रारम्भ, श्रीरघुनाथदास गोस्वामी दण्ड महो., राधाकुंड	त्रयोदशी	6.21	5.30	19.14
27	बुध	भद्रा 8.12 से 21.17 तक, पूर्णिमा व्रत	चतुर्दशी	8.12	5.31	19.14
28	गुरु	श्रीजगन्नाथ स्नानयात्रा, कबीर जन्म	पूर्णिमा	10.22	5.31	19.14

निर्जला एकादशी व्रत : 24 जून पारण : 25 जून 6.01 तक	प्रदोष व्रत 25 जून	राम-कृष्ण-वामन और नृसिंह केवल इन चारों की प्राकट्य तिथि जयन्ती है

29 जून से 13 जुलाई सन् 2018

वर्षा ऋतु : आषाढ़ कृष्ण पक्ष सं. 2075 : सूर्य दक्षिणायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
जून 29	शुक्र	श्रीश्यामानन्द प्रभु तिरोभाव महोत्सव गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती	प्रतिपदा	12.47	5.31	19.14
30	शनि	भद्रा 28.37 से,	द्वितीया	15.20	5.32	19.14
जुला 1	रवि	भद्रा 17.54 तक, गणेश चतुर्थी, चन्द्रो. 9.13 प्रभुपाद श्रीदेवकीनन्दन गो. तिरो. शृंगारवट	तृतीया	17.54	5.32	19.14
2	सोम	पंचक प्रारम्भ	चतुर्थी	20.20	5.32	19.14
3	मंगल	-	पंचमी	22.27	5.33	19.14
4	बुध	भद्रा 24.6 से, विवेकानन्द पुण्य तिथि	षष्ठी	24.6	5.33	19.14
5	गुरु	भद्रा 12.36 तक	सप्तमी	25.6	5.33	19.14
6	शुक्र	कालाष्टमी, श्रीमहाप्रभु आलालनाथ गमन पुरी	अष्टमी	25.22	5.34	19.14
7	शनि	पंचक समाप्त	नवमी	24.50	5.34	19.14
8	रवि	भद्रा 12.10 से 23.30 तक	दशमी	23.30	5.34	19.14
9	सोम	योगिनी एकादशी व्रत	एकादशी	21.26	5.35	19.13
10	मंगल	प्रदोष व्रत	द्वादशी	18.45	5.35	19.13
11	बुध	भद्रा 15.33 से 25.47 तक,	त्रयोदशी	15.33	5.36	19.13
12	गुरु	श्रीराघव की झाली समर्पण, पुरी	चतुर्दशी	12.1	5.36	19.13
13	शुक्र	गुण्डिचा मार्जन श्रीजगन्नाथ जी का नवयौवन दर्शन, नेत्रोत्सव, पुरी	अमावस	8.17	5.37	19.13

श्रीजगन्नाथ मन्दिर में स्नानयात्रा के पश्चात् ठाकुर के अंगराग हेतु 15 दिन के लिए दर्शन विश्राम रहता है। उस अवधि में श्रीजगन्नाथ भगवान् पुरी के पास आलालनाथ स्थित मन्दिर में विराजमान श्रीनारायण के रूप में आत्मप्रकटन करते हैं – ऐसी मान्यता है कि उनके दर्शन से जगन्नाथ भगवान् के दर्शनों का सुख मिलता है।

योगिनी एकादशी व्रत : 9 जुलाई पारण : 10 जुलाई 9.29 तक	प्रदोष व्रत 10 जुलाई	पंचक 2 जुलाई 11.05 से 7 जुलाई 7.39 तक

14 जुलाई से 27 जुलाई सन् 2018

वर्षा ऋतु : आषाढ़ शुक्ल पक्ष सं. 2075 : सूर्य दक्षिणायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
0	0	प्रतिपदाक्षय	प्रतिपदा	28.32	0	0
जुला.14	शनि	श्रीजगन्नाथ रथयात्रा, पुरी व वृन्दावन	द्वितीया	24.54	5.37	19.13
15	रवि	श्रीवल्लभाचार्य तिरोभाव	तृतीया	21.34	5.38	19.12
16	सोम	भद्रा 8.7 से 18.40 तक	चतुर्थी	18.40	5.38	19.12
17	मंगल	द्वारकाधीश पाटोत्सव	पंचमी	16.19	5.39	19.12
18	बुध	कौमारी षष्ठी, स्कन्द पूजा, श्रीवक्रेश्वर पंडित, सि.श्रीजगदीशबाबा तिरो. काली., होरा पंचमी	षष्ठी	14.36	5.39	19.11
19	गुरु	भद्रा 13.35 से 25.26 तक, सूर्य पूजा	सप्तमी	13.35	5.40	19.11
20	शुक्र	-	अष्टमी	13.18	5.40	19.11
21	शनि	भड्डली नवमी	नवमी	13.43	5.41	19.10
22	रवि	भद्रा 27.35 से, श्रीजगन्नाथजी की पुनर्यात्रा	दशमी	14.47	5.41	19.10
23	सोम	भद्रा 16.23 तक, चातुर्मास व्रत आ. देवशयनी एकादशी व्रत	एकादशी	16.23	5.42	19.9
24	मंगल		द्वादशी	18.25	5.42	19.9
25	बुध	प्रदोषव्रत	त्रयोदशी	20.45	5.43	19.8
26	गुरु	भद्रा 23.16 से, व्रत की पूर्णिमा	चतुर्दशी	23.16	5.43	19.8
27	शुक्र	भद्रा 12.33 तक, गुरुपूर्णिमा (मुड़िया पूनो) श्रील सनातन गोस्वामी का तिरो. दिवस व्यास-पूजन, निधिवन में फूलबंगला गजेन्द्र मोक्ष लीला-रंग मंदिर	पूर्णिमा	25.49	5.44	19.7

27 जुलाई : खग्रास चन्द्रग्रहण

ग्रहण स्पर्श : रात्रि 11.54 मोक्ष : अर्धरात्रि 03.49

27 की दोपहर 02.54 पर ठाकुर सेवा विश्राम। सूतक प्रारम्भ।

श्रीशयन एकादशी व्रत : 23 जुलाई पारण : 24 जुलाई 9.31 तक	प्रदोष व्रत 25 जुलाई	ग्रहण काल में संकीर्तन करें- श्रीकृष्ण गोविंद हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव

28 जुलाई से 11 अगस्त सन् 2018

वर्षा ऋतु : श्रावण कृष्ण पक्ष सं. 2075 : सूर्य दक्षिणायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
जु. 28	शनि	श्री प्रबोधानन्द सरस्वती तिरो., कालीदह	प्रतिपदा	28.20	5.44	19.7
29	रवि	हिंडोला आरम्भ, नाथद्वारा	द्वितीया	0	5.45	19.6
30	सोम	भद्रा 19.42 से, श्रावण का प्रथम सोमवार	द्वितीया	6.40	5.45	19.6
31	मंगल	भद्रा 8.43 तक, बहुला चतुर्थी, चन्द्रो. 21.30	तृतीया	8.43	5.46	19.5
अग. 1	बुध	–	चतुर्थी	10.22	5.47	19.4
2	गुरु	श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी तिरोभाव	पंचमी	11.32	5.47	19.4
3	शुक्र	भद्रा 12.7 से 24.6 तक	षष्ठी	12.7	5.48	19.3
4	शनि	कालाष्टमी	सप्तमी	12.4	5.48	19.3
5	रवि	श्री लोकनाथ गो. ति. उत्सव (गोकुलानन्द)	अष्टमी	11.20	5.49	19.2
6	सोम	भद्रा 20.54 से, श्रावण का द्वितीय सोमवार	नवमी	9.55	5.49	19.1
7	मंगल	भद्रा 7.52 तक,	दशमी	7.52	5.50	19.0
0	0	एकादशीक्षय	एकादशी	29.15	0	0
8	बुध	कामिका एकादशी व्रत	द्वादशी	26.10	5.50	19.0
9	गुरु	भद्रा 22.44 से, प्रदोष व्रत	त्रयोदशी	22.44	5.51	18.59
10	शुक्र	भद्रा 8.55 तक	चतुर्दशी	19.7	5.51	18.58
11	शनि	हरियालीमावस, बिहारीजी फूलबंगला विश्राम हरी पोशाक धारण – श्रीराधावल्लभजी स्वामी श्रीअखण्डानन्द आवि. दिवस	अमावस	15.27	5.52	18.57

दिनांक 27 मार्च से 11 अगस्त तक
ठाकुर श्रीबाँकेबिहारी जी महाराज; मन्दिर प्रांगण में विराजमान रहेंगे
और नित्यप्रति नये नये डिजायन में भव्य फूल बंगला बनेंगे।

कामिका एकादशी व्रत : 8 अगस्त	प्रदोष व्रत	पंचक
पारण : 9 अगस्त 9.33 तक	9 अगस्त	29 जुला. 17.04 से 3 अग. 14.24 तक

12 अगस्त से 26 अगस्त सन् 2018

वर्षा ऋतु : श्रावण शुक्ल पक्ष सं. 2075 : सूर्य दक्षिणायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
अग.12	रवि	नक्त व्रत आरंभ, सिंधारा दूज	प्रतिपदा	11.53	5.52	18.56
13	सोम	स्वामी करपात्री जन्म, श्रीसेवक जी जन्मो. श्रावण का तृतीय सोमवार	द्वितीया	8.36	5.53	18.56
0	0	तृतीयाक्षय	तृतीया	29.44	0	0
14	मंगल	भद्रा 16.35 से 27.27 तक, वरद चतुर्थी हरियाली तीज, झूला प्रारम्भ, श्रीबाँकेबिहारी जी स्वर्ण हिण्डोले में दर्शन,	चतुर्थी	27.27	5.53	18.55
15	बुध	नागपंचमी, अमरनाथ यात्रा प्रारम्भ, स्वतंत्रता दिवस, झूलन राधाकुंड	पंचमी	25.51	5.54	18.54
16	गुरु	श्रीकल्कि अवतार	षष्ठी	25.1	5.54	18.53
17	शुक्र	भद्रा 25.0 से, तुलसीदास जयन्ती	सप्तमी	25.0	5.55	18.52
18	शनि	भद्रा 13.23 तक, दुर्गाष्टमी,	अष्टमी	25.46	5.55	18.51
19	रवि	-	नवमी	27.14	5.56	18.50
20	सोम	श्रावण का चतुर्थ सोमवार	दशमी	29.16	5.56	18.49
21	मंगल	भद्रा 18.28 से	एकादशी	0	5.57	18.48
22	बुध	भद्रा 7.40 तक, पवित्रा एकादशी व्रत	एकादशी	7.40	5.57	18.47
23	गुरु	श्रीरूपगोस्वामी का तिरोभाव, शरद ऋतु प्रा.	द्वादशी	10.15	5.58	18.46
24	शुक्र	बसंती कमरा दर्शन-शाहजी मंदिर, श्रीगौरीदास पं. व सिद्धबाबा मनोहरदास तिरो.	त्रयोदशी	12.50	5.58	18.45
25	शनि	भद्रा 15.16 से 28.20, पं. गौरसुन्दर बाबा ति.	चतुर्दशी	15.16	5.59	18.44
26	रवि	रक्षाबन्धन (राखी) 1.51 तक, झूलाविश्राम लव-कुश जन्म, गायत्री प्रारम्भ, हयग्रीव अ.	पूर्णिमा	17.25	5.59	18.43

पवित्रा एकादशी व्रत :22 अगस्त पारण : 23 अगस्त 9.23 तक	प्रदोष व्रत 23 अगस्त	पंचक 25 अग. 23.12 से 30 अग. 20.00 तक

27 अगस्त से 9 सितम्बर 2018

शरद ऋतु : भाद्रपद कृष्ण पक्ष सं. 2075 : सूर्य दक्षिणायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
अग.27	सोम	-	प्रतिपदा	19.14	6.0	18.42
28	मंगल	-	द्वितीया	20.39	6.0	18.41
29	बुध	भद्रा 9.9 से 21.38 तक, कज्जली तृतीया	तृतीया	21.38	6.1	18.40
30	गुरु	बहुला चतुर्थी, चन्द्रो. 21.16 श्रीविश्वम्भरदासबाबा तिरोभाव, पूँछरी	चतुर्थी	22.9	6.1	18.39
31	शुक्र	सूर्य षष्ठी, हलधर षष्ठी	पंचमी	22.11	6.2	18.38
सित. 1	शनि	भद्रा 21.44 से,	षष्ठी	21.44	6.2	18.37
2	रवि	भद्रा 9.15 तक,	सप्तमी	20.46	6.2	18.36
3	सोम	5244 श्रीकृष्णजन्माष्टमी, मध्यरात्रि अभि. (प्रातः 10 बजे श्रीराधारमण मंदिर में अभिषेक) संत ज्ञानेश्वर प्रादुर्भाव	अष्टमी	19.19	6.3	18.35
4	मंगल	भद्रा 28.12 से, गोगानवमी, नन्दोत्सव, दधिकांदा नन्दगाँव, लट्ठा का मेला, रंगजी	नवमी	17.23	6.3	18.33
5	बुध	भद्रा 15.0 तक, शिक्षक दिवस	दशमी	15.0	6.4	18.32
6	गुरु	अजा एकादशी व्रत	एकादशी	12.15	6.4	18.31
7	शुक्र	भद्रा 29.58 से, प्रदोष व्रत, बछ बारस श्रीगदाधर भट्ट गोस्वामी तिरोभाव	द्वादशी	9.12	6.5	18.30
0	0	त्रयोदशीक्षय	त्रयोदशी	29.58	0	0
8	शनि	भद्रा 16.19 तक, अघोरा चौदस, श्रीकृष्ण छटी	चतुर्दशी	26.41	6.5	18.29
9	रवि	कुशोत्पाटिनी अमावस	अमावस	23.31	6.6	18.28

श्रीबिहारीजी मन्दिर में पूरे वर्ष में केवल एकबार होता है यह-

★ जन्माष्टमी वाले दिवस रात्रि 12 बजे महाभिषेक और 3 बजे मंगला आरती ★ राधाष्टमी वाले दिन मन्दिर में रासलीला ★ शरदपूर्णिमा के दिन मोर-मुकुट, कटि-काछनी, वंशी और छड़ी धारण ★ हरियाली तीज वाले दिन स्वर्णजटित झूला में विराजमान ★ अक्षय तीज वाले दिन चरण दर्शन

अजा एकादशी व्रत : 6 सितम्बर	प्रदोष व्रत	पंचक
पारण : 7 सितम्बर 6.40 तक	7 सितम्बर	25 अग. 23.12 से 30 अग. 20.00 तक

10 सितम्बर से 25 सितम्बर सन् 2018

शरद ऋतु : भाद्रपद शुक्ल पक्ष सं. 2075 : सूर्य दक्षिणायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
सित.10	सोम	नक्त व्रत पूर्ण, नन्दकिशोर बाबा तिरो. कालीदह	प्रतिपदा	20.35	6.6	18.27
11	मंगल	श्रीहरिदास जी का बधाई उत्सव	द्वितीया	18.4	6.7	18.26
12	बुध	भद्रा 27.29 से, गौरी तृतीया, हरितालिका तीज, वराह अवतार	तृतीया	16.7	6.7	18.24
13	गुरु	भद्रा 14.51 तक, श्रीगणेशचौथ (पत्थर चौथ)	चतुर्थी	14.51	6.8	18.23
14	शुक्र	ऋषि पंचमी, राधावल्लभजी से 4 दिन चाव हिन्दी दिवस	पंचमी	14.23	6.8	18.22
15	शनि	सूर्य षष्ठी, बलराम छठ जन्मोत्सव	षष्ठी	14.44	6.8	18.21
16	रवि	भद्रा 15.53 से 28.48 तक, ललिता(संतान), सप्तमी (दुबड़ी सातें)	सप्तमी	15.53	6.9	18.20
17	सोम	श्रीराधाष्टमी उत्सव व्रत, विशाल शोभायात्रा स्वामी हरिदास आविर्भाव, विश्वकर्मा पूजा	अष्टमी	17.44	6.9	18.19
18	मंगल	श्रीचन्द्र नवमी, 5099 श्रीमद्भागवत जयंती	नवमी	20.3	6.10	18.18
19	बुध	–	दशमी	22.39	6.10	18.16
20	गुरु	भद्रा 11.57 से 25.16 तक	एकादशी	25.16	6.10	18.15
21	शुक्र	श्रीवामन जयंती, पद्मा एकादशी प्रियाजी का छठी उत्सव	द्वादशी	27.40	6.11	18.14
22	शनि	प्रदोष व्रत	त्रयोदशी	29.43	6.11	18.13
23	रवि	भद्रा 7.17 से 19.49 तक, अनन्त चतुर्दशी, श्रीगणेश विसर्जन, नामाचार्यश्रील हरिदास एवं कविकर्णपूर तिरोभाव	चतुर्दशी	0	6.12	18.12
24	सोम	पूर्णिमा श्राद्ध	चतुर्दशी	7.17	6.12	18.11
25	मंगल	प्रतिपदा का श्राद्ध, साँझी श्रीराधावल्लभजी, श्रीराधारमणजी एवं श्रीभट्टजी मंदिर प्रारंभ	पूर्णिमा	8.22	6.13	18.10

श्रीमद्भागवत भगवान् श्रीकृष्ण का ग्रन्थमय विग्रह है।

पद्मा एकादशी व्रत : 21 सितम्बर	प्रदोष व्रत	पंचक
पारण : 22 सितम्बर 9.30 तक	22 सितम्बर	21 सित. 30.07 से 26 सित. 25.54 तक

श्राद्ध पक्ष 26 सित. से 9 अक्टू. सन् 2018

शरद ऋतु : आश्विन कृष्ण पक्ष सं.2075 : सूर्य दक्षिणायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
सित.26	बुध	द्वितीया का श्राद्ध, पंचक समाप्त 25.54	प्रतिपदा	8.56	6.13	18.8
27	गुरु	भद्रा 20.53 से, तृतीया का श्राद्ध	द्वितीया	9.2	6.13	18.7
28	शुक्र	भद्रा 8.44 तक, चतुर्थी का श्राद्ध, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 09.42	तृतीया	8.44	6.14	18.6
29	शनि	पंचमी का श्राद्ध, भागवतनिवास में सिद्ध श्रीरामकृष्णदास पंडित बाबा तिरोभाव	चतुर्थी	8.3	6.14	18.5
30	रवि	भद्रा 29.44 से, षष्ठी का श्राद्ध	पंचमी	7.3	6.15	18.4
0	0	षष्ठीक्षय	षष्ठी	29.44	0	0
अक्टू. 1	सोम	भद्रा 16.57 तक, सप्तमी का श्राद्ध	सप्तमी	28.9	6.15	18.3
2	मंगल	अष्टमी का श्राद्ध, जीवित्पुत्रिका, कालाष्टमी गाँधी-शास्त्री जन्मदिन	अष्टमी	26.17	6.16	18.2
3	बुध	नवमी का श्राद्ध, मातृ नवमी,	नवमी	24.9	6.16	18.1
4	गुरु	भद्रा 10.59 से 21.48 तक, दशमी का श्राद्ध	दशमी	21.48	6.17	17.59
5	शुक्र	इन्दिरा एकादशी व्रत, श्रीरामबरात, आगरा	एकादशी	19.17	6.17	17.58
6	शनि	एकादशी व द्वादशी का श्राद्ध	द्वादशी	16.40	6.18	17.57
7	रवि	भद्रा 14.2 से 24.47 तक, त्रयोदशी का श्राद्ध	त्रयोदशी	14.2	6.18	17.56
8	सोम	चतुर्दशी का श्राद्ध 10.47 तक उसके बाद अमावस्या का श्राद्ध	चतुर्दशी	11.31	6.19	17.55
9	मंगल	पितृविसर्जनी, मातामह श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त	अमावस	9.16	6.19	17.54

श्राद्धपक्ष में पितरों के निमित्त चकाचक भोजन कराने के साथ-साथ यह और भी प्रासंगिक है कि जीते जी अपने बुजुर्गों को अच्छा भोजन और अच्छे रहन-सहन की सुविधा प्रदान की जाये !

इन्दिरा एकादशी व्रत : 5 अक्टूबर पारण : 6 अक्टूबर 9.28 तक	प्रदोष व्रत 6 अक्टूबर	श्रीलक्ष्मी पूजन समय - पृष्ठ 21 देखें प्रदोष काल - 17.38 से 20.14

10 अक्टूबर से 24 अक्टूबर सन् 2018

शरद ऋतु : आश्विन शुक्ल पक्ष सं. 2075 : सूर्य दक्षिणायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
अक्टू.10	बुध	शारदीय नवरात्र प्रारंभ, कलश स्थापन 5142 वीं महाराज अग्रसेन जयन्ती	प्रतिपदा	7.25	6.20	17.53
0	0	द्वितीयाक्षय	द्वितीया	30.6	0	0
11	गुरु	–	तृतीया	29.28	6.20	17.52
12	शुक्र	भद्रा 17.31 से 29.34,	चतुर्थी	29.34	6.21	17.51
13	शनि	ललितापंचमी, श्रील सिद्धकृष्णदास बाबा तिरो.	पंचमी	0	6.21	17.50
14	रवि	श्रीविनोदबिहारीदासबाबा तिरोभाव	पंचमी	6.27	6.22	17.49
15	सोम	सरस्वती आवाहन	षष्ठी	8.4	6.23	17.48
16	मंगल	भद्रा 10.16 से 23.33 तक,	सप्तमी	10.16	6.23	17.47
17	बुध	महाष्टमी	अष्टमी	12.49	6.24	17.46
18	गुरु	महानवमी, शस्त्र पूजन	नवमी	15.28	6.24	17.45
19	शुक्र	विजयादशमी-रावण दहन, दशहरा मेला श्रीमध्वाचार्य आविर्भाव	दशमी	17.57	6.25	17.44
20	शनि	भद्रा 6.58 से 20.00 तक, पापांकुशा एकादशी व्रत, नियमसेवा प्रारंभ	एकादशी	20.0	6.25	17.43
21	रवि	श्रीरघुनाथ भट्ट, श्रीरघुनाथदास गोस्वामी व श्रीकृष्णदास कविराज तिरो. महोत्सव	द्वादशी	21.30	6.26	17.42
22	सोम	प्रदोष व्रत	त्रयोदशी	22.22	6.26	17.41
23	मंगल	भद्रा 22.36 से, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ	चतुर्दशी	22.36	6.27	17.40
24	बुध	भद्रा 10.25 तक, श्रीवाल्मीकि आविर्भाव, श्रीबिहारीजी मोर-मुकुट, कटि-काछनी धारण शरद पूर्णिमा, कार्तिक स्नान प्रारम्भ	पूर्णिमा	22.14	6.27	17.40

कार्तिक नियम सेवा में अनेक वैष्णव श्रीराधादामोदर मन्दिर की 4 परिक्रमा नियम से लगाते हैं। मंदिर में विराजमान गिरिराज शिला की 4 परिक्रमा से गोवर्धन की 1 परिक्रमा का फल मिलता है।

पापांकुशा एकादशी व्रत : 20 अक्टूबर पारण : 21 अक्टूबर 9.28 तक	प्रदोष व्रत 22 अक्टूबर	पंचक 19 अक्टूबर 13.58 से 24 अक्टू. 9.22 तक

25 अक्टूबर से 7 नवम्बर सन् 2018

हेमन्त ऋतु : कार्तिक कृष्ण पक्ष सं. 2075 : सूर्य दक्षिणायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
अक्टू.25	गुरु	पवित्र दामोदर (कार्तिक) मास आरम्भ	प्रतिपदा	21.23	6.28	17.39
26	शुक्र	–	द्वितीया	20.9	6.29	17.38
27	शनि	भद्रा 7.23 से 18.37 तक, करवा चौथ व्रत – चन्द्रोदय 19.58	तृतीया	18.37	6.30	17.37
28	रवि	–	चतुर्थी	16.54	6.30	17.36
29	सोम	श्रील नरोत्तमदास ठाकुर तिरोभाव	पंचमी	15.3	6.31	17.35
30	मंगल	भद्रा 13.7 से 24.8 तक	षष्ठी	13.7	6.32	17.34
31	बुध	अहोई अष्टमी राधाकुण्ड-स्नान रात्रि 12 बजे सरदार पटेल जन्म	सप्तमी	11.9	6.33	17.33
नव. 1	गुरु	–	अष्टमी	9.9	6.33	17.32
2	शुक्र	भद्रा 18.10 से 29.10 तक	नवमी	7.9	6.34	17.32
0	0	दशमीक्षय	दशमी	29.10	0	0
3	शनि	–	एकादशी	27.13	6.35	17.31
4	रवि	गोवत्स द्वादशी, रमा (रम्भा) एकादशी व्रत	द्वादशी	25.24	6.36	17.30
5	सोम	भद्रा 23.46 से, प्रदोष व्रत, महावाणीकार श्रीहरिव्यास देवाचार्य पाटोत्सव धनतेरस, श्रीधन्वन्तरि जयन्ती	त्रयोदशी	23.46	6.36	17.30
6	मंगल	भद्रा 11.06 तक, छोटी दीपावली	चतुर्दशी	22.26	6.37	17.29
7	बुध	दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, श्रीजी चौपड़खेलें	अमावस	21.31	6.38	17.29

श्रीराधाकुण्ड श्रीराधा का जलमय अवतार है जो स्वयं उन्हीं के द्वारा प्रकटित है। अहोई अष्टमी वाले दिन रात्रि 12 बजे श्रीराधाकुण्ड में स्नान करने और शुद्ध मन से श्रीराधाकृपा कटाक्ष का पाठ करने से भक्ति की प्राप्ति होती है। और निःसन्तान दम्पत्तियों को पुत्र या मनवांछित सन्तान सुख की प्राप्ति भी होती है।

श्री रमा एकादशी व्रत : 4 नवम्बर पारण : 5 नवम्बर 9.30 तक	प्रदोष व्रत 5 नवम्बर	व्रत का लक्ष्य भोजन कम और भजन अधिक

8 नवम्बर से 23 नवम्बर सन् 2018

हेमन्त ऋतु : कार्तिक शुक्ल पक्ष सं. 2075 : सूर्य दक्षिणायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
नव. 8	गुरु	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, ठा. श्रीवृन्दावनदास तिरोभाव महोत्सव	प्रतिपदा	21.7	6.38	17.28
9	शुक्र	भैया दूज-टीका, यमद्वितीया-स्नान (मथुरा) सिद्ध श्रीबलरामदास बाबा ति. झाड़ूमण्डल	द्वितीया	21.19	6.39	17.28
10	शनि		तृतीया	22.12	6.39	17.27
11	रवि	भद्रा 10.58 से 23.44 तक	चतुर्थी	23.44	6.40	17.27
12	सोम	सौभाग्य पंचमी, अन्नकूट - रंग मंदिर	पंचमी	25.50	6.41	17.26
13	मंगल	सूर्य षष्ठी (डाला छट बिहार)	षष्ठी	28.22	6.42	17.26
14	बुध	बाल दिवस, नेहरु जन्म	सप्तमी	0	6.42	17.25
15	गुरु	भद्रा 7.3 से 20.21 तक, गोपाष्टमी, श्रीजी नटवरभेष, श्रीनिवासाचार्यप्रभु, श्रीधनंजय पंडित, व्रजविभूति श्रीश्यामदास तिरो.	सप्तमी	7.3	6.43	17.24
16	शुक्र	-	अष्टमी	9.40	6.44	17.24
17	शनि	अक्षयनवमी व्रत, आँवला नवमी पूजा तीन वन परिक्रमा, श्रीहंस भगवान एवं सनकादि सर्वेश्वर प्रभु का प्राकट्योत्सव सत्ययुगादि तिथि, श्रीगोपाल गुरु तिरोभाव	नवमी	11.54	6.45	17.23
18	रवि	भद्रा 26.1 से, कंसवध लीला (मथुरा)	दशमी	13.33	6.46	17.23
19	सोम	भद्रा 14.29 तक, देवउठान एकादशी, तुलसी शालिग्राम विवाहोत्सव, नियम सेवा व चातुर्मास्य समाप्त	एकादशी	14.29	6.47	17.23
20	मंगल	प्रदोषव्रत	द्वादशी	14.40	6.47	17.22
21	बुध	श्रीराधावल्लभ जी पाटो. एवं वृन्दावन प्राकट्य वैकुण्ठ चतुर्दशी, श्रीकिशोरीदासबाबा ति. काली.	त्रयोदशी	14.6	6.48	17.22
22	गुरु	भद्रा 12.53 से 24.10 तक	चतुर्दशी	12.53	6.49	17.22
23	शुक्र	श्रीगुरुनानक ज.,श्रीचैतन्य महाप्रभु का वृ. आ. श्रीनिम्बार्काचार्य ज., कार्तिक स्नान पूर्ण	रास पूर्णिमा	11.8	6.50	17.22

देवोत्थान एकादशी व्रत : 19 नवम्बर	प्रदोष व्रत	पंचक
पारण : 20 नवम्बर 9.35 तक	20 नवम्बर	15 नवम्बर 22.14 से 20 नवम्बर 18.33

24 नवम्बर से 7 दिसम्बर सन् 2018

हेमन्त ऋतु : मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सं. 2075 : सूर्य दक्षिणायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
नव.24	शनि	–	प्रतिपदा	9.0	6.50	17.21
0	0	द्वितीया क्षय	द्वितीया	30.37	0	0
25	रवि	भद्रा 17.22 से 28.6 तक,	तृतीया	28.6	6.51	17.21
26	सोम	चतुर्थी व्रत – चन्द्रोदय 20.37	चतुर्थी	25.34	6.52	17.21
27	मंगल	श्री कृष्णदास बाबा तिरो. (कुसुम सरोवर)	पंचमी	23.8	6.53	17.21
28	बुध	भद्रा 20.51 से, सिद्ध प्राणकृष्णदासबाबा तिरो.	षष्ठी	20.51	6.53	17.21
29	गुरु	भद्रा 7.49 तक, महाकाल भैरव अष्टमी	सप्तमी	18.45	6.54	17.21
30	शुक्र	–	अष्टमी	16.54	6.55	17.21
दिस. 1	शनि	भद्रा 26.40 से	नवमी	15.19	6.56	17.21
2	रवि	भद्रा 14.0 तक	दशमी	14.0	6.56	17.21
3	सोम	उत्पन्ना एकादशी व्रत	एकादशी	12.59	6.57	17.21
4	मंगल	प्रदोष व्रत, श्री नरहरि सरकार ठाकुर तिरो.	द्वादशी	12.19	6.58	17.21
5	बुध	भद्रा 12.2 से 24.7 तक	त्रयोदशी	12.2	6.59	17.21
6	गुरु	श्रीपाद रामदास बाबा तिरो. (पाठबाड़ी) श्री बालाजी जयंती, शौर्य दिवस	चतुर्दशी	12.11	6.59	17.21
7	शुक्र	श्रीवैष्णवचरणदास बाबा तिरो. (गोविन्दकुण्ड)	अमावस	12.50	7.0	17.21

'वन्दे मातरम्'। धर्म और अध्यात्म भारत के मूल प्राण हैं। जिसप्रकार प्राण के बिना शरीर निर्जीव है उसी प्रकार धर्म, अध्यात्म, आस्था और भक्ति के बिना यह देश अस्तित्व हीन हो जायेगा। भारत सम्पूर्ण विश्व का गुरु रहा है। इसे बनाये रखना होगा। विश्व को ज्ञान-वैराग्य और भक्ति के पथ पर लगाने वाला यह देश सभी को सत्य पथ का अनुगामी बनाने वाला देश रहा है। भारत माता की जय।

उत्पन्ना एकादशी व्रत : 3 दिसम्बर पारण : 4 दिसम्बर 9.41 तक	प्रदोष व्रत 4 दिसम्बर	सन्तों के जन्म और मृत्यु को आविर्भाव और तिरोभाव कहा जाता है

8 दिसम्बर से 22 दिसम्बर सन् 2018

हेमन्त ऋतु : मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष सं. 2075 : सूर्य दक्षिणायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
दिस. 8	शनि	–	प्रतिपदा	13.59	7.1	17.21
9	रवि	–	द्वितीया	15.40	7.2	17.21
10	सोम	–	तृतीया	17.49	7.2	17.21
11	मंगल	भद्रा 7.5 से 20.21 तक, विनायक चतुर्थी श्रीवीरचन्द्र प्रभुपाद आवि. महोत्सव	चतुर्थी	20.21	7.3	17.22
12	बुध	विहार पंचमी–श्रीबांकेबिहारीजी प्राकट्योत्सव श्रीसीताराम विवाहोत्सव	पंचमी	23.5	7.3	17.22
13	गुरु	स्कन्द षष्ठी	षष्ठी	25.48	7.4	17.22
14	शुक्र	भद्रा 28.15 से,	सप्तमी	28.15	7.5	17.22
15	शनि	भद्रा 17.14 तक, पटेल पुण्य तिथि, सिद्ध श्रीमधुसूदनदास बाबा महो.(सूर्यकुण्ड)	अष्टमी	30.12	7.6	17.23
16	रवि	नन्दिनी नवमी	नवमी	0	7.6	17.23
17	सोम	पंचक समाप्त	नवमी	7.28	7.7	17.24
18	मंगल	भद्रा 19.46 से, 5120वीं श्रीमद्भगवद्गीता ज. वैकुण्ठ उत्सव प्रारम्भ रंगजी मन्दिर, श्रीकुंजबिहारीदास बाबाजी तिरो., राधाकुण्ड	दशमी	7.56	7.8	17.24
19	बुध	भद्रा 7.35, मोक्षदा एकादशी, व्यंजन द्वादशी	एकादशी	7.35	7.8	17.24
0	0	द्वादशीक्षय	द्वादशी	30.25	0	0
20	गुरु	प्रदोष व्रत, रवि उत्तरायणे, खिचड़ीभोग प्रारंभ, श्रीगौरांगदास बाबा तिरो., राधारमण निवास	त्रयोदशी	28.34	7.9	17.25
21	शुक्र	भद्रा 26.9 से, शिशिर ऋतु प्रारम्भ	चतुर्दशी	26.9	7.9	17.25
22	शनि	भद्रा 12.44 तक, सत्य व्रत पूर्णिमा	पूर्णिमा	23.18	7.10	17.26

गरुड़जी श्रीनारायण भगवान् का वाहन हैं किन्तु छटीकरा स्थित गरुड़गोविन्द मन्दिर में गरुड़ जी पर गोविन्द अर्थात् भगवान् श्रीकृष्ण विराजमान होकर भक्तों को आनन्द प्रदान कर रहे हैं। खेल-खेल में एकबार बलदेव गरुड़ बने और गोविन्द उनके ऊपर बैठ गये तब गरुड़ गोविन्द की अनुपम छवि बनी। मनौतियों को पूर्ण करने वाला यह मंदिर दर्शनीय है।

मोक्षदा एकादशी व्रत : 19 दिसम्बर	प्रदोष व्रत	पंचक
पारण : 20 दिसम्बर 9.49 तक	20 दिसम्बर	12 दिस. 30.10 से 17 दिस. 28.16

23 दिस. 2018 से 5 जनवरी सन् 2019

शिशिर ऋतु : पौष कृष्ण पक्ष सं. 2075 : सूर्य उत्तरायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
23	रवि	–	प्रतिपदा	20.11	7.10	17.26
24	सोम	भद्रा 27.22 से, श्रीगौरशिरोमणि तिरो. केशी.	द्वितीया	16.58	7.11	17.27
25	मंगल	भद्रा 13.47 तक, क्रिसमस डे, गणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय 08.12	तृतीया	13.47	7.11	17.27
26	बुध	श्रीगौरगोपालदास बाबा तिरो. राधाकुण्ड	चतुर्थी	10.46	7.12	17.29
27	गुरु	भद्रा 29.42 से, मेला बेलवन प्रति गुरुवार (चार गुरुवार) श्रीराधाविनोद गो. व श्रीराधामोहनदास तिरो.	पंचमी	8.2	7.12	17.29
0	0	षष्ठीक्षय	षष्ठी	29.42	0	0
28	शुक्र	भद्रा 16.46 तक,	सप्तमी	27.49	7.13	17.30
29	शनि	कालाष्टमी	अष्टमी	26.26	7.13	17.30
30	रवि	श्रीफलाहारीबाबा ति. राधाकुण्ड	नवमी	25.35	7.13	17.31
31	सोम	भद्रा 13.25 से 25.16 तक	दशमी	25.16	7.13	17.31
जन. 1	मंगल	सफला एकादशी व्रत	एकादशी	25.28	7.13	17.32
2	बुध	–	द्वादशी	26.10	7.14	17.33
3	गुरु	भद्रा 27.20 से, प्रदोष व्रत	त्रयोदशी	27.20	7.14	17.33
4	शुक्र	भद्रा 16.8 तक, श्रीउद्धारणदत्त ठाकुर तिरोभाव	चतुर्दशी	28.57	7.14	17.34
5	शनि	सिद्ध श्रीकृष्णदास बाबा तिरोभाव, रनबारी	अमावस	30.57	7.14	17.34

बेलवन का मेला : रासबिहारी भगवान् की महारासलीला में प्रवेश पाने के लिए श्रीलक्ष्मी महारानी ब्रज में पधारी थीं। किन्तु ब्रजगोपियों के अलावा उस रास में किसी का प्रवेश नहीं था। अतः यमुना के उस पार बेलवन ग्राम में श्रीलक्ष्मी जी तप करने बैठीं जिससे उन्हें बिना गोपियों के आनुगत्य के रास में प्रवेश मिले। कहते हैं बेल के वृक्षों से आच्छादित उस वन में श्रीलक्ष्मी जी आज तक तपस्या कर रही हैं। प्रतिवर्ष पौष मास के गुरुवारों को मन्दिर में मेला लगता है। मन्दिर में लक्ष्मी महारानी का विशाल विग्रह दर्शनीय है। मेला के समय अनेक लोगों द्वारा खिचड़ी भोग वितरित होता है।

सफला एकादशी व्रत : 1 जनवरी पारण : 2 जनवरी 9.47 तक	प्रदोष व्रत 3 जनवरी	रमणरेती, वृन्दावन स्थित श्रीराधारमण निवास 'बड़ेबाबा' की परंपरा में एक सिद्ध स्थल है

6 जनवरी से 21 जनवरी सन् 2019

शिशिर ऋतु : पौष शुक्ल पक्ष सं. 2075 : सूर्य उत्तरायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
6	रवि	-	प्रतिपदा	0	7.15	17.35
7	सोम	-	प्रतिपदा	9.18	7.15	17.36
8	मंगल	श्रीराधामोहनदास बाबा तिरो. पूँछरी, खिचड़ी उत्सव प्रारंभ-राधावल्लभ-एक मास	द्वितीया	11.53	7.15	17.37
9	बुध	भद्रा 28.0 से, पंचक प्रा., प्रवासी भारतीय दि. श्रीजीवगोस्वामी तिरो. महोत्सव	तृतीया	14.38	7.15	17.38
10	गुरु	भद्रा 17.21 तक	चतुर्थी	17.21	7.15	17.39
11	शुक्र	छप्पन भोग गरुड़ गोविन्द	पंचमी	19.54	7.15	17.39
12	शनि	156 वाँ स्वामी विवेकानन्द जन्म	षष्ठी	22.4	7.15	17.40
13	रवि	भद्रा 23.41 से, नन्दबाबा प्राकट्य, लोहड़ी	सप्तमी	23.41	7.15	17.41
14	सोम	भद्रा 12.09 तक, मकर संक्रान्ति	अष्टमी	24.37	7.15	17.41
15	मंगल	वाया बाबा आश्रम में उत्सव	नवमी	24.44	7.15	17.42
16	बुध	श्रीकृपासिन्धुदास बाबा तिरोभाव	दशमी	24.3	7.15	17.43
17	गुरु	भद्रा 11.18 से 22.34 तक, पुत्रदा एकादशी	एकादशी	22.34	7.14	17.44
18	शुक्र	सिद्ध श्रीकृष्णदास कर्ता बाबा तिरोभाव	द्वादशी	20.22	7.14	17.45
19	शनि	प्रदोष व्रत	त्रयोदशी	17.34	7.14	17.46
20	रवि	भद्रा 14.18 से 24.32 तक, व्रत की पूर्णिमा	चतुर्दशी	14.18	7.14	17.46
21	सोम	पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ, श्रीराधावल्लभ युगल रूप में दर्शन	पूर्णिमा	10.45	7.14	17.47

श्रीरूप एवं श्रीसनातन गोस्वामीपाद के सगे भतीजे हैं-
श्रीजीवगोस्वामी। ये अति कुशाग्र बुद्धि, परिश्रमी एवं अति सूक्ष्म चिन्तक हैं।
अनेकानेक अमूल्य ग्रन्थों के साथ-साथ
इन्होंने एक स्वतन्त्र व्याकरण-ग्रन्थ की रचना की है।

पुत्रदा एकादशी व्रत : 17 जनवरी पारण : 18 जनवरी 10.01 तक	प्रदोष व्रत 19 जनवरी	पंचक 9 जनवरी 13.14 से 14 जनवरी 12.51

22 जनवरी से 4 फरवरी सन् 2019

शिशिर ऋतु : माघ कृष्ण पक्ष सं. 2075 : सूर्य उत्तरायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
0	0	प्रतिपदा क्षय	प्रतिपदा	31.4	0	0
जन.22	मंगल	युगलदर्शन श्रीराधावल्लभ जी, श्रीगौरगोविन्ददास बाबा तिरोभाव, पूँछरी	द्वितीया	27.25	7.13	17.48
23	बुध	भद्रा 13.41 से 23.58, नेताजी सुभाषचन्द्र ज.	तृतीया	23.58	7.13	17.49
24	गुरु	सकट चौथ, चन्द्रोदय 21.32	चतुर्थी	20.53	7.12	17.50
25	शुक्र	श्रीअद्वैतदास बाबा तिरोभाव, राधाकुंड	पंचमी	18.17	7.12	17.51
26	शनि	भद्रा 16.19 से 27.40, 70 वां गणतन्त्र दि., म. श्रीदीनबन्धुदासबाबा ति. राधारमणनिवास	षष्ठी	16.19	7.11	17.51
27	रवि	कालाष्टमी व्रत, श्रीरामानन्दाचार्य आविर्भाव श्रीदामोदरदास बाबा तिरो. गोविन्दकुण्ड	सप्तमी	15.1	7.11	17.52
28	सोम	लाला लाजपतराय जन्म	अष्टमी	14.29	7.11	17.53
29	मंगल	भद्रा 27.7 से,	नवमी	14.40	7.11	17.54
30	बुध	भद्रा 15.33 तक, गाँधी पुण्य.	दशमी	15.33	7.10	17.54
31	गुरु	षट्तिला एकादशी व्रत	एकादशी	17.1	7.10	17.55
फर. 1	शुक्र	गोस्वामी श्रीनिर्मलचन्द्र तिरोभाव, दामोदर मं.	द्वादशी	18.59	7.9	17.56
2	शनि	भद्रा 21.18 से, प्रदोष व्रत	त्रयोदशी	21.18	7.9	17.57
3	रवि	भद्रा 10.35 तक,	चतुर्दशी	23.52	7.8	17.58
4	सोम	मौनी अमावस्या, स्नान मेला प्रयाग अर्धकुंभ श्रीराधावल्लभ जी का दाऊजी रूप धारण	अमावस	26.33	7.8	17.59

सम्प्रदाय चार नहीं अनेक हैं जिनमें छह प्राचीन हैं और उनके छह भाष्य भी हैं

श्रीनिम्बार्काचार्य जी की – श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय ⋆ श्रीरामानुजाचार्य जी की – रामानुज सम्प्रदाय
श्रीमध्वाचार्य जी की – माध्व सम्प्रदाय ⋆ श्रीवल्लभाचार्य जी की – वल्लभ सम्प्रदाय
श्रीचैतन्यमहाप्रभुजी की – गौड़ीय सम्प्रदाय ⋆ श्रीरामानन्दाचार्य जी की – रामानन्द सम्प्रदाय

षट्तिला एकादशी व्रत : 31 जनवरी पारण : 1 फरवरी 10.02 तक	प्रदोष व्रत 2 फरवरी	प्रयागराज में अर्धकुम्भ विवरण पृष्ठ 7 पर

5 फरवरी से 19 फरवरी सन् 2019

शिशिर ऋतु : माघ शुक्ल पक्ष सं. 2075 : सूर्य उत्तरायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
फर. 5	मंगल	गुप्त नवरात्र प्रारम्भ,	प्रतिपदा	29.15	7.7	17.59
6	बुध	टोपा दुशाला धारण श्रीराधावल्लभजी	द्वितीया	0	7.7	18.0
7	गुरु	-	द्वितीया	7.52	7.6	18.1
8	शुक्र	भद्रा 23.21 से, गौरी तृतीया	तृतीया	10.17	7.6	18.2
9	शनि	भद्रा 12.25 तक	चतुर्थी	12.25	7.5	18.2
10	रवि	बसन्त पंचमी, बसंती कमरा दर्शन शाहजी मन्दिर, श्रीपुण्डरीकविद्यानिधि आविर्भाव, श्रीविश्वनाथचक्र. तिरो., श्रीविष्णुप्रिया प्राक. श्रीराधारमणके पार्श्वस्थित श्रीगौर-विष्णुप्रिया मन्दिर में विशेष महोत्सव	पंचमी	14.8	7.5	18.3
11	सोम	-	षष्ठी	15.20	7.4	18.4
12	मंगल	भद्रा 15.54 से 27.50, भानु अद्वैतप्रभु सप्तमी व्रत	सप्तमी	15.54	7.3	18.4
13	बुध	श्रीभीष्म अष्टमी, श्रीचन्द्रशेखर बाबा तिरो.	अष्टमी	15.46	7.2	18.5
14	गुरु	वैलेण्टाइन डे	नवमी	14.54	7.1	18.6
15	शुक्र	भद्रा 24.10 से, श्रीराधादामोदर प्राकट्य	दशमी	13.19	7.0	18.7
16	शनि	भद्रा 11.1 तक, जया एकादशी व्रत, व्रजविभूति श्रीश्यामदासजी का आविर्भाव	एकादशी	11.1	6.59	18.8
17	रवि	प्रदोषव्रत, भीष्मद्वादशी, 546 वां श्रीनित्यानंद प्रभु आविर्भाव व्रत	द्वादशी	8.9	6.58	18.8
0	0	त्रयोदशीक्षय,	त्रयोदशी	28.50	0	0
18	सोम	भद्रा 25.11 से, वसन्त ऋतु प्रारम्भ	चतुर्दशी	25.11	6.58	18.9
19	मंगल	भद्रा 11.17 तक, माघस्नान पूर्णिमा	पूर्णिमा	21.23	6.57	18.9

श्री जया एकादशी व्रत : 16 फरवरी	प्रदोष व्रत	पंचक
पारण : 17 फरवरी मध्याह्न अभिषेक के बाद	17 फरवरी	5 फरवरी 19.33 से 10 फरवरी 19.36

20 फरवरी से 6 मार्च सन् 2019

वसन्त ऋतु : फाल्गुन कृष्ण पक्ष सं. 2075 : सूर्य उत्तरायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
फर. 20	बुध	श्रीब्रजकिशोरदास एवं पं. हरिभक्तदास तिरो.	प्रतिपदा	17.36	6.56	18.10
21	गुरु	भद्रा 24.25 से,	द्वितीया	14.1	6.55	18.11
22	शुक्र	भद्रा 10.49 तक, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 21.21	तृतीया	10.49	6.54	18.11
23	शनि	माँ यशोदा प्राकट्य दिवस	चतुर्थी	8.10	6.53	18.12
0	0	पंचमीक्षय	पंचमी	30.13	0	0
24	रवि	भद्रा 29.4 से, महाकाल पूजा उज्जैन	षष्ठी	29.4	6.52	18.13
25	सोम	भद्रा 16.55 तक, श्रीनाथजी पाटो. नाथद्वारा	सप्तमी	28.46	6.51	18.13
26	मंगल	श्री जानकी व्रत, कालाष्टमी	अष्टमी	29.20	6.50	18.14
27	बुध	-	नवमी	30.40	6.50	18.14
28	गुरु	भद्रा 19.39 से, प्रभुपाद श्रीतीनकौड़ी गो. तिरोभाव	दशमी	0	6.49	18.15
मार्च. 1	शुक्र	भद्रा 8.38 तक	दशमी	8.38	6.48	18.16
2	शनि	विजया एकादशी व्रत	एकादशी	11.4	6.47	18.17
3	रवि	श्रील ईश्वर पुरी पाद तिरोभाव, प्रदोष व्रत	द्वादशी	13.44	6.46	18.17
4	सोम	भद्रा 16.28 से 29.47 तक,	त्रयोदशी	16.28	6.45	18.18
5	मंगल	महाशिवरात्रि व्रत	चतुर्दशी	19.6	6.43	18.18
6	बुध	देवपितृकार्य अमावस्या श्रीदेवानन्ददास बाबा तिरोभाव, कालीदह	अमावस	21.33	6.42	18.19

शिवलिंग पर जल-दूध चढ़ाने से भक्ति में
वृद्धि होती है। शिवलिंग का प्रसाद
ग्रहण नहीं करना चाहिए।

श्री विजया एकादशी व्रत : 2 मार्च पारण : 3 मार्च 9.54 तक	प्रदोष व्रत 3 मार्च	पंचक 4 मार्च 25.42 से 9 मार्च 25.17 तक

7 मार्च से 21 मार्च सन् 2019

वसन्त ऋतु : फाल्गुन शुक्ल पक्ष सं. 2075 : सूर्य उत्तरायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
मार्च 7	गुरु	श्रीरसिकानन्द गोस्वामी तिरोभाव,	प्रतिपदा	23.43	6.41	18.20
8	शुक्र	फुलेरा दौज, गुलाल उत्सव-श्रीराधावल्लभजी रघुनाथदास जी होली, राधाकुण्ड श्रीराधारमणचरणदास बड़े बाबा तिरो. तिथि	द्वितीया	25.34	6.40	18.20
9	शनि	पंजाबी बाबा श्रीनरहरिदास तिरो., राधाकुण्ड	तृतीया	27.2	6.39	18.21
10	रवि	भद्रा 15.34 से 28.6 तक,	चतुर्थी	28.6	6.38	18.21
11	सोम	-	पंचमी	28.43	6.37	18.22
12	मंगल	-	षष्ठी	28.49	6.36	18.22
13	बुध	भद्रा 28.23 से,	सप्तमी	28.23	6.35	18.23
14	गुरु	भद्रा 15.52 तक, होलाष्टक आरंभ लड्डू होली	अष्टमी	27.21	6.34	18.23
15	शुक्र	लट्ठमार रंगीली होली बरसाना	नवमी	25.44	6.33	18.24
16	शनि	होली नन्दगाँव व राधादामोदर जी वृन्दावन	दशमी	23.32	6.32	18.24
17	रवि	भद्रा 10.11 से 20.50 तक, आमला एकादशी बिहारी जी श्रीवृन्दावन में होली प्रारम्भ श्रीराधावल्लभजी में ब्याहुला व सवारी होली श्रीकृष्ण जन्मभूमि, मथुरा	एकादशी	20.50	6.31	18.25
18	सोम	गोविन्दद्वादशी, मेला खादूश्यामजी, श्रीनिवासदास बाटीबाबा तिरोभाव, प्रदोष व्रत	द्वादशी	17.43	6.30	18.25
19	मंगल	-	त्रयोदशी	14.18	6.29	18.26
20	बुध	भद्रा 10.44 से 20.58 तक, होलिका दहन 20.58 के बाद, फालैन गाँव में पण्डा का आग से निकलना	चतुर्दशी	10.44	6.28	18.26
21	गुरु	धुलैड़ी, गणगौर, डोलो. राधावल्लभ, बाँकेबिहारी गौरपूर्णिमा, श्रीचैतन्यमहाप्रभु 534वीं जयंती	पूर्णिमा	7.12	6.27	18.27

श्री आमलकी एकादशी व्रत : 17 मार्च पारण : 18 मार्च 9.47 तक	प्रदोष व्रत 18 मार्च	पंचक , 4 मार्च 25.42 से 9 मार्च 25.17 तक

22 मार्च से 5 अप्रैल सन् 2019

वसन्त ऋतु : चैत्र कृष्ण पक्ष सं. 2075 : सूर्य उत्तरायणे

दि.	वार	व्रत और पर्व	तिथि	समाप्ति काल	सूर्योदय	सूर्यास्त
0	0	प्रतिपदा क्षय	प्रतिपदा	27.52	0	0
मार्च22	शुक्र	श्रीजगन्नाथ मिश्र आनन्दोत्सव	द्वितीया	24.55	6.25	18.27
23	शनि	भद्रा 11.43 से 22.31 तक, श्रीरंगजी मंदिर ब्रह्मोत्सव प्रारम्भ, वृन्दावन	तृतीया	22.31	6.24	18.28
24	रवि	चतुर्थी व्रत - चन्द्रोदय 22.09,	चतुर्थी	20.51	6.23	18.28
25	सोम	रंगपंचमी, बाद ग्राम में डोलोत्सव, शीतला पूजन (बासौड़ा)	पंचमी	19.59	6.22	18.29
26	मंगल	भद्रा 20.1 से, श्रीहित वनचन्द्रजी का जन्मो.	षष्ठी	20.1	6.21	18.29
27	बुध	भद्रा 8.27 तक, शीतला पूजन (बासौडा)	सप्तमी	20.54	6.20	18.30
28	गुरु	शीतलाष्टमी पूजन	अष्टमी	22.33	6.19	18.30
29	शुक्र	रथ का मेला- रंगजी मन्दिर	नवमी	24.47	6.18	18.31
30	शनि	भद्रा 14.4 से 27.22 तक, श्रीधरदासपुजारी बाबा तिरोभाव, कालीदह	दशमी	27.22	6.17	18.32
31	रवि	-	एकादशी	30.3	6.15	18.32
अप्रै. 1	सोम	पापमोचनी एकादशी व्रत	द्वादशी	0	6.14	18.32
2	मंगल	प्रदोष व्रत	द्वादशी	8.38	6.13	18.32
3	बुध	भद्रा 10.56 से 23.53 तक, रंगतेरस	त्रयोदशी	10.56	6.12	18.33
4	गुरु	-	चतुर्दशी	12.50	6.11	18.33
5	शुक्र	सम्वत्सर 2075 विश्राम	अमावस	14.20	6.9	18.34

श्रीरंगजी मन्दिर - ब्रह्मोत्सव

दिनांक 23 मार्च शनिवार से 01 अप्रैल सोमवार तक

रथ का मेला - 29 मार्च ★ बड़ी आतिशबाजी- 30 मार्च

श्री पापमोचनी एकादशी व्रत : 1 अप्रैल	प्रदोष व्रत	पंचक
पारण : 2 अप्रैल 8.39 तक	2 अप्रैल	1 अप्रैल 8.19 से 6 अप्रैल 7.21 तक

दिन का चौघड़िया

एक चौघड़िया सूर्योदय से लगभग डेढ़ घंटे तक रहती है।	वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	पहली चौघ,	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
	दूसरी चौघ.	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
	तीसरी चौघ.	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
	चौथी चौघ.	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
	पंचम चौघ.	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
	छठवीं चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
	सातवीं चौघ.	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
	आठवीं चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रि का चौघड़िया

एक चौघड़िया सूर्यास्त से लगभग डेढ़ घंटे तक रहती है।	वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	पहली चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
	दूसरी चौघ.	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
	तीसरी चौघ.	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
	चौथी चौघ.	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
	पंचम चौघ.	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
	छठवीं चौघ.	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
	सातवीं चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
	आठवीं चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

चौघड़िया मुहूर्त्त–मुहूर्त्त के सन्दर्भ में चौघड़िया मुहूर्त्त अपना विशेष स्थान रखते हैं, जिनके स्वामी ग्रह इस प्रकार हैं, यथा–उद्वेग का रवि, चर का शुक्र, लाभ का बुध, अमृत का चन्द्र, काल का शनि, शुभ का गुरु और रोग का स्वामी भौम है। शुभ, चर, अमृत और लाभ के चौघड़िया का समय श्रेष्ठ माना गया है। इनमें प्रत्येक शुभ कार्य का शुभारम्भ कर सकते हैं। जिसका जो स्वामी है उससे सम्बन्धित धातु, अन्यान्य पदार्थ के कारोबार में विशेष लाभ का अवसर रहता है। यात्रा में सूक्ष्म विचार करना चाहिए। जैसे–अमृत के चौघड़िया में पूर्व दिशा की यात्रा दिशाशूल सम्मुख दोषयुक्त रहेगी क्योंकि सोम में पूर्व दिशा में दिशाशूल दोष होता है। उत्तम चौघड़िया–अमृत, शुभ, लाभ तथा चर हैं। खराब चौघड़िया उद्वेग, रोग तथा काल हैं। शुभ कार्य और यात्रा के लिए कोई मुहूर्त्त न बनने पर उत्तम चौघड़िया देखकर कार्य करना चाहिए।

अ ब क ह डा चक्र   राशि-स्वामी-वर्ण-वश्य आदि विवरण

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	स्वामी	वर्ण	वश्य	योनि	गण	नाड़ी	युञ्जा	हंसक तत्व
अश्विनी भरणी कृत्तिका	चू चे चो ला ली लू ले लो अ ० ० ०	मेष	मंगल	क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व गज मेष	देव मनुष्य राक्षस	आदि मध्य अन्त्य	पूर्व पूर्व पूर्व	अग्नि
कृत्तिका रोहिणी मृगशिरा	० इ उ ए ओ वा वि वु वे वो ० ०	वृष	शुक्र	वैश्य	चतुष्पद	मेष सर्प सर्प	राक्षस मनुष्य देव	अन्त्य अन्त्य मध्य	पूर्व पूर्व पूर्व	पृथ्वी
मृगशिरा आर्द्रा पुनर्वसु	० ० क की कु घ ङ छ के को हा ०	मिथुन	बुध	शूद्र	मानव	सर्प श्वान मार्जार	देव मनुष्य देव	मध्य आदि आदि	पूर्व मध्या मध्या	वायु
पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा	० ० ० ही हू हे हो हा डी डू डे डो	कर्क	चन्द्रमा	विप्र	जलचर	मार्जार मेष मार्जार	देव देव राक्षस	आदि मध्य अन्त्य	मध्या मध्या मध्या	जल
मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी	मा मी मू मे मो टा टी टू टे ० ० ०	सिंह	सूर्य	क्षत्रिय	वनचर	मूषक मूषक गौ	राक्षस मनुष्य मनुष्य	अन्त्य मध्य आदि	मध्या मध्या मध्या	अग्नि
उत्तराफाल्गुनी हस्त चित्रा	० टो पा पी पू ष ण ठ पे पो ० ०	कन्या	बुध	वैश्य	मानव	गौ महिष व्याघ्र	मनुष्य देव राक्षस	आदि आदि मध्य	मध्या मध्या मध्या	पृथ्वी
चित्रा स्वाती विशाखा	० ० रा री रु रे रो ता ती तू ते ∞	तुला	शुक्र	शूद्र	मानव	व्याघ्र महिष व्याघ्र	राक्षस देव राक्षस	मध्य अन्त्य अन्त्य	मध्या मध्या मध्या	वायु
विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा	० ० ० तो ना नी नू ने नो या यी यू	वृश्चिक	मंगल	विप्र	कीट	व्याघ्र मृग मृग	राक्षस देव राक्षस	अन्त्य मध्य आदि	मध्या मध्या अन्त्या	जल
मूल पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ा	ये यो भा भी भू धा फा ढा भे ० ० ०	धनु	गुरु	क्षत्रिय	मानव / चतुष्पद	श्वान वानर नकुल	राक्षस मनुष्य मनुष्य	आदि मध्य अन्त्य	अन्त्या अन्त्या अन्त्या	अग्नि
उत्तराषाढ़ा श्रवण धनिष्ठा	० भो ज जी खी खू खे खो गा गी ० ०	मकर	शनि	वैश्य	चतुष्पद / जलचर	नकुल वानर सिंह	मनुष्य देव राक्षस	अन्त्य अन्त्य मध्य	अन्त्या अन्त्या अन्त्या	पृथ्वी
धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्रपदा	० ० गू गे गो सा सी सू से सो द ०	कुम्भ	शनि	शूद्र	मानव	सिंह अश्व सिंह	राक्षस राक्षस मनुष्य	मध्य आदि आदि	अन्त्या अन्त्या अन्त्या	वायु
पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा रेवती	० ० ० दी दू थ झ ञ दे दो चा ची	मीन	गुरु	विप्र	जलचर	सिंह गौ गज	मनुष्य मनुष्य देव	आदि मध्य अन्त्य	अन्त्या अन्त्या पूर्व	जल

राशिफल

(ARIES)मेष :चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अप्रैल— व्यापार में सहयोग। सफलता सुनिश्चित।**मई**— व्यवसायिक समझौते में लाभ। मित्र परिजन की चिन्ता सतायेगी। कानूनी झमेले।**जून**— काम का बोझ। सम्मान मिलेगा। नयेपन का अनुभव होगा।**जुलाई**—सत्कर्मों में रुचि। समस्या का समाधान।**अगस्त**—लाभ होगा। प्रेम प्रसंग के चक्कर में हानि। बच्चों से मन प्रसन्न रहेगा।**सितम्बर**—अकर्मण्यता बाधक। यात्रा का संयोग। परिचर्चा में परेशानी होगी।**अक्टूबर**—नये विषय मे जिज्ञासा। महिलाओं का समय खरीदारी में बीतेगा। साथी की चिंता।**नवम्बर**—गृहस्थी में कटुता। तदन्तर सरसता का योग। लेन—देन में झंझट।**दिसम्बर**—सत्संग, वैवाहिक कार्यक्रमों में मन प्रसन्न। कहीं घूमने—फिरने का अवसर मिलेगा। अधूरा पड़ा काम पूरा होगा।**जनवरी**—नौकरी पेशावर्ग फायदे में रहेगा।**फरवरी**—स्थानान्तरण का सुयोग है। विरोधी षड्यंत्र रचेंगे। सामाजिक धार्मिक काम से कहीं जाना होगा।**मार्च**—विवादास्पद प्रकरण में नया मोड़ आयेगा। व्यापारिक बुद्धि से काम लेने वाले फायदे में। पारिवारिक खुशी की खबर मिलेगी।

(TAURUS)वृष :इ, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

अप्रैल—मान—सम्मान मेंवृद्धि होगी। गृह उपयोगी वस्तु खरीदी जायेगी।**मई**—कानूनी वाद—विवाद से बचे रहें। घर में नई खुशी सम्भव है। जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहेगी।**जून**—नई परिस्थितियों से गुजरना पड़ सकता है। यात्रा छोटी व सुखद रहेगी। चल—अचल सम्पत्ति का लाभ।**जुलाई**—नवीन कार्य पूरा होगा। मंगलोत्सव का अनुभव।**अगस्त**—व्यवसाय में बदलाव के योग। अचानक किसी के प्रति आकर्षण। कोई रुका हुआ काम बनेगा।**सितम्बर**—नई योजना सफल होगी। स्थानांतरण तथा लम्बी यात्रा श्रेष्ठ नहीं।**अक्टूबर**—व्यवसायिक रद्दोबदल ठीक नहीं। पदोन्नति मिलेगी।**नवम्बर**—गृहनिर्माण एवं मंगलोत्सव में व्यय। लाभ का नया मार्ग प्रशस्त होगा।**दिसम्बर**—खुशी का समाचार मिलेगा। लम्बी यात्रा। लाभ से मन प्रसन्न। रोग, ऋण से सचेत रहें।**जनवरी**—कार्य सम्पन्न होगा। नये मेहमान के आवागमन से हर्ष।**फरवरी**—व्यवसायिक गतिरोध। अनपेक्षित व्यवहार क्षोभ का कारण।**मार्च**—स्वजन समागम। लाभप्रद योजना में रुचि।

(GEMINI)मिथुन :का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा

अप्रैल— भौतिक सुख—समृद्धि का योग। स्वास्थ्य हानि।**मई**—आश्चर्यजनक लाभ। भागदौड़ का चक्र चलेगा।**जून**—विरोधी परास्त। विवाद निवृत्ति से चित्त प्रसन्न।**जुलाई**—रचनात्मक कार्य, भूमि के क्रय—विक्रय से लाभ होगा। विवाद सुलझेगा।**अगस्त**—सामाजिक धार्मिक कामों के पूर्ण होने के सुयोग।**सितम्बर**—परिस्थितियों में सुधार आयेगा। जन सम्पर्क से प्रतिष्ठा बढ़ेगी।**अक्टूबर**—योजनापूर्ति में सहयोग मिलेगा। गृहखर्च में वृद्धि होगी।**नवम्बर**—भूमि, वाहन अन्यान्य वस्तु का लेन—देन। **दिसम्बर**—नया काम करने में सफल। नई योजना की उधड़ेबुन लगी रहेगी।**जनवरी**—प्रतियोगिता में विजय। नई खुशी सम्भव। रुका हुआ धन देर से मिलेगा।**फरवरी**—कारोबार मध्यम। घर गृहस्थी की चिन्ता सतायेगी।**मार्च**—असफलता के मध्य सफलता का योग। मित्रों के साथ सैर—सपाटा।

(CANCER)कर्क :ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अप्रैल– पर्याप्त विकास। लम्बी यात्रा श्रेष्ठ नहीं। प्रतिस्पर्धाओं में चित्ताकर्षण **।मई**–सम्मान व उपहार का लाभ मिलेगा। व्यवसायिक उपलब्धि। देश–विदेश की यात्रा **।जून**–कानूनी विवाद में उलझ सकते हैं **।जुलाई**–आत्मविश्वास में वृद्धि। धनागमन का मार्ग प्रशस्त। प्रतियोगिता में सफलता। **अगस्त**–विरोध का सामना। ऐश्वर्यवृद्धि **।सितम्बर**–रोजगार में उन्नति। राजनैतिक क्षेत्र में वर्चस्व। **अक्टूबर**–व्यय अधिक। स्वजन समागम, भाग्योन्नति **।नवम्बर**–खास वस्तु को पाने की आकांक्षा पूर्ण। **दिसम्बर**–संबंधों में मधुरता। मन आशंका से त्रस्त **।जनवरी**–विवादास्पद प्रकरण नया मोड़ लेगा। प्रतियोगिता में विजय **।फरवरी**–योजनापूर्ति का लाभ। जन सम्पर्क बढ़ेगा। रोजगार में उन्नति **।मार्च**– पुरुषार्थ की वृद्धि। क्रोध पर काबू रखें। भूमि वाहनादि का लेन–देन। अर्थ सम्बंधी विवाद स्मभव है।

(LEO)सिंह :मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

अप्रैल–व्यवसाय में उन्नति। राजनीतिक क्षेत्र में वर्चस्व। धन खर्च होगा **।मई**–लाभ अधिक होगा। समस्याएं सुलझेंगी। कहीं जाना पड़ेंगा **।जून**–विचाराधीन योजना में सफलता। नई खोजों का लाभ **।जुलाई**–शत्रु ईर्ष्या का भाव रखेगा। सामाजिक उपद्रव, चौराग्निभय **।अगस्त**–नया काम करने में सक्षम। खेती से लाभ। सुखद समाचार **।सितम्बर**–कार्य में प्रगति। जायदाद सम्बन्धी विवाद **।अक्टूबर**–यथेष्ट लाभ। सरकारी नियमों से परेशान रहेगा **।नवम्बर**–परस्पर विरोधपूर्ण वातावरण। शारीरिक मानसिक कष्ट **।दिसम्बर**–अनिवार्य प्रवास, भ्रमण का योग। शत्रु पर विजय पाने में सफल। **जनवरी**–अच्छे–खराब समाचार मिलेंगे। गृहस्थी का मसला हल हो जायेगा **।फरवरी**–स्थानान्तरण शुभ नहीं। नवनिर्माण की योजना। विवाद को समाप्त करने का प्रयास करें **।मार्च**– व्यक्तित्व के बदलाव आयेगा। पुराने रोगोपद्रव से छुटकारा।

(VIRGO)कन्या :टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

अप्रैल–अनजान व्यक्ति से मित्रता न करें। रुका हुआ काम बनेगा **।मई**–मान–सम्मान मिलेगा। कारोबार में नया समझौता फायदा पहुँचायेगा **।जून**–दाम्पत्य जीवन में वाद–विवाद की स्थिति **।जुलाई**–अधिकारी वर्ग की पदोन्नति। शिक्षा में गतिरोध **।अगस्त**–सेहत का ख्याल रखें। प्रतियोगिता परिणाम अनुकूल **।सितम्बर**–व्यापार में वृद्धिकारक। मन प्रसन्न। पार्टनरशिप फायदेमंद। जीवन साथी से पूर्ण सहयोग **।अक्टूबर**–प्रियजन मिलन का संयोग। धनाभाव की स्थिति **।नवम्बर**– आर्थिक मसालों में पूर्ण सफलता। व्यापार में शत्रुओं द्वारा हानि **।दिसम्बर**–मांगलिक कार्यों में भाग लेने का मौका। स्वास्थ्य विकार सम्भव **।जनवरी**–धार्मिक कृत्यों में धनागम। आदान–प्रदान का विशेष योग। **फरवरी**–जोखिम न उठायें। मंगलोत्सव आदि की सूचना। अनावश्यक व्यय। **।मार्च**–सन्तान पक्ष की चिन्ता। प्रयास से बाधायें टलेंगी।

(LIBRA)तुला :रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अप्रैल– बड़े अधिकारी से तालमेल लाभप्रद। दाम्पत्य सुखोपभोग। **मई**–कारोबार में नई उपलब्धि। जमीन–जायदाद, मुकदमा संबंधी परेशानी **।जून**–अध्ययन कार्यों के प्रति रुचि। मांगलिक कार्यों पर कुछ खर्च होगा **।जुलाई**–निर्णय लाभदायक। मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे **।अगस्त**–सुख–सुविधा की सामग्री खरीदी जायेगी। रुका हुआ काम बन जायेगा। अनावश्यक भागदौड़ **।सितम्बर**–नवनिर्माण की इच्छा पूरी होगी। व्यवसाय में विशेष लाभ **।अक्टूबर**–वाद–विवाद समाप्त होकर संबंधों में मधुरता। समझौता लाभप्रद **।नवम्बर**–मेहमान या संदेश आयेगा। पुराने रोग ऋणादि से राहत। विवाद सुलझ जायेंगे **।दिसम्बर**–सुख सुविधा के साथ। शारीरिक कष्ट भी सम्भव **।जनवरी**–नया गठबंधन लाभदायक। स्वास्थ्य नरम। स्थानान्तरण फायदेमंद **।फरवरी**–प्रियजन विछोह। शुभाशुभ समाचार आयेगा। **मार्च**–दूर–समीप की यात्रा। प्रतियोगिता परिणाम उत्तम।

(SCORPIO)वृश्चिक :तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अप्रैल– शुभ सन्देश आयेंगे। अचानक द्रव्य लाभ। द्वेषपूर्ण व्यपहार से क्षति सम्भव। वैचारिक मतभेद **।मई**–शिक्षा एवं व्यवसायिक क्षेत्र में सफलता। धन लगाना श्रेष्ठ हैं **।जून**–अनजान से दोस्ती का खतरा न उठायें। प्रतिष्ठा बढ़ेंगी **।जुलाई**–कहा सुनी बड़े विवाद का रूप धारण कर सकती है। कार्य की रुकावटें दूर होंगी **।अगस्त**–रोजगार के नवीन अवसर मिलेंगे। सुखोपभोग की वस्तु खरीदी जायेगी **।सितम्बर**–पर्यटन के अवसर सुलभ। मनोरथ सिद्धि। लाभ हानि का सामान योग **।अक्टूबर**–नया समझौता फायदेमन्द। समस्याएं सुलझ जायेंगी **।नवम्बर**–नौकरी एवं प्रतियोगिता से सफलता। व्यापारी विशेष सफलता हासिल करेगा। शत्रु पदोन्नति में रुकावटें डालेंगे **।दिसम्बर**–व्यवसाय में विकास के लिए समय उचित है। उत्तम अन्न, द्रव्य वस्त्रादि की प्राप्ति का योग **।जनवरी**–योजना स्थगित हो सकती है **।फरवरी**– भूमि वाहनादि लेन–देन का विचार बन सकता है **।मार्च**–लम्बी यात्रा श्रेष्ठ नहीं। पारिवारिक कलह कुघटनाचक्र को जन्म दे सकती।

(SAGITTARIUS)धनु :ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे

अप्रैल– पठन–पाठन में रुचि। दाम्पत्य सुखोपभोग के साधन सुलभ **।मई**–आशातीत लाभ। राजनीति में नया काम बनेगा। गुमराह करने का प्रयास **।जून**–कानूनी विवाद में उलझ सकते। दूर–दराज की यात्रा, वाहन भूमि का सुख **।जुलाई**–इष्ट–मित्र मिलन, अचानक धन लाभ का सुयोग। योजना में समयाभाव के कारण कठिनाई **।अगस्त**–लाभ का नया स्त्रोत। कानूनी विवाद में सफलता **।सितम्बर**–सामाजिक काम से कहीं जाना होगा। शत्रु कुघटना को जन्म दे **।अक्टूबर**–स्वजन समागम, यशोपलब्धि। धन्धे में सहयोग से लाभ **।नवम्बर**–आकस्मिक लाभ। व्यवसायिक फायदा। समस्याओं के समाधान **।दिसम्बर**–राजकीय–सामाजिक उपद्रव। दूर–दराज की यात्रा पर जाना **।जनवरी**–श्रमसंघर्ष के बावजूद लाभ कम। मानसिक परेशानी व लम्बी बीमारी से राहत **।फरवरी**–सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। स्वास्थ्य नरम **।मार्च**–यह माह कुछ विशेषताएं लेकर आ रहा है। नित्यानन्द, सौख्यसमृद्धि, विवाद निवृत्ति के योग। कानूनी झंझट छूट जायेगा।

(CAPRICORN)**मकर : भो, ज, जी, जू, जे, जो, खा, खी, खू, खे, खो, गा, गी**

अप्रैल—दौड़—धूप की अधिकता। कार्यसिद्धि का योग।**मई**—विवाद की समाप्ति। हर्षोल्लास। **जून**—उद्यमशक्ति का विकास। लाभ—खर्च का समान योग। यात्रा लाभदायक।**जुलाई**—अचानक द्रव्यलाभ, मित्र मिलन की खुशी।**अगस्त**—प्रतियोगिता का परिणाम श्रेष्ठ। सुखोपभोग, सम्मान वृद्धि, भाग्यविकास।**सितम्बर**—भाग्योन्नति के लिए समय कठिन। विषम परिस्थिति।**अक्टूबर**—प्रगति का सुयोग। देश—देशान्तर से समाचार।**नवम्बर**—समस्या का समाधान निकालने का प्रयास करें। रोगऋण से बचें।**दिसम्बर**—साझीदार से घाटा। निर्माणाधीन काम पूरा। कानूनी कार्यवाही का विचार छोड़ें।**जनवरी**—अनजान से दोस्ती का हाथ न मिलायें। खरीद—फरोख्त के धन्धे में ज्यादा लाभ।**फरवरी**—धन खर्च होगा। स्थानान्तरण सुखोन्नति कारक।**मार्च**—पारिवारिक समस्या का समाधान। नये काम की आशा बलवन्ती।

(AQUARIUS)**कुम्भ :गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा**

अप्रैल— अनजान व्यक्ति से बचें। घर—गृहस्थी में विरोधपूर्ण वातावरण। आर्थिक सफलता। **मई**—प्रयोजन से कहीं जाना होगा। विवाद को समाप्त करने का प्रयास करें।**जून**—व्यवसाय में नई पहल से लाभ। घूमने—फिरने में समय नष्ट न करें।**जुलाई**—गृहस्थी में छोटे—मोटे विवाद। काम देर से बनेगा।**अगस्त**—लम्बी यात्रा का संयोग बनेगा। कोई उपकरण खरीदा जायेगा। कानूनी विवाद सुलझेंगा।**सितम्बर**—बेवजाह हानि, मामूली शारीरिक कष्ट।**अक्टूबर**—किसी खास विषय में अचानक आस्था।**नवम्बर**—बिगड़ें काम बनेंगे। वाहनादि क्रय—विक्रय का अवसर। लाभ के योग। लम्बी यात्रा अनुकूल। शारीरिक कष्ट।**दिसम्बर**—नवनिर्माण की योजना कार्यरूप लेगी। नौकरी में स्थानान्तरण शुभ नहीं। इष्ट मित्र समागम।**जनवरी**—आशा पर निराशा। अनजान व्यक्ति से सावधान।**फरवरी**—प्रकृति के सानिध्य में रहने का मौका।**मार्च**—पराक्रम बढ़ेगा। रुका हुआ काम पूरा होगा। संतान पक्ष से खुशी। परीक्षा में सफलता।

(PISCES)**मीन :दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची**

अप्रैल— ग्रहचाल सामान्य फलदायक। बच्चों में हास्यरस।**मई**—लम्बी यात्रा का योग। चौपाया वाहनादि का लाभ।**जून**—घनिष्ठता से लाभ। अतिरिक्त कार्यभार। चौपाया से सावधान।**जुलाई**—प्रियवस्तु से मन प्रसन्न। अनजान से हाथ न मिलायें।**अगस्त**—नये काम की रूपरेखा। पड़ौसी से सद्भाव बनाये रखें। विरोधी षड्यन्त्र से बचें।**सितम्बर**—राजनीतिक कुचक्र से बचें। शुभाशुभ खबर मिलेगी।**अक्टूबर**—व्यापार में कठिन परिश्रम लाभ देगा। समय व्यर्थ उल्झन में बीतेगा।**नवम्बर**—चल—अचल सम्पत्ति का लाभ। घर गृहस्थी की चिन्ता।**दिसम्बर**—समय हर्षोल्लास से बीतेगा। प्रतियोगिता में सफलता।**जनवरी**—लम्बी यात्रा का संयोग। उत्तरार्ध दुविधाजनक।**फरवरी**—पुण्यार्जन से अभिष्ट सिद्ध। यशकीर्ति का विस्तार होगा। स्थायी सम्पत्ति की खरीद—फरोख्त।**मार्च**—मेहमान की खुशी। सामाजिक व अध्यात्मिक उन्नति। व्यापार में अवरोध के बाद सफलता।

• स्रोत : श्रीब्रजभूमि पंचांग से साभार

अखण्ड सौभाग्य की मंगल कामना का पर्व

करवा चौथ

–श्री प्रेम नारायण चौबे

करवा चौथ का पर्व कार्तिक मास की चतुर्थी एवं चंद्रोदय तिथि में मनाया जाता है। इस पर्व को कर्क चतुर्थी भी कहते हैं। ऐसी मान्यता है कि इस दिन स्त्रियाँ अपने पति की दीर्घ आयु एवं अखंड सुहाग की प्राप्ति के लिए यह व्रत करती हैं। यह पति–पत्नी के अखंड प्रेम और त्याग की चेतना का प्रतीक है। इस दिन महिलाएँ दिन भर के व्रत के बाद ईश्वर से पति की मंगल कामना चाहती हैं। इस दिन चंद्रमा के साथ–साथ शिव–पार्वती, गणेश और कार्तिकेय की भी पूजा होती है। शिव और पार्वती की पूजा का अर्थ ही है, पार्वती जैसी शक्ति और साधना हासिल करना और पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना। लम्बे समय से यह पर्व स्त्रियों के सशक्त मनोबल और पति के प्रति अपने कर्तव्यों को दिखाता रहा है। आज के समय में भी करवा चौथ को स्त्री शक्ति के प्रतीक के तौर पर देखा जाना चाहिए।

हम यदि अनेक ग्रंथों में प्राप्त करवा चौथ की कथाओं को देखें, तो इनमें स्त्रियों को निरुपाय या असहाय नहीं, बल्कि सशक्त रूप में दिखाया गया है। इन पौराणिक कथाओं में स्त्रियाँ सशक्त भूमिका में नजर आती हैं, जो अपने पति और परिवार के लिए संकटमोचक बनकर उभरती हैं। जिस देश में सावित्री जैसे उदाहरण हैं, जिसने अपने पति सत्यवान को अपने सशक्त मनोबल से यमराज से छीन लिया था, वहाँ की स्त्रियाँ साहसी क्यों न हों?

करवा चौथ को लेकर ऐसी ही एक कथा भी प्रचलित है। उसके अनुसार प्राचीन समय में करवा नाम की एक स्त्री थी। वह अपने पति के साथ नदी किनारे एक गाँव में रहती थी। उसका पति नदी में स्नान करने गया। नदी में नहाते समय एक मगरमच्छ ने उसका पैर पकड़ लिया। इस पर वह व्यक्ति 'करवा–करवा' कहकर पत्नी को सहायता के लिए पुकारने लगा। आवाज सुनकर करवा भागकर अपने पति के पास पहुँची और दौड़कर धागे से मगरमच्छ को बाँध दिया। उसका सिरा पकड़कर करवा पति के साथ यमराज के पास पहुँच गई। यमराज घबरा गए और बोले– 'देवी ! तू क्या चाहती है?' करवा ने कहा– हे प्रभु ! मेरे पति को मगरमच्छ से मुक्त करके जीवन दो।

आखिरकार यमराज को करवा के साहस को देखते हुए उसके पति को मुक्त करना पड़ा। जाते समय वह करवा को सुख–समृद्धि देते गए तथा यह

वर भी दिया– 'जो स्त्री इस दिन व्रत करके करवा को याद करेगी, उनके सौभाग्य की मैं रक्षा करूँगा।' करवा ने अपने सशक्त मनोबल से अपने पति के प्राणों की रक्षा की थी। मान्यता है कि जिस दिन करवा ने अपने पति के प्राण बचाए थे, उस दिन कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी थी।

इसी प्रकार करवा चौथ को लेकर द्रौपदी की पौराणिक कथा भी मिलती है। उसके अनुसार एक बार अर्जुन नीलगिरि नामक पर्वत पर तपस्या करने चले गए। उधर पांडवों पर संकट आने शुरू हो गए। इस संकट के समय द्रौपदी ने स्त्री–शक्ति का परिचय दिया। अर्जुन के लौटने तक किस तरह उसके परिवार की रक्षा हो, इसके लिए द्रौपदी ने श्रीकृष्ण का ध्यान किया। भगवान् वहाँ उपस्थित हुए तो द्रौपदी ने अपने कष्टों के निवारण हेतु कोई उपाय बताने को कहा। इस पर श्रीकृष्ण बोले– एक बार पार्वती जी ने भी शिव जी से यही प्रश्न किया था तो उन्होंने करवा चौथ व्रत रखने को कहा था, इससे परिवार में सुख–शांति आती है। द्रौपदी ने भी व्रत लेकर परिवार पर आए संकट को दूर किया।

व्रत लेने का अर्थ ही है संकल्प लेना। वह संकल्प चाहे पति की रक्षा का हो, परिवार के कष्टों को दूर करने का या कोई और। संकल्प में बड़ी शक्ति होती है लेकिन यह संकल्प वही ले सकता है, जिसकी इच्छा शक्ति दृढ़ हो। प्रतीकात्मक रूप में करवा चौथ पर महिलाएँ अन्न–जल त्याग कर यह संकल्प लेती हैं और अपनी इच्छा शक्ति की परख करती हैं लेकिन व्यावहारिक रूप में महिलाएँ अपने पति और परिवार के संकटों को हरने के लिए जो प्रयोजन करती हैं, वही उनका संकल्प होता है। इस पर्व की कथाओं में जिस तरह स्त्रियाँ संकल्प अथवा व्रत लेती हैं, वह उनकी इच्छाशक्ति को दर्शाता है।

यह पर्व इच्छा शक्ति को जगाकर स्त्रियों द्वारा परिवार में अपने महत्त्व को स्थापित करने का है। इस पर्व से यह सीखना चाहिए कि स्त्री अबला नहीं, बल्कि सबला है और वह अपने परिवार को संकट से उबार सकती है।

ऐसे ही अन्य व्रत पर्वों के रहस्य जानने के लिए पढ़ें–

ब्रज के व्रत-उत्सव

न्योछावर ~~125~~ रुपये

छूट के बाद 100 रु.

पुस्तक मँगाने हेतु SMS / Whatsapp करें :– 7500040003

श्रीहरिनाम संकीर्तन मण्डल के संस्थापक

व्रजविभूति श्रीश्यामदास

1921-2005

• श्रीश्यामलाल हकीम •

● प्राक्कथन

सन्त भगवद्–शक्ति का ही एक स्वरूप होते हैं। सन्तों का हृदय कोमल होता है। जैसे जल का सहज स्वभाव हर–एक को शीतलता प्रदान करना होता है, वैसे ही सन्तों का सहज स्वभाव होता है–दुःखी एवं सन्तप्त जीवों पर करुणा करके उनके दुःखों को, उनके संकटों को दूर करने का उपाय बताकर उन्हें कल्याणकारी मार्ग पर अग्रसर करना। यदि किसी जीव में यह गुण है तो वह किसी भी वेश में हो, वह सन्त है और किसी सन्तवेशधारी में यह गुण–लक्षण नहीं है, तो वह सन्त नहीं है–यह परम सत्य है।

सन्त इस संसार में, इस पृथ्वी पर जीवों का कल्याण करने आते हैं और जीवन मृत्यु से परे होते हुए भी निश्चित समय पर अपने इस भौतिक शरीर का त्याग कर प्रयाण कर जाते हैं। लेकिन अमर हो जाते हैं– उनके आचरण, उनकी शिक्षा और विशेषकर उनके द्वारा साक्षात् किये गये अनुभव और उनके उपदेश, जिनका अनुसरण करके जीवमात्र अपने कल्याण का पथ प्रशस्त करता है।

ग्रन्थ
प्रभु के विग्रह हैं,
इनकी सेवा,
इनका अध्ययन,
इनका पूजन,
साक्षात्
प्रभु सेवा ही है।

● परिचय

नाम– श्रीश्यामलाल हकीम (श्रीश्यामदास), जन्म–3 फरवरी सन्1921, जन्मस्थान– डेरागाजीखान, वर्ण– क्षत्रिय। उपजाति– अरोड़ा (नांगिया), भाषाज्ञान– हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, बंगला, संस्कृत, फारसी। व्यवसाय– हकीम। अखण्ड भारत के पंजाब प्रान्त के नगर डेरागाजीखान में स्वामी श्री इन्द्रभानुजी (श्रीललित लड़ैतीजी) के नाम से एक भक्त कवि हुए हैं, जो भक्ति–ज्ञान–वैराग्य के साक्षात् मूर्तिमन्त एवं परमसिद्ध सन्त थे। आपके ही वंश में राय साहब श्रीरघुनाथदास जी हकीम एक व्रजनिष्ठ परमभक्त थे। श्रीरघुनाथदास जी एवं माता सीता देवी के घर में सन् 1921 में जन्मे एक मात्र सुपुत्र हैं श्रीश्यामलाल जी हकीम 'श्रीश्यामदास'। श्रीधाम वृन्दावन से आपके परिवार का पुराना सम्बन्ध था और आना–जाना था। आपके मन में भी श्रीधाम वृन्दावन के दर्शन और निवास की लालसा बाल्यकाल से थी। अतः समय पाकर आप श्रीवृन्दावन चले आते। यहाँ रहकर आप प्रिया–प्रीतम की लीलाओं का आस्वादन करते और महत्पुरुषों से कथा–श्रवण कर भजन की शिक्षा ग्रहण करते।

● नाम-मन्त्र-दीक्षा

श्रीचैतन्य सम्प्रदाय की महान् विभूति श्रीमन्नित्यानन्दप्रभु–वंशावतंस शृंगारवटस्थ परमभागवत पूज्यचरण श्रीदेवकीनन्दनजी गोस्वामी महाराज से कृपाशक्ति–दीक्षा प्राप्त कर

व्रजविभूति श्रीश्यामदास जी ने कहा था- शरीर है-एक न एक दिन तो यह जायेगा ही। मैं रहूँ न रहूँ - लेकिन प्रयास करके भगवद्लीला गुणानुवाद से भरे ग्रन्थों के प्रकाशन को गंभीरता से चालू रखना

श्रीचैतन्य–सिद्धान्त साहित्य का आपको परिचय हुआ तो आप चमत्कृत हो उठे। श्रीगुरुदेव एवं विद्वद्जन की कृपा प्राप्त कर आपने श्रीचैतन्यानुयायी गोस्वामिगण के साहित्य का गहन अध्ययन–आस्वादन कर उसे हिन्दी भाषा–भाषी साधकों के हित उपलब्ध कराने का बीड़ा उठाया। दीक्षा ग्रहण के तुरन्त पश्चात् श्रीगुरुकृपा से आपमें कवित्व शक्ति जागृत हो उठी। श्रीभक्तभाव संग्रह नामक ग्रन्थ में 'ललितविहारिणि', 'श्याम' एवं 'श्यामदास' उपनाम से आपकी बहुत सी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

● परिवार

धार्मिक परिवेश में रहते हुए आपने अपने गृहस्थ के दायित्वों को भी अच्छी प्रकार से निर्वाह किया। आपके तीन पुत्र थे–सबसे बड़े सुपुत्र को आपने दिल्ली से चिकित्सक की डिग्री दिलायी और उन्हें एक सफल चिकित्सक के रूप में स्थापित किया। शेष दोनों पुत्रों को उच्च शिक्षा दिलाकर श्रीहरिनाम प्रेस में स्थापित किया। अपनी पुत्रियों को भी अच्छी शिक्षा दिलाकर योग्य परिवारों में विवाहित कर अपने दायित्वों का निर्वाह किया।

सन् 1947 में जब भारत विभाजित हुआ तो आप सपरिवार वृन्दावन आकर बस गये और लोई बाजार में दुकान लेकर चिकित्सा कार्य प्रारम्भ किया। प्रारम्भ में सामान्य रोगी तो आता ही नहीं था, प्रायः ऐसे रोगी आते थे, जिन्हें सब ओर से निराश होकर जवाब मिल जाता था। ईश्वर में विश्वास और दृढ़ कार्यनिष्ठा से यूनानी और आयुर्वेदिक पद्धति से ऐसे मरणासन्न रोगियों की चिकित्सा कर अनेक रोगियों को स्वस्थ कर नगर एवं आसपास के क्षेत्र में 'खानदानी' के नाम से सुविख्यात चिकित्सक के रूप में ख्याति एवं सम्मान अर्जित किया। दोपहर में खाली समय मिलने पर ग्रन्थों का अध्ययन, आस्वादन एवं सम्पादन में अपना समय सार्थक करते थे।

● ब्रजनिष्ठा – ग्रन्थ सम्पादन

धार्मिक एवं ब्रजनिष्ठापूर्ण परिवार होने के कारण वृन्दावन में निवास कर सन्तों का संग करते हुए भजन की शिक्षा प्राप्त करते थे। वृन्दावन रहने से ब्रजभाषा एवं संस्कृत भाषा पर आपका सम्यक् अधिकार हो गया। आपने संस्कृत एवं बंगला भाषा में प्रकाशित अनेक गौड़ीय–गोस्वामिग्रन्थों का अध्ययन किया। उस समय यह ग्रन्थ केवल बंगला लिपि में संस्कृत–बंगला भाषा में उपलब्ध थे। आपके मनस् में यह प्रेरणा हुई कि ये ग्रन्थरत्न यदि हिन्दी में उपलब्ध और प्रकाशित होते तो हिन्दी–भाषा–भाषी साधक–भक्त भी इसका अध्ययन सुगमता से कर पाते। आपने भगवत् कृपा का सम्बल लेकर निश्चय किया कि इस कार्य को वे करेंगे और तब से 'श्रीश्यामदास' की लेखनी का प्रवाह आरम्भ हुआ जो आजीवन नहीं रुका।

प्रभु प्रेरणा से धीरे–धीरे छोटे–बड़े लगभग125 ग्रन्थों का सम्पादन एवं उनके प्रकाशन की व्यवस्था हुई। यह निश्चित ही एक महत् कार्य है जो श्रीश्यामदास जी द्वारा अनवरत किया गया। लुप्त हो जाने वाले ग्रन्थों का संरक्षण, प्रकाशन और प्रबन्धन, जन साधारण के लिए इन सत्शास्त्र रूपी सन्त–वचनामृत की उपलब्धि कोई सामान्य–छोटा या सरल कार्य नहीं

है। लेकिन प्रभु–गुरु–प्रदत्त दिव्य कृपा– प्रेरणा–शक्ति एवं सन्त सज्जन पुरुषों के यथायोग्य योगदान से ही यह सब संभव हो सका।

'ग्रन्थ प्रभु के विग्रह हैं' – इनकी सेवा प्रभु की साक्षात् सेवा है। सत्शास्त्र की सेवा साक्षात् स्थायी सन्त–सेवा है। जिस प्रकार भोजन पेट की खुराक है–उसी प्रकार ग्रन्थ आत्मा की खुराक हैं। ग्रन्थ–अध्ययन सदैव के लिए एक दिव्य आनन्द की अनुभूति प्रदान करता है।

> कलियुग में ग्रन्थ ही सत्संग का एक विशुद्ध माध्यम हैं। अधिक संग करने पर जहां सन्तों में दोष-दृष्टि दीखने लगती हैं वहाँ ग्रन्थों की कृपा-वृष्टि होने लगती है।

● श्रीहरिनाम प्रेस की स्थापना

आपने सन्1969 में श्रीहरिनाम प्रेस की स्थापना की। 2–3 वर्ष तक आप चिकित्सा करते रहे और प्रेस में अपने ही ग्रन्थ छपते रहे। बाद में अन्य ग्रन्थों का मुद्रण–कार्य भी होने लगा। श्रीहरिनाम प्रेस ने अपनी एक अलग पहचान स्थापित की। सन्1978–79 में प्रेस का कार्य अपने पुत्रद्वय दासाभास डॉ गिरिराजकृष्ण एवं डॉ भागवतकृष्ण नांगिया को सौंपते हुए धीरे–धीरे आपने व्यावसायिक व्यस्तता से विदा ली।

● मासिक पत्र श्रीहरिनाम

इन ग्रन्थों के साथ–साथ सन्1969 से 'श्रीहरिनाम' नामक मासिक–पत्र का प्रकाशन भी किया जा रहा है–यह पत्रिका व्यावहारिक रूप से लागत से भी कम मूल्य पर देश–विदेश के हजारों पाठकों को घर बैठे प्रेषित की जाती है। विद्वान् सज्जनों में 'श्रीहरिनाम' का अपना एक विशेष आदर एवं स्नेह है।

इस मासिक पत्र में ब्रजभक्ति, वैष्णव दर्शन आदि विषयों पर मनीषियों के निबन्ध प्रकाशित किये जाते हैं। ब्रज में आयोजित होने वाले विशेष समारोहों के समाचार व सूचनाएँ इसमें प्रकाशित की जाती हैं। प्रत्येक अंक में उस मास में आने वाले व्रत एवं उत्सवों की सूची रहती है। पत्रिका की विषय वस्तु अत्यधिक गंभीर, सिद्धान्त एवं शास्त्र प्रतिपादित होती है। यह पत्रिका समाचार पत्रों के निबन्धक से पंजीकृत भी है। और आज भी नियमित प्रकाशित हो रही है।

● ग्रन्थ प्रकाशन

अपने जन्म स्थान डेरागाजीखान् में प्रतिवर्ष एक श्रीहरिनाम सम्मेलन का आयोजन आप करते थे। जब विभाजन हुआ तो आक्रान्ताओं के भय से उस वर्ष वह सम्मेलन नहीं हुआ– लेकिन उस सम्मेलन के निमित्त कुछ धनराशि एकत्र हो चुकी थी, वह धनराशि सम्मेलन के कैशियर श्रीदेवीदासजी कथूरिया ने विभाजन के पश्चात् आपके बहुत न–नुकर करने पर भी आपको दे दी। एक सन्त की प्रेरणा से उस राशि से सर्वप्रथम 'श्रीमद्वैष्णव सिद्वान्त रत्न संग्रह' ग्रन्थ का प्रकाशन करके उस राशि को ग्रन्थ सेवा में निवेशित किया गया। और यहीं से ग्रन्थ प्रकाशन के एक पृथक् कोष की स्थापना हो गयी।

● ग्रन्थ विक्रय राशि

ग्रन्थ विक्रय द्वारा प्राप्त होने वाली राशि से न किसी का व्यवसाय चलता है, न यह राशि किसी की आजीविका का साधन है, न कोई वेतन दिया या लिया जाता है, न कोई किराया,

वैष्णव ग्रन्थों को पढ़ने में रुचि न भी हो तो भी उन्हें अपने घर में विराजमान करें। इनके दर्शन से लाभ होगा, ग्रन्थ संरक्षित हो जायेंगे और न जाने कब किसी में उन्हें पढ़ने के संस्कार जाग्रत हो जायें तो उसका कल्याण होगा।

बिजली और व्यवस्था सम्बन्धी व्यय किया जाता है। **ग्रन्थ विक्रय से प्राप्त होने वाली राशि का एक–एक पैसा पुनः केवल ग्रन्थ प्रकाशन में ही व्यय किया जाता है।**

● ***श्रीहरिनाम संकीर्तन सम्मेलन***

सन् 1959 से 1984 तक लगातार 25 वर्षों तक प्रतिवर्ष होली के अवसर पर आपने विशाल श्रीहरिनाम संकीर्तन सम्मेलन का आयोजन स्थानीय बसन्तीबाई धर्मशाला में किया, जिसमें देश एवं ब्रज के सुप्रसिद्ध विद्वानों के प्रवचन, स्वामी श्रीरामस्वरूपजी की मण्डली की रासलीला एवं स्वामी श्रीहरिगोविन्द जी की मण्डली की श्रीगौरांग लीला का त्रिदिवसीय भव्य आयोजन होता था। अन्तिम दिन विशाल शोभायात्रा से यह उत्सव समाप्त होता था।

● ***श्रीगिरिराज कृपा***

एक बार आपके मन में इच्छा हुई कि घर में पूजित श्रीप्रिया–प्रियतम एवं गोपालजी के श्रीविग्रहों के साथ–साथ श्रीगोविन्द 'श्रीगिरिराज' रूप में विराजित हों और मैं उनकी सेवा–पूजा करूँ। श्रीगिरिराज शिला खण्ड की निज मंदिर में सेवापूजा का सामान्यतः सन्तों द्वारा निषेध है। श्रीगिरिराज–निजधाम छोड़कर कहीं नहीं जाते–ऐसी मान्यता है।

आप शीघ्र ही तत्कालीन सन्तप्रवर पं. श्रीगयाप्रसादजी के पास गोवर्धन गये और अपनी भावना प्रकट की। पूज्य पंडित जी आपकी सेवा भावना निष्ठा से परिचित थे। भक्त एवं भगवान् दोनों की साक्षात् स्वीकृति से आगामी दिन ब्रह्ममुहूर्त्त में श्रीगिरिराजजी को स्वगृह में पधराया गया–सात्विक अभिषेक उत्सवादि से प्रभु प्रतिष्ठित हुए–जो आज पर्यन्त पूजित व सेवित हैं।

● ***व्रजविभूति सम्मान***

हर्ष एवं गौरव का विषय है कि ब्रज की प्राचीन संस्था ब्रज कला केन्द्र–मथुरा द्वारा आपकी विशाल साहित्य सेवा का मूल्यांकन करते हुए सन् 2004 में श्रीकृष्ण जन्मभूमि के विशाल सभागार में आपको व्रजविभूति सम्मान से अलंकृत किया गया। इसके अतिरिक्त अनेक सामाजिक धार्मिक संस्थाओं द्वारा समय–समय पर आपका सम्मान किया गया। आकाशवाणी के मथुरा–वृन्दावन केन्द्र से आपकी अनेकों ब्रजवार्ताएँ एवं कार्यक्रम प्रसारित होते रहे हैं।

● ***विविध***

इस्कॉन के संस्थापक स्वामी ए. सी. भक्तिवेदान्त प्रभुपाद से आपका मित्र भाव था। श्री राधादामोदर में निवास करते समय जब उन्होंने अपने प्रथम ग्रन्थ श्रीमद्भागवत का प्रकाशन करवाया, तब आपने उनका पूर्ण सहयोग किया एवं इस ग्रन्थ के विक्रय, प्रचार–प्रसार में सर्वाधिक योगदान दिया। वृन्दावन में श्रीकृष्णबलराम मंदिर की स्थापना के समय आयोजित विशाल समारोह का मंच संचालन श्रीश्यामदास जी ने किया था। वृन्दावन शोध संस्थान की स्थापना में आपका विशेष योगदान रहा। बहुत समय तक आप संस्थान के संयुक्त सचिव रहे। आपने सपरिवार पुरी, नवद्वीप, मायापुर आदि भारत के प्रमुख तीर्थों के तीर्थाटन के अतिरिक्त 40 दिवसीय पैदल ब्रज चौरासी कोस यात्रा कर मानव–जीवन धन्य किया।

● **श्रीमन्नित्यानंदप्रभु कृपा-करूणा**

जैसा कि पूर्व में वर्णित है श्रीश्यामदासजी की जन्मतिथि है–माघशुक्ला भैमी एकादशी। इस तिथि के ठीक एक दिन बाद माघ शुक्ला त्रयोदशी को श्रीमन्नित्यानन्द प्रभुपाद की जयन्ती तिथि होती है। 'व्रजविभूति श्रीश्यामदास' जी की श्रीनित्यानन्द–परिवार में दीक्षा, यज्ञोपवीत, मुण्डन आदि संस्कार हुए। आपके ज्येष्ठ पुत्र का नाम भी आपने रखा – नित्यानन्द। आपके तीनों सुपुत्र भी श्रीनित्यानन्द परिवार में ही दीक्षित हैं और यह भी श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु की कृपा का ही साक्षात् फल है कि इस शरीर की अन्तिम श्वांस भी आपने श्रीनित्यानन्द प्रभु के सिद्ध स्थान श्री शृंगारवट से लायी हुई व्रजरज पर ली। श्रीश्यामदास जी से जब उनकी विपुल सेवा की चर्चा की जाती तो इसका श्रेय सदैव वे गुरुशास्त्र कृपा एवं श्री श्रीनिताई–गौर की दिव्य शक्ति को ही देते थे। वह कहते थे कि मैं तो उनके हाथ की कठपुतली हूँ, जैसा वे मुझे नचा रहे हैं, वैसा ही मैं नाच रहा हूँ।

मन्दिर बनाना अच्छी बात है लेकिन मंदिर हजार-पांच सौ साल में खण्डहर बन जायेगा ग्रन्थ हजारों साल तक मानव जीवन का मार्ग दर्शन करता रहेगा। हजारों वर्ष पुराने 'वेद' की उपलब्धता इस बात का साक्षात् प्रमाण है।

● **लीलाप्रवेश**

सन् 1985 से व्यवहार–व्यवसाय सभी लौकिक कार्यों से अनासक्त होकर आप बाग बुन्देला स्थित अपने निवास पर श्रीविग्रह ठाकुर सेवा एवं अपने सात्विक साधनयुक्त कार्यालय में मुख्य रूप से साहित्य सेवा में व्यस्त रहते थे। लगभग85 वर्ष की आयु में भी अति सक्रिय जीवन यापन करने वाले श्रीश्यामदासजी की कभी अस्तव्यस्त न होने वाली दिनचर्या अचानक थोड़ी अव्यवस्थित हो गयी थी।

दो तीन दिन बाद अन्नकूट महोत्सव का आयोजन था, जो घर में ही प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी मनाया गया। लगभग3 घंटे बाजा बजाते हुए सस्वर संकीर्तन किया। प्रसाद पाया। रात्रि को बेचैन हुए और स्वास्थ्य बिगड़ता गया। नगर के प्रसिद्ध फिजीशियन एवं सर्जन चिकित्सकों के साथ–साथ उनके पौत्र डॉ. नीलकृष्ण ने घर पर ही एक अच्छे अस्पताल से अधिक सेवा–निष्ठाभाव से चिकित्सा सेवाऐं प्रदान कीं।6, 7, 8 नवम्बर को लगभग शांत रहे जैसे लीला–चिन्तन में एकाग्रचित्त हों।9 नवम्बर2005 को सायं4 बजे शरीर के संकेत को देखते हुए सारी कृत्रिम नलियां हटा दी गयीं और परिवारीजनों ने भगवन्नाम संकीर्तन प्रारंभ किया।4 से7 बजे तक उच्च संकीर्तन चलता रहा। केवल शांत श्वास चलते रहे। रात्रि लगभग 11:20 पर उन्हें शृंगारवट से लायी हुई ब्रजरज बिछाकर उनके निजीकक्ष में भूमि पर लिटाया गया। गंगाजल से शरीर शुद्धि की गयी। उनके अंगों पर वैष्णव–पद्धति अनुसार 'द्वादश तिलक' लगाया गया। अति उच्चस्वर से 'महामन्त्र' का संकीर्तन, निताई गौर हरिबोल, जय श्रीराधे की नाम ध्वनि के मध्य रात्रि लगभग11:50 पर उन्होंने अन्तिम श्वांस ली और गोपाष्टमी के दिन9 नवम्बर2005 को प्रियाप्रियतम की निकुंजलीला में प्रविष्ट हो गये। अक्षय नवमी,10 नवम्बर2005 को श्रीधाम वृन्दावन में यमुनातट पर उनका पार्थिव शरीर अग्नि को समर्पित कर दिया गया।

।। जयश्रीराधे ।।

श्रीहरिनाम प्रेस द्वारा मुद्रित
अन्य उपलब्ध साहित्य

1. चौरासी कोस ब्रज यात्रा रु. 250
लेखक : डॉ. भागवत कृष्ण नांगिया
प्रमुख पड़ावों का वर्णन, आर्ट पेपर, रंगीन मुद्रण
18x24 cms/ 144 Pages/ Soft Bound

2. श्री भक्तमाल : 4 खण्ड रु. 1400
सम्पादक : बाबा श्रीगणेशदास, श्रीरामेश्वरदास रामायणी
सुदामा कुटी से प्रकाशित विस्तृत टीका सहित
18x24 cms/ 2960 Pages/ Hard Bound

3. देवी भागवत वचनामृत रु. 500
लेखक : पं. विदुर प्रसाद दाहाल
सचित्र-विस्तृत टीका सहित
18x24 cms/ 660 Pages/ Soft Bound

4. अभिलाष माधुरी रु. 500
लेखक : श्री ललित किशोरी जी
शाहजी मन्दिर के प्रतिष्ठाता द्वारा लिखित
ब्रज रस का निष्ठापरक अद्वितीय पद्य ग्रन्थ
14x21 cms/ 332 Pages/ Hard Bound

5. श्री श्याम पुराण रु. 300
लेखक : स्वामी श्रीश्यामराघवदास जी
श्रीखाटूश्याम जी के चरित और तत्त्व के
साथ अनेक प्रामाणिक रहस्योद्घाटन
14x21 cms/ 532 Pages/ Soft Bound

6. पथ प्रदर्शिका रु. 400
लेखक : परम पूज्य श्रीसन्त माँ ब्रजदेवी जी
समस्त विषयों की दार्शनिक व्याख्या
14x21 cms/ 272 Pages/ Hard Bound

7. पण्डित बाबा की जीवनी रु. 50
सम्पादक : श्रीगौरांगदास जी महाराज
भागवत निवास के पण्डित बाबा
श्रीरामकृष्णदासजी का चरित्र
14x21 cms/ 116 Pages/ Soft Bound

8. श्रीकृष्ण चरित मानस रु. 250
लेखक : श्रीमती उत्पल वर्णा
श्रीदाऊदयाल गुप्त द्वारा विरचित श्रीकृष्ण चरित्र
का सरस भावपूर्ण अनुवाद
14x21 cms/ 720 Pages/ Soft Bound

9. उद्धव सन्देश रु. 80
लेखक : डॉ. महानामव्रत ब्रह्मचारी
विस्तृत व्याख्या सहित
14x21 cms/ 160 Pages/ Soft Bound

10. गीता ध्यान रु. 300
लेखक : डॉ. महानामव्रत ब्रह्मचारी
श्रीमद्भगवद्गीता की विस्तृत व्याख्या
14x21 cms/ 650 Pages/ Hard Bound

11. प्रेमरसामृत धारा रु. 100
लेखक : डॉ. सन्तोष गुप्ता
पूज्य बाबा श्रीमनोहरदासजी महाराज के
प्रेरणादायक पत्रों का दुर्लभ संग्रह
14x21 cms/ 222 Pages/ Hard Bound

12. माधुर्य रस सुधा धारा रु. 150
लेखक : श्रीमती डॉ. सन्तोष गुप्ता
सात अष्टकों का अपूर्व संग्रह
14x21 cms/ 130 Pages/ Hard Bound

13. चरित सुधा
लेखक : श्रीरामदास बाबाजी
श्रीबड़े बाबा का जीवन चरित्र

13. ब्रज के भक्त
लेखक : श्रीअवधबिहारीलाल कपूर
भक्तों के अद्भुत चरित्र

श्रील अनिरुद्ध प्रभु जी का साहित्य

इसी जन्म में भगवद् प्राप्ति- सात भाग
अहैतुकी कृपा
अनन्त कृपा
एक शिशु की विरह वेदना
कार्तिक माहात्म्य

श्रीदुग्गल जी द्वारा प्रकाशित

वर्तमान युग के एक अलौकिक अवधूत
श्रीराधाकृष्णकृपाकटाक्ष स्तोत्र-कवच
श्रीकृष्ण चालीसा

व्रजविभूति श्रीश्यामदासजी का भक्ति साहित्य

1• ब्रज के सन्त : चैतन्य भक्तगाथा रु. 250
श्रीमहाप्रभु के गुरुजन, परिकर, छः गोस्वामी एवं अन्य कृपा–पात्र भक्तों का चमत्कारी–परिचय

2• ब्रज के भजन : भक्तभाव संग्रह रु. 125
श्रीभक्तभावसंग्रह के स्तोत्र, भजन, रसिया, कवित्त, सवैया, गज़ल, आरती, आदि का वर्षोत्सव के पदों सहित अद्‌भुत रसीला विशद संग्रह एवं श्रीश्यामदास जी की समस्त पद्यात्मक रचनाएँ

3• ब्रज की पाठ–पूजा : नित्यपाठ गुटका रु. 100
श्रीनिकुंजरहस्यस्तव : श्रीकृष्णनामाष्टक
श्रीउपदेशामृत : मनः शिक्षा
स्वनियम दशकम : स्मरण मंगल
श्रीदामोदराष्टक : श्रीशिक्षाष्टक
श्रीभगवत् करपदयुगल चिह्न : चतुःश्लोकी गीता
आपकी दिनचर्या : महत्कृपातत्त्व
रासलीला रहस्य : नामापराध : श्रीगरुदेवाष्टकम
श्रीराधाकृष्णकृपाकटाक्ष स्तोत्र एवं श्रीराधाकृष्ण कवच

4• लघुभागवतामृतम् रु. 100
श्रीरूपगोस्वामि विरचित उपास्यउपासक, स्वरूप निर्णायक अनुपम ग्रन्थ

5• श्रीचैतन्यचरितामृत रु. 1250
श्रीमद्वैष्णव सिद्धान्तरत्न संग्रह
कविराज श्रीकृष्णदास गोस्वामी रचित महाप्रभु श्रीकृष्णचैतन्य देव का जीवन–वृत्त एवं चैतन्य–सम्प्रदाय का सिद्धान्त–दर्शन (तीनों खण्ड)

6• ब्रज की तुलसी रु. 100
श्रीरासपंचाध्यायी–श्रीगोपीगीत
तुलसी, तिलक, एकादशी, संकीर्तन एवं अन्य विषयों पर बाबा श्रीश्यामारमणदासजी द्वारा प्रामाणिक प्रस्तुति

7• ब्रज के परिकर : श्रीगौरगणोद्‌देश दीपिका रु. 100
श्रीकृष्ण या श्रीरामलीला के पात्र श्रीचैतन्य महाप्रभु लीला में किस रूप– नाम से आविर्भूत हुए उनके दोनों लीलाओं के चमत्कारी जीवन–चरित्र

8• ब्रज की चंद्रिका : प्रेमभक्ति चंद्रिका रु. 100
नरोत्तम प्रार्थना : नरोत्तम चरित्र
श्रीनिवासाचार्य एवं श्रीश्यामानन्द प्रभुचरित्र
श्रीचैतन्य चन्द्रामृत : श्रील प्रबोधानन्द सरस्वतिपाद विरचित
नवधा भक्ति : नामापराध–वर्णन
(आदि उपयोगी ग्रंथों का संकलन)

जैसे एक बड़ी कम्पनी अपने यश के लिये एक विज्ञापन बजट बनाती है, वैसे ही हमारे भगवान् श्री कृष्ण को भी अपना यश, गुण, लीलाऐं अति पसन्द हैं। वे भी पुस्तक-प्रकाशन के लिये कहीं न कहीं से एक बजट या धनराशि अवश्य उपलब्ध कराते हैं। निश्छल ग्रन्थ सेवा हेतु वे धन की कमी नहीं होने देते, उनके पास भी इसका एक पृथक् बजट है।

नाम महामणि
विषय व्याल के
मेटत कठिन
कुअंक भाल के

●

जो सर्प काट जाये, उसी
सर्प के मस्तक में स्थित
मणि से निश्चित ही
विषमुक्त हुआ
जा सकता है।
ऐसे ही भगवान् का नाम
विषय रूपी सर्प
की मणि है।
अर्थात् भगवन्नाम से
विषयों रूपी विष से मुक्त
हुआ जा सकता है। ये
'नाम' भाग्य के बुरे अंक
अर्थात् दुर्भाग्य को भी
दूर करता है।
भाव यह है कि
यदि नाम में हमारी
निष्ठा है तो भक्ति प्राप्ति
के साथ-साथ उसके द्वारा
संसार-विष-वासना और
दुर्भाग्य भी दूर हो
सकते हैं।
फिर किसी अन्य उपाय
या ग्रह शान्ति की भी
आवश्यकता नहीं है।

9• श्रीचैतन्य चन्द्रोदय रु. 100
श्रील कवि कर्णपूर विरचित महाप्रभु श्रीचैतन्य का आनंदमय जीवनपरिचय

10• ब्रज के छह गोस्वामी – सप्त देवालय रु. 60
श्रीरूप, श्रीसनातन, श्रीरघुनाथभट्ट, श्रीजीव, श्रीगोपालभट्ट, श्रीरघुनाथ–दास गोस्वामिपाद एवं श्री नित्यानन्द प्रभु गुरु गद्दी श्री शृंगारवट एवं श्रीवृन्दावन के प्राचीनतम सप्तदेवालयों का संक्षिप्त परिचय

11• ब्रज की दानलीला : दानकेलिकौमुदी रु. 100
उपदेशामृत : मनःशिक्षा
नारायण कवच : गजेन्द्र मोक्ष

12• श्रीचैतन्य भागवत रु. 600
श्रीवृन्दावन दास रचित महाप्रभु श्रीचैतन्यदेव की लीलाओं का सरस वर्णन, आदि–मध्य–अन्त्य तीनों खण्ड, मूल अनुवाद व टीका

13• श्रीचैतन्यप्रेमसागर–सातों खण्ड रु. 700
महाप्रभु श्रीचैतन्य की सम्पूर्ण लीला कथा सरल भाषा में श्रीरामानन्द शर्मा लिखित। सातों भाग।

14• श्रीचैतन्यचरितामृत–संक्षिप्त रु. 300
कविराज श्रीकृष्णदास विरचित मूल का केवल–हिन्दी सार

15• श्रीआनन्दवृन्दावन चम्पू रू.250
कविकर्णपूर कृत श्रीकृष्णलीला एवं व्रजलीलाओं का अद्‌भुत दर्शन

16• श्रीगीतगोविन्द :कविराज श्रीजयदेव विरचित रु. 100
श्रीकृष्णकर्णामृत एवंश्रीगोविन्द दामोदर स्तोत्र
लीलाशुक श्रीबिल्वमंगल विरचित

17• ब्रज की भक्ति : नारद भक्ति सूत्र रु. 200
८४ सूत्रों की रागानुगाभक्ति परक प्रामाणिक व्याख्या

18• ब्रज की अष्टयाम लीला : श्रीगोविन्दलीलामृत रु.300
श्रीकृष्णदास कविराज विरचित वृन्दावनीय अष्टयाम मानसी सेवा का अनुपम ग्रन्थ, मूल–सानुवाद

19• श्रीचैतन्य चन्द्रामृत : ब्रज की चन्द्रिका में समाहित
श्रीप्रबोधानन्द सरस्वतीपाद कृत प्रार्थना ग्रन्थ मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित

20• श्रीनिताईचाँद रु. 100
श्रीमन्नित्यानन्दप्रभु का सर्वांगीण अध्ययन, अनेक भक्तों के चमत्कारी चरित्र

21• श्रीशिक्षाष्टक रु. 15
महाप्रभु श्रीचैतन्य द्वारा रचित सभी रचनाएँ मूल एवं अनुवाद सहित

22• श्रीमद्‌भागवतमहापुराण (१–२ स्कन्ध) रु.150

23• श्रीमद्‌भागवतमहापुराण (१० पूर्वार्द्ध) रु. 200

24• श्रीमद्‌भागवतमहापुराण (१० उत्तरार्ध) रु. 200
श्रीश्रीधर स्वामी, श्रीपाद सनातन, श्रीजीव गोस्वामी एवं श्रीविश्वनाथ–चक्रवर्तीपाद कृत संस्कृत टीकाओं पर आधारित श्रीजीवविश्व–कृपानुगा हिन्दी टीका, अनुवाद एवं मूल सहित

25• श्रीगोपाल चम्पू रु. 500
श्रीजीवगोस्वामी द्वारा रचित भगवान् श्रीकृष्ण की वृन्दावनीय लीलाएँ

26• श्रीविदग्धमाधव नाटक रु. 100
श्रीरूपगोस्वामी रचित नाटक **'वृन्दावनं परित्यज्य पादमेकं न गच्छति'** की अवधारणा पर व्रजलीला की समाप्ति व्रज में होते हुए द्वारकालीला चलती रहती है

27• श्रीललितमाधव नाटक रु. 100
श्रीरूपगोस्वामी रचित आश्चर्यपूर्ण, आनन्दमय नाटक, इसमें सभी व्रजवासी श्रीकृष्ण से मिलने द्वारका जाते हैं और विरह शान्त करते हैं

28• भक्त भक्ति भगवन्त गुरु
परमभागवत सिद्ध सन्तों के संगृहीत अनमोल वाक्य रत्न

29• श्रीराधारससुधानिधि (छोटा) रु. 30

29• श्रीराधारससुधानिधि रु. 300
श्रीप्रबोधानन्द सरस्वती रचित, श्रीराधादास्यनिष्ठा प्रकाशक अद्भुत रसोपासना ग्रन्थरत्न

30• श्रीमानसी–सेवा रु. 250
श्रीश्रीगौरांग (नवद्वीप–व्रज), गोविन्द अष्टयाम लीला–स्मरण गुटका (मानसिक सेवोपासना)

31• श्रीचैतन्य–सम्प्रदाय रु. 30
माध्व, माध्वगौड़ेश्वर, चैतन्य आदि सम्प्रदायों का वर्गीकरण–कारक एवं भ्रमनिवारक ग्रन्थ

32• श्रीभक्तिरसामृतसिन्धुबिन्दु रु. 100
भक्तिपथ पथिकों के अनेक संशयों का समाधानकारक ग्रन्थ। गुरु कैसा हो, नामजप कैसे, क्यों करें, मूर्तिपूजा, नामापराध, तिलकधारण मंत्र आदि के विषय में श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती की सुबोध रचना

33• श्रीवृन्दावनमहिमामृत (सम्पूर्ण) रु. 300
श्रीप्रबोधानन्द सरस्वती रचित धामनिष्ठा विषयक अद्भुत प्रामाणिक ग्रन्थ, मूल–अनुवाद सहित

34• श्रीबृहद्भागवतामृत रु.400
श्रीसनातन गोस्वामी रचित, विभिन्न साधनों द्वारा किन–किन साध्यों या लोकों की प्राप्ति होती है, उन साध्यों की प्राप्ति से कैसा अनुभव होता है? जीव का परम साध्य और साधन क्या है? गूढ़ विषय की बोधगम्य आख्यानात्मक सरस रचना।

35• महाभावस्वरूपा श्रीराधानाम रु.100
श्रीमद्भागवत में 'श्रीराधा' नाम के उल्लेख वाले श्लोकों का श्रीनित्यानन्द जी भट्ट द्वारा सानुवाद संकलन

36• ब्रज के सन्त (छोटा) रु. 15
केवल ब्रज–सन्तों की चमत्कारी जीवन–गाथाएँ

37• श्रीकृष्णकर्णामृत : श्रीगोविन्ददामोदर स्तोत्र रु. 15
लीलाशुक श्रीबिल्वमंगल की चमत्कारिक जीवनी सहित लीला–स्वादक प्रार्थनाग्रन्थ, सानुवाद

नवीन प्रकाशन

चैत्र माह के नवरात्र से लेकर
फाल्गुन माह के होली तक
वर्ष भर के प्रमुख
त्योहार–व्रत–उत्सव आदि
का क्रमवार
संक्षिप्त परिचय

ब्रज के व्रत-उत्सव

नामक ग्रन्थ में पढ़ें।
सात वारों की कथा
सत्यनारायण कथा
श्रीलक्ष्मी स्तुति
एकादशी व्रत विधान
प्रमुख आरतियों
का संग्रह इस ग्रन्थ
की अद्भुत विशेषता है।

न्योछावर ~~125 रुपये~~
छूट के बाद 100 रु.

घर बैठे मंगाने के लिए
अपना पता
7500040003 पर
SMS या Whatsapp करें–
अथवा
श्रीहरिनाम प्रेस
वृन्दावन से प्राप्त करें।

सन् 1970
से नियमित एवं
अनवरत प्रकाशित

श्रीहरिनाम

मासिक पत्रिका
का अध्ययन कर
ब्रजभक्ति के अनेक
रहस्यमय विषयों का
आस्वादन करें.
यदि निःशुल्क
चाहते हैं तो श्रीहरिनाम
प्रेस से प्राप्त करें।

ब्रजविभूति
श्रीश्यामदास
जी ने
अपने जीवन
के
अनेक वर्ष
इन ग्रन्थों के
सम्पादन-प्रकाशन
प्रचार-प्रसार
में लगाये और
हजारों वर्ष
तक
आने वाली पीढ़ियों के
कल्याण
का मार्ग प्रशस्त किया

38• श्रीकृष्ण भक्ति रु. 15
भक्तिका सर्वांगीण अध्ययन, स्वरूप लक्षण, प्रकार–भेदादि

39• नवधाभक्ति रु. 10
नौ प्रकार की भक्तियों के विषय में श्रीजीव गोस्वामी कृत आलोचना

40• श्रीमुक्ताचरित्र रु. 25
श्रीपाद रघुनाथदास विरचित शृंगाररस–विषयक चमत्कारी ग्रन्थ रत्न

41• परब्रह्म स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण रु. 40
श्रीकृष्ण ही स्वयं भगवान् हैं और परमब्रह्म हैं।

42• श्रीरासलीला रहस्य, ब्रज की पाठ पूजा में समाहित
श्रीरासलीला पर रहस्योद्घाटन

43• ब्रजलीला के १०८ प्रणाम : श्रीकृष्णलीलास्तव रु. 100
मैं कौन हूँ : जीवतत्त्व
श्रीसनातन गोस्वामी रचित १०८ प्रणामयुक्त दशमचरित्र :श्रीकृष्णलीलास्तव।
श्रीराधागोविन्दनाथ लिखित प्रस्थानत्रय से अनुमोदित श्रीजीवतत्त्व।

44• श्रीनरोत्तम प्रार्थना रु. 30
श्रील नरोत्तम ठाकुर द्वारा विरचित प्रार्थना

45• महत्कृपातत्त्व रु. 5
सन्तजन कृपा का महत्वपूर्ण विवेचन

46• श्रीतत्त्वसन्दर्भ : पहला सन्दर्भ रु. 225

47• श्रीभगवत्सन्दर्भ : दूसरा सन्दर्भ रु. 450

48• श्रीपरमात्मसन्दर्भ : तीसरा सन्दर्भ रु. 225

49• श्रीकृष्णसन्दर्भ : चौथा सन्दर्भ रु. 300

50• श्रीभक्तिसन्दर्भ : पाँचवा सन्दर्भ रु. 450

51• श्रीप्रीतिसंदर्भ : छठा संदर्भ रु. 450
श्रीजीवगोस्वामी रचित अनुपम दर्शन–शास्त्र,
श्रीभागवतसन्दर्भ, मूल, अनुवाद व टीका सहित

52• श्रीमद्भगवद् गीता (सटीक) रु. 200
श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती रचित संस्कृत टीका तथा श्रीबलदेव विद्या भूषण–टीका के तात्पर्यमय हिन्दी अनुवाद तथा मूल संस्कृत टीका सहित

53• श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु रु. 500
श्रीरूपगोस्वामी रचित, भक्तिरस प्रस्थान ग्रन्थ, मूल अनुवाद एवं टीकाओं सहित

54• श्रीमाधुर्यकादम्बिनी रु. 100
श्रीपादविश्वनाथ चक्रवर्ती कृत भक्ति के विकास क्रम का वर्णन एवं साधक के विभिन्न स्तरों की स्थितियों का परिचायक, सानुवाद

55• ब्रज का साध्य साधन : साध्य साधन निर्णय रु. 100
(श्रीमन्महाप्रभु तथा रायरामानंद के संवाद पर आधारित)
मानव जीवन की सार्थकता क्या है? उसे जीवन में क्या प्राप्त करना है और कैसे? प्रश्नोत्तर शैली में विवेचनात्मक ग्रन्थ

56• श्रीहरिभक्तिविलास रु. 100
वैष्णव–आचरण में शंका–निवारक संविधान ग्रन्थ रत्न

57• श्रीब्रह्मसंहिता रु. 30
श्रीब्रह्माजी द्वारा भगवान् श्रीगोविन्द का स्तुतिमय सर्वशास्त्र सिद्धान्त सार ग्रन्थ

58• श्रीउज्ज्वलनीलमणि रु. 400
शृंगाररस विषयक अनुपम ग्रन्थ, प्रियाप्रियतम की निकुंज–लीलाओं के उद्धरणों सहित, श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु का परिशिष्ट।

59• श्रीगौरांगलीला
महाप्रभु श्रीगौरांग का संक्षिप्त जीवनलीला परिचय (बहुरंगा श्रीनिताई–गौर चित्र सहित)

60• श्रीचैतन्य चिंतन रु. 200
श्रीचैतन्य महाप्रभु, उनके सम्प्रदाय तथा दार्शनिक तत्त्वों का सम्पूर्ण परिचय। डॉ. श्री भागवतकृष्ण के शोध प्रबन्ध का ग्रन्थ रूपान्तरण।

61• श्रीहंसदूत एवं श्रीउद्धव सन्देश रु. 100
व्रजगोपियों ने अपनी विरह–वेदना एक हंस के द्वारा मथुरा में श्रीकृष्ण के पास प्रेषित श्रीकृष्ण ने श्रीउद्धव को दूत बनाकर व्रजगोपियों के पास भेजा, उसका वर्णन। श्रीरूपगोस्वामी रचित।

62• नामापराध – वितरण हेतु १५ प्रतियाँ रु. 100
62• दीक्षा गुरु – वितरण हेतु ८ प्रतियाँ रु. 100
62• नीत्य पाठ – वितरण हेतु १० प्रतियाँ रु. 100

63• श्रीविलापकुसुमांजलि रु. 30
श्रीरघुनाथदास गोस्वामी रचित अनुपम प्रार्थना ग्रन्थ, मूल, अनुवाद व टीकासहित

64• श्रीब्रजदर्शन रु. 100
श्रीवृन्दावन के प्राचीन एवं अर्वाचीन मन्दिरों का ऐतिहासिक प्रामाणिक परिचय

65• श्रीब्रजधाम : ब्रज चौरासी कोस में समाहित
श्रीनन्दगाँव, श्रीबरसाना, श्रीगोवर्धन, श्रीराधाकुण्ड, ब्रज–चौरासी कोस परिक्रमा के स्थानों का वर्णन एवं ऐतिहासिक व प्रामाणिक क्रमबद्ध परिचय

66• ब्रज के स्तोत्र रु. 100
श्रीराधासहस्रनाम : श्रीगोपालसहस्रनाम
श्रीविष्णुसहस्रनाम : श्री चैतन्य सहस्रनाम
श्रीशिव–नारद संवादान्तर्गत सहस्रनाम मूल एवं अनुवाद
श्रीराधा–कृष्णकृपाकटाक्ष–स्तव
श्रीराधाचालीसा–गोपाल–बालकृष्ण चालीसा

67• श्रीराधाकृष्णकृपाकटाक्ष स्तोत्र रु. 10

68• सिक्स गोस्वामीज़ (अंग्रेजी) रु. 60

69• श्रीमाधव महोत्सव रु. 100
श्रीराधाजी का श्रीवृन्दावन की अधीश्वरी के रूप में राज्याभिषेक वर्णन। मूल व अनुवाद

www.shriharinam.com
एवं
www.praxto.com
पर सभी ग्रन्थ
online
उपलब्ध हैं

डाक द्वारा
ग्रन्थ
मँगाने हेतु
सम्पर्क करें
7500987654
अपना पता
whatsapp करें
7500040003

श्रीसुदामा कुटी से
प्रकाशित
श्रीभक्तमाल
चारों खण्ड
उपलब्ध

व्रजविभूति
श्रीश्यामदासजी
द्वारा सम्पादित
श्रीहरिनाम प्रेस
द्वारा प्रकाशित साहित्य के
अधिकृत विक्रेता

●

खण्डेलवाल ग्रन्थालय
अठखम्भा वृन्दावन

●

प्रज्ञा साधना पुस्तक केन्द्र
ए–3, आर्य नगर
मुरलीपुरा, जयपुर

●

श्रीराधामदनमोहन ग्रन्थालय
निकट प्राचीन गोविन्द मंदिर
श्रीराधाकुण्ड (मथुरा)

●

श्रीगीता आयुर्वेद एवं पुस्तक भण्डार
46, हरेकृष्ण भवन
बेरीगेट, अमृतसर (पंजाब)

●

रामा स्टोर्स
लोई बाजार पोस्ट ऑफिस
के निकट, वृन्दावन

70• श्रीवेदान्तदर्शन–ब्रह्मसूत्रगोविन्दभाष्य रु. 400
जयपुर में विराजमान ठा. श्रीगोविन्ददेवजी द्वारा लिखवाया गया श्रीबलदेवविद्याभूषण कृत श्रीगोविन्दभाष्य।

71• गम्भीरा में श्रीविष्णुप्रिया रु. 700
श्रीगौर–वल्लभा श्रीविष्णुप्रिया जी की पाषाणभेदी करुण–क्रन्दनात्मक श्रीगौरांग ध्यान–चिन्तन उपासना पद्धति का अनुपम ग्रन्थ

72• व्रजविभूति श्रीश्याम–स्मृति रु. 250
व्रजविभूति श्रीश्यामदासजी द्वारा लिखित स्वयं के जीवन में अद्भुत भगवत्कृपा–दर्शन–अनुभव एवं उनकी पद्यात्मक रचनाएँ

73• बैठ्यो पलोटत राधिका पायन श्रीजगन्नाथवल्लभ नाटक रु. 250
व्रजविभूति श्रीश्यामदासजी द्वारा लिखित विभिन्न शोधपूर्ण निबन्ध–एवं श्रीलरायरामानन्द विरचित निकुंजलीला का नाटक–ग्रन्थ

74• श्रीअद्वैतप्रकाश रु. 40
महाप्रभु श्रीचैतन्य के निजसेवक श्रीईशान कृत–श्रीअद्वैत प्रभु का दिव्य जीवनवृत्त, मूल–अनुवाद सहित

75• श्रीकृष्ण की स्तुतियाँ रु. 400
श्रीमद्भागवत में वर्णित समस्त श्रीकृष्णस्तुतियाँ, मूल, अनुवाद टीका

76• श्रीदम्पति विलास
श्रीललितलड़ैतीजी विरचित ब्रजभक्तिपरक पद्यात्मक संकलन

77• श्रीकिशोरीकरुणाकटाक्ष रु. 150
श्रीललितलड़ैतीजी विरचित ब्रज की रासलीलाओं में गाये जाने वाले पद, लीलाएँ, निकुंजलीला, अष्टयामसेवा तथा वर्षोत्सवों का पद्यात्मक एवं अभिनयात्मक रसीला संकलन

78• महाप्रभु श्रीगौरांग रु.300
श्रीमन्महाप्रभु श्रीचैतन्य विषयक • अनेक विद्वानों के सारगर्भित लेख

80• ब्रज की वार्ता रु. 100

81• ब्रज की चर्चा रु. 100
भक्ति–भजन–साधन–आचरण सम्बन्धी विषयों पर रोचक प्रस्तुति

82• श्रीश्रीनिताई–गौर चालीसा रु.10
नित्य पठनीय, भावानुवाद सहित श्रीनिताई–गौर का जीवन चरित्र

83• ब्रज की उपासना रु. 100
उपासना विषयक सरल उपादेय प्रस्तुति

84• ब्रज की प्रेरणा रु. 100

85• ब्रज भक्ति के ६४ अंग रु. 100

86• ब्रज की खिचड़ी रु. 100

87• संगीतमाधव व श्रीराधाकृष्णार्चन दी. रु. 100

88• ब्रज की खीर रु. 100

89• ब्रज के रजकण रु. 100

90• ब्रज का नीर रु. 100

91• ब्रज की निकुंज उपासना रु. 100

92• ब्रज के व्रत उत्सव रु. 125

प्रमुख मन्दिरों के दर्शन का समय

		शीतकाल	ग्रीष्मकाल
श्रीबाँकेबिहारी मन्दिर		प्रातः 08.55 - 12.55	प्रातः 07.55 - 11.55
☎ : 2456922		सायं 04.30 - 08.30	सायं 05.30 - 09.30
श्रीनिधिवन मन्दिर		प्रातः 08.45 - 01.00	प्रातः 07.45 - 12.00
		सायं 04.00 - 06.30	सायं 05.30 - 08.30
श्रीराधाबल्लभ मन्दिर	मंगला	प्रातः 05.30 बजे	मंगला प्रातः 05.00 बजे
☎ : 2442022		प्रातः 07.00 - 12.00	प्रातः 07.00 - 12.00
		सायं 06.30 - 09.00	सायं 06.30 - 09.00
श्रीसेवाकुंज मन्दिर		प्रातः 06.00 - 12.00	प्रातः 05.30 - 12.00
		सायं 04.00 - 06.30	सायं 04.30 - 07.00
श्रीराधारमण मन्दिर	मंगला	प्रातः 05.30 बजे	मंगला प्रातः 05.00 बजे
☎ : 2456936		प्रातः 05.00 - 12.15	प्रातः 05.00 - 12.15
		सायं 06.00 - 09.00	सायं 06.00 - 09.00
श्रीरंगनाथजी मन्दिर		प्रातः 08.00 - 11.30	प्रातः 08.30 - 11.30
☎ : 2442787		सायं 03.00 - 06.00	सायं 04.30 - 06.00
श्रीकृष्णबलराम मन्दिर (इस्कॉन)		प्रातः 07.30 - 12.30	प्रातः 07.00 - 12.45
☎ : 2540021		सायं 04.00 - 08.00	सायं 04.30 - 08.30
श्रीप्रेम मन्दिर (श्रीकृपालुजी)		प्रातः 08.30 - 12.00	प्रातः 08.30 - 12.00
		सायं 04.30 - 08.30	सायं 04.30 - 08.30
श्रीकात्यायनी पीठ		प्रातः 07.00 - 11.00	प्रातः 07.00 - 11.00
☎ : 2442386		सायं 05.30 - 08.00	सायं 05.30 - 08.00
द्वारिकाधीश मन्दिर (मथुरा)	मंगला	प्रातः 06.30 - 07.00	प्रातः 06.30 - 07.00
☎ : 2406372	शृंगार	प्रातः 07.40 - 07.55	प्रातः 07.40 - 07.55
	ग्वाल	प्रातः 08.25 - 08.40	प्रातः 08.25 - 08.40
	राजभोग	प्रातः 10.00 - 10.30	प्रातः 10.00 - 10.30
	उत्थापन	सायं 03.30 - 03.50	सायं 04.00 - 04.20
	भोग	सायं 04.20 - 04.40	सायं 04.50 - 05.05
	संध्या आरती	सायं 04.55 - 05.10	सायं 05.25 - 05.40
	शयन	सायं 06.00 - 06.30	सायं 06.30 - 07.00
श्रीकृष्ण जन्मस्थान (मथुरा)		प्रातः 06.00 - 12.00	प्रातः 05.30 - 12.00
☎ : 2423714		अपराह्न 03.00 - 08.00	सायं 04.00 - 09.00
बलदेव (दाऊजी)		प्रातः 07.00 - 12.00	प्रातः 06.00 - 11.00
		दोपहर 03.00 - 04.00	दोपहर 04.00-05.00
		सायं 06.00 - 08.00	सायं 07.00 - 09.00
श्रीविश्राम घाट यमुनाजी आरती		प्रातः 05.15, सायं 7.00	प्रातः 4.45, सायं 7.30
नन्दगाँव (श्रीनन्दमहल)		प्रातः 06.30 - 11.00	प्रातः 05.30 - 11.30
		सायं 03.00 - 07.00	सायं 04.00 - 07.30
बरसाना (श्रीजी मन्दिर)		प्रातः 05.00 - 12.30	प्रातः 05.00 - 12.30
		सायं 04.30 - 08.30	सायं 04.30 - 08.30

स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण का घर-आँगन

श्रीधाम वृन्दावन में

आपका स्वागत है - अभिनन्दन है

श्रीधाम में आकर पुण्य कमायें - पाप नहीं!

मन्दिर के पास तक अथवा तंग बाजार में अपनी गाड़ी ले जाने की जिद छोड़ें। अपना वाहन नियत पार्किंग में खड़ा करें।

श्रीधाम के प्रति यदि तनिक सी भी श्रद्धा है तो यहाँ कूड़ा-करकट गन्दगी न फैलायें।

फूल माला, चित्र, मूर्ति, मुण्डन के बाल आदि कोई भी वस्तु श्रीयमुना जी में न डालें।

समृद्ध बड़े मन्दिरों की अपेक्षा जीर्णोद्धार-योग्य छोटे मन्दिरों में दान दें। वहाँ सेवा करें।

केवल भोजन कराना ही साधु-सेवा नहीं है। स्वादिष्ट भोजन कराने की अपेक्षा साधु की वह सेवा करें जिससे उसके भजन में वृद्धि हो।

तामसिक वस्तुएँ प्याज-लहसुन, अंडा-माँस-मदिरा, धूम्रपान आदि का प्रयोग श्रीधाम में पूर्णतः वर्जित है।

श्रीधाम वृन्दावन में यदि आपको गन्दगी और अव्यवस्थाऐं दिखती हैं तो बहुत हद तक उसके जिम्मेदार कुछ नासमझ यात्री हैं।

यहाँ के ब्रजवासी अपने नगर को कभी गंदा नहीं करते और न ही कभी किसी को कष्ट पहुँचाते हैं।

Noble And Responsible Indians!

'नारी' द्वारा जनहित में प्रचारित